तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की पत्रिका

वर्ष- 14, अंक - 6-7, मई-जून 2026 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

शिक्षक केवल पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण का आधार है -राज्यपाल

ऐसा ज्ञान दे दो

प्रभु तेरे चरणों के हम हैं पुजारी,
हमें पार उतारो, हमें पार उतारो।

विद्या का दान प्रभु हम सबमें भर दो,
अवगुण हमारे प्रभु सब दूर कर दो।
जलाओ जोत ज्ञान की, ज्ञानी बना दो,
ऐसा ज्ञान दे दो, ऐसा ज्ञान दे दो।
प्रभु तेरे चरणों के हम हैं पुजारी,
हमें पार उतारो, हमें पार उतारो।

बनें वीर बालक और देश-सेवक,
बनें वीर सैनिक और देश-रक्षक।
हम ऐसे चमकें अँधेरे में दीपक,
हमें रोशनी दो, हमें रोशनी दो।
प्रभु तेरे चरणों के हम हैं पुजारी,
हमें पार उतारो, हमें पार उतारो।

जगत्-गुरु हो राष्ट्र हमारा,
पूरी दुनिया का हो आँखों का तारा।
भारत का जग में चमके सितारा,
यही देश हमारा, यही देश हमारा।
प्रभु तेरे चरणों के हम हैं पुजारी,
हमें पार उतारो, हमें पार उतारो।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सराय
अलावर्दी, गुरुग्राम (हरियाणा)

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

मई-जून 2026

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
विजय सिंह दहिया
प्रधान सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल

जितेंद्र कुमार
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

मनिता मलिक
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

स्वप्निल रविंद्र पाटिल
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्

डॉ. ऋचा राठी
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published by **Parveen Sangwan** on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"शिक्षा ही वह कुंजी है
जो स्वतंत्रता के सुनहरे
द्वार को खोलती है।"

» सामुदायिक भागीदारी से विद्यालय प्रशासन होगा सुदृढ़ -धर्मेन्द्र प्रधान 5
» स्कूल प्रबंधन समिति : बच्चों के बेहतर भविष्य की सामूहिक ज़िम्मेदारी 7
» शिक्षक केवल पढ़ाने वाले व्यक्ति नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण का आधार हैं 10
» सकुरा साइंस प्रोग्राम में हरियाणा का परचम 13
» कक्षा तत्परता कार्यक्रम-2026 : आनंदपूर्ण सीखने की सशक्त शुरुआत 14
» हरियाणा सुपर-100 का शानदार परचम! 16
» विज्ञान, रोबोटिक्स और नवाचार की ओर हरियाणा 18
» स्वच्छता से समानता तकः माहवारी शिक्षा का महत्त्व 19
» कला-समेकित शिक्षा की ओर हरियाणा का सृजनात्मक कदम 20
» एक विद्यालय ऐसा भी... 23
» पुस्तक से परे, परंपरा के साथ 24
» खेल-खेल में विज्ञान 28
» मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला 30
» विद्यालय एक, पारियाँ तीन, तीनों में उत्कृष्टता 31
» Mother is the Foundation of Indian Culture... 32
» Ode to the Sparrow 33
» Teacher–Student Bond: The Soul of True Education 34
» Success Beyond Scores 35
» While We Are Still Here 36
» The Tree That Waited 37
» Tears of a Clown 39
» The Pachmarhi Chronicle 40
» World Day Against Child Labour 42
» Father's Day 44
» How to Prevent Heat Stroke 46
» International Yoga Day 48

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

शिक्षा का विस्तार :

सहभागिता, सृजन और नवाचार की नई दिशा

'शिक्षा सारथी' का यह अंक शिक्षा की उस व्यापक और जीवंत परिकल्पना को समर्पित है, जिसमें विद्यालय केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित न रहकर समाज, संस्कृति, विज्ञान, नवाचार और मानवीय मूल्यों के केंद्र के रूप में विकसित होते हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप आज शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में सफलता प्राप्त करना नहीं, बल्कि ऐसे संवेदनशील, रचनात्मक और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है जो भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास से सामना कर सकें।

इस अंक की विशेषता है- सामुदायिक सहभागिता, बाल-केंद्रित शिक्षण, वैज्ञानिक सोच और रचनात्मक अभिव्यक्ति का सुंदर समन्वय। 'स्कूल प्रबंधन समिति : बच्चों के बेहतर भविष्य की सामूहिक जिम्मेदारी' तथा 'सामुदायिक भागीदारी से विद्यालय प्रशासन को सुदृढ़ करेंगे' जैसे आलेख यह संदेश देते हैं कि शिक्षा केवल विद्यालय की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज का साझा दायित्व है। जब अभिभावक, शिक्षक और समुदाय मिलकर कार्य करते हैं, तब विद्यालय वास्तविक अर्थों में सीखने के प्रेरणादायी केंद्र बनते हैं।

वर्तमान समय विज्ञान और नवाचार का युग है। 'सकुरा साइंस प्रोग्राम में हरियाणा का परचम', 'विज्ञान, रोबोटिक्स और नवाचार की ओर हरियाणा' तथा 'हरियाणा सुपर-100 का शानदार परचम!' जैसे लेख विद्यार्थियों की प्रतिभा, जिज्ञासा और वैश्विक दृष्टि को उजागर करते हैं। ये प्रयास विद्यार्थियों को केवल ज्ञान नहीं देते, बल्कि उन्हें बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने का साहस भी प्रदान करते हैं। इसी प्रकार 'कक्षा तत्परता कार्यक्रम -2026' और 'कला-समेकित शिक्षा की ओर हरियाणा का सृजनात्मक कदम' जैसे विषय इस बात के प्रमाण हैं कि आनंदपूर्ण, अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षण ही बच्चों के सर्वांगीण विकास का आधार है। शिक्षा तब सबसे प्रभावी बनती है, जब उसमें कला, प्रयोग, खेल और जीवनानुभवों का समावेश हो। इस अंक में 'बालसारथी', 'खेल-खेल में विज्ञान' तथा 'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' जैसे नियमित स्तंभ रचनात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। हमें विश्वास है कि यह अंक शिक्षकों, विद्यार्थियों और शिक्षा से जुड़े सभी पाठकों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

आइए, हम सब मिलकर ऐसी शिक्षा-व्यवस्था के निर्माण का संकल्प लें जो ज्ञान के साथ संवेदना, नवाचार के साथ संस्कार और प्रगति के साथ मानवीय मूल्यों को भी समान महत्त्व दे।

-संपादक

सामुदायिक भागीदारी से विद्यालय प्रशासन होगा सुदृढ़ -धर्मेन्द्र प्रधान

केंद्रीय मंत्री ने नई दिल्ली में लॉन्च किए स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) के दिशा-निर्देश

डॉ. प्रदीप राठौर

केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने बीते दिनों नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) के दिशा-निर्देश लॉन्च किए। इस अवसर पर दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार के शिक्षा मंत्री श्री आशीष सूद; छत्तीसगढ़ सरकार के स्कूल शिक्षा मंत्री श्री गजेंद्र यादव; स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग (डीओएसईएल) के सचिव श्री संजय कुमार; पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के सचिव श्री अशोक कुमार मीणा तथा डीओएसईएल की अतिरिक्त सचिव श्रीमती अर्चना एस. अवस्थी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

इस अवसर पर अपने संबोधन में श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) दिशा-निर्देश-2026 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के विज़न को देश के लगभग 15 लाख विद्यालयों में कार्यान्वित करने में

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। उन्होंने कहा कि इन दिशा-निर्देशों में एसएमसी को विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदायों के बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतु के रूप में परिकल्पित किया गया है, जिससे सामुदायिक भागीदारी और शिक्षा में साझा उत्तरदायित्व के माध्यम से बच्चों का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

श्री प्रधान ने इस बात पर बल दिया कि जहाँ एक ओर सरकार बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, कल्याण, मानसिक स्वास्थ्य तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सीडब्ल्यूएसएन) के लिए समर्थन सुनिश्चित करने के प्रति वचनबद्ध है, वहीं एसएमसी दिशा-निर्देश विद्यालयों को सुदृढ़ बनाने में सहयोग, मार्गदर्शन और सामुदायिक स्वामित्व के महत्त्व को भी मान्यता देते हैं। उन्होंने कहा कि इन दिशा-निर्देशों का उद्देश्य एसएमसी को शैक्षिक परिणामों में सुधार की एक स्थायी संस्कृति और जन-आंदोलन के रूप में विकसित करना है। विद्यांजलि जैसी पहलों की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि भारत की शिक्षा व्यवस्था ऐतिहासिक रूप से सामुदायिक नेतृत्व के अंतर्गत फली-फूली है और नए एसएमसी दिशा-निर्देश विद्यालयों को पुनः सामाजिक सहभागिता के केंद्र में स्थापित कर उसी भावना को पुनर्जीवित करने का प्रयास करते हैं।

अपने संबोधन में श्री आशीष सूद ने कहा कि यह

कार्यक्रम केवल नए दिशा-निर्देश जारी करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की शिक्षा व्यवस्था में हो रहे गहन और परिवर्तनकारी बदलाव का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि यदि भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लक्ष्य को प्राप्त करना है, तो उसका मार्ग देश की कक्षाओं से होकर ही गुज़रेगा।

श्री सूद ने नवप्रारंभित एसएमसी दिशा-निर्देश 2026 को इस परिवर्तनकारी यात्रा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के बाद प्रारंभ किया गया पूर्ववर्ती एसएमसी ढाँचा मुख्यतः अनुदान निगरानी, अवसंरचना पर्यवेक्षण और प्रशासनिक प्रक्रियाओं तक सीमित था। किंतु आज की चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ काफी बदल चुकी हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि बाल सुरक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान (एफएलएन), डिजिटल पारदर्शिता, अधिगम (लर्निंग) परिणाम तथा सामुदायिक भागीदारी जैसे विषय अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन गए हैं। नए एसएमसी दिशा-निर्देशों को इन प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। मंत्री महोदय ने कहा कि ये

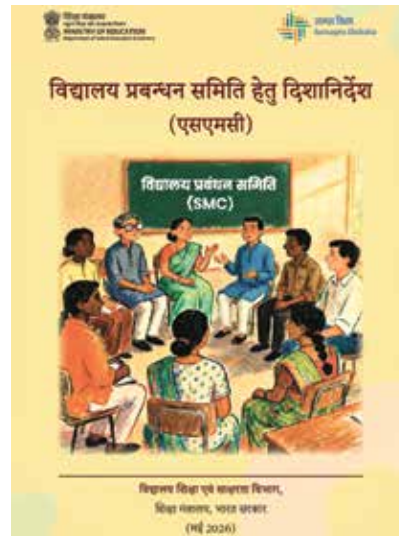

दिशा-निर्देश एसएमसी को मात्र निगरानी निकाय से आगे बढ़ाकर वास्तविक विद्यालय समुदाय प्रशासनिक संस्थान में परिवर्तित करते हैं। अब एसएमसी समग्र बाल विकास, शैक्षणिक गुणवत्ता, छात्र कल्याण, सुरक्षा, समावेशन, डिजिटल प्रशासन तथा पारदर्शिता में सक्रिय योगदान देंगी। अपने संबोधन के अंत में श्री सूद ने विश्वास व्यक्त किया कि एसएमसी दिशा-निर्देश 2026 सामुदायिक भागीदारी, पारदर्शिता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुदृढ़ करेंगे।

अपने संबोधन में श्री गजेंद्र यादव ने कहा कि बच्चों के अधिगम परिणामों में सुधार के लिए समाज की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान के नेतृत्व में प्रस्तुत किए गए स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) दिशा-निर्देश विद्यालय प्रबंधन और संचालन में स्थानीय अभिभावकों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित कर अभिभावकों और विद्यालयों के बीच की दूरी को कम करने में सहायक होंगे।

बैठक में हरियाणा के स्कूल, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा सहित कई राज्यों के शिक्षा मंत्रियों ने वर्चुअल माध्यम से भाग लिया।

drpradeeprathore@gmail.com

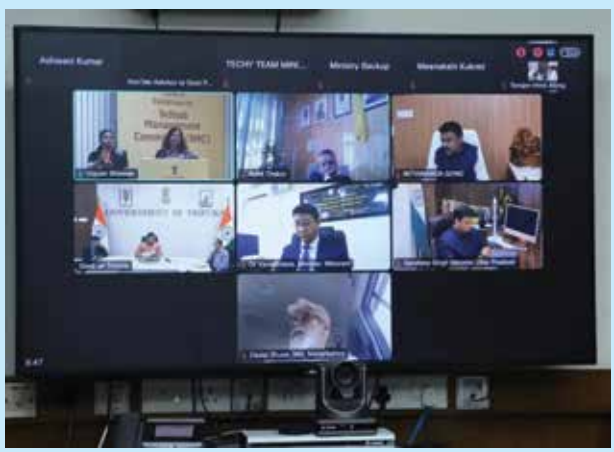

विद्यालय केवल ज्ञान देने का केंद्र नहीं, बल्कि समाज के सामूहिक भविष्य का निर्माण स्थल है। इसी भावना के साथ विद्यालय प्रबंधन समितियाँ हमारे शैक्षिक तंत्र में जनभागीदारी, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व का सशक्त माध्यम बनकर उभरी हैं। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 6 मई 2026 को माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी) दिशानिर्देश का विमोचन किया गया, जिसमें मुझे भी वर्चुअल माध्यम से सहभागिता का अवसर मिला। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की उस मूल भावना को साकार करती है, जिसमें शिक्षा को केवल सरकारी व्यवस्था नहीं, बल्कि समाज, परिवार और विद्यालय के साझा दायित्व के रूप में देखा गया है। हरियाणा में हम निरंतर इस दिशा में कार्य कर रहे हैं कि माता-पिता, अभिभावक, पंचायत प्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाएँ तथा समुदाय के सभी हितधारक विद्यालयों के विकास में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

एसएमसी केवल एक समिति नहीं, बल्कि बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सामूहिक चिंतन, संसाधनों के प्रभावी उपयोग, विद्यालयीय वातावरण के सुदृढ़ीकरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने का जन-आंदोलन है। मेरा विश्वास है कि जब अभिभावक विद्यालय से जुड़ते हैं, समुदाय निर्णय-निर्माण में भागीदार बनता है और विद्यालय समाज के साथ संवाद स्थापित करता है, तब शिक्षा अधिक समावेशी, संवेदनशील और परिणामकारी बनती है। हरियाणा सरकार का स्पष्ट संकल्प है कि प्रदेश का प्रत्येक विद्यालय उत्कृष्टता, समान अवसर और नवाचार का केंद्र बने। एसएमसी दिशा-निर्देश इस दिशा में विद्यालय शासन को अधिक प्रभावी, सहभागी और जवाबदेह बनाने वाला महत्त्वपूर्ण दस्तावेज सिद्ध होगा। आइए, हम सब मिलकर ऐसी सशक्त शैक्षिक संस्कृति का निर्माण करें, जहाँ हर बच्चा समर्थ बने, हर विद्यालय प्रगतिशील बने और हरियाणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उद्देश्यों को धरातल पर सफलतापूर्वक साकार करने में अग्रणी राज्य बने।

महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

स्कूल प्रबंधन समिति : बच्चों के बेहतर भविष्य की सामूहिक ज़िम्मेदारी

एसएमसी को प्रभावी प्रशिक्षण से बनाया जा रहा है- जीवंत, संवादात्मक और व्यावहारिक

रहमदीन

किसी भी समाज का भविष्य उसके विद्यालय में आकार लेता है। विद्यालय केवल पढ़ाई करने की जगह नहीं होते, बल्कि वे ऐसे जीवंत केंद्र होते हैं जहाँ बच्चों के सपने जन्म लेते हैं, उनके व्यक्तित्व का निर्माण होता है और आने वाले कल की दिशा तय होती है। एक छोटा-सा बच्चा जब पहली बार किसी विद्यालय की चौखट पर कदम रखता है, तब उसके साथ केवल एक बस्ता नहीं आता, बल्कि उसके माता-पिता की आशाएँ, परिवार के सपने और समाज की अपेक्षाएँ भी उसके साथ चलती हैं। यही कारण है कि शिक्षा को केवल सरकार या शिक्षक की ज़िम्मेदारी मान लेना पर्याप्त नहीं है। जब तक समाज स्वयं विद्यालयों से जुड़कर उन्हें अपना नहीं मानेगा, तब तक शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य अधूरा रहेगा।

इसी सोच के साथ विद्यालयों में स्कूल प्रबंधन समितियों अर्थात् एसएमसी का गठन किया जाता है। यह केवल एक प्रशासनिक व्यवस्था नहीं, बल्कि समाज और विद्यालय के बीच विश्वास, सहभागिता और ज़िम्मेदारी का ऐसा मज़बूत संबंध है, जो बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एसएमसी उस भावना का प्रतीक है, जिसमें विद्यालय केवल शिक्षकों का नहीं, बल्कि पूरे समाज का साझा दायित्व बन जाता है।

जब कोई अभिभावक विद्यालय की बैठक में बैठकर अपने बच्चे की पढ़ाई की चर्चा करता है, जब गाँव का कोई बुज़ुर्ग विद्यालय की समस्या को अपनी समस्या मानता है, जब कोई माँ विद्यालय की स्वच्छता और बच्चों की सुरक्षा को लेकर सुझाव देती है, तब शिक्षा केवल सरकारी योजना नहीं रहती, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना का हिस्सा बन जाती है। यही स्कूल प्रबंधन समिति की सबसे बड़ी ताकत है। सरकार ने विद्यालयों को अधिक जवाबदेह, पारदर्शी और समुदाय से जुड़ा बनाने के उद्देश्य से स्कूलों में एसएमसी का गठन किया। इन समितियों में अभिभावकों को विशेष स्थान दिया गया, ताकि विद्यालय से जुड़े निर्णयों में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो सके। यह व्यवस्था इस विश्वास पर आधारित है कि जो लोग अपने बच्चों के भविष्य से सबसे अधिक जुड़े हैं, वे विद्यालय की आवश्यकताओं और समस्याओं को सबसे गहराई से समझ सकते हैं।

लेकिन केवल समिति बना देना ही पर्याप्त नहीं होता। किसी भी व्यवस्था की सफलता उसके सदस्यों की समझ, जागरूकता और सक्रियता पर निर्भर करती है। यदि एसएमसी के सदस्य अपने अधिकारों और कर्तव्यों से परिचित नहीं होंगे, तो वे विद्यालय विकास में प्रभावी भूमिका नहीं निभा पाएँगे। बिना समझ और प्रशिक्षण के कोई भी समिति केवल कागज़ों तक सीमित होकर रह

जाती है। यही कारण है कि एसएमसी सदस्यों के प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक हो जाते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक ऐसे अभिभावक होते हैं, जिन्हें शिक्षा व्यवस्था की प्रक्रियाओं की अधिक जानकारी नहीं होती। कई बार वे विद्यालय के कार्यों को केवल शिक्षकों की ज़िम्मेदारी मानते हैं। कुछ सदस्य बैठकों में उपस्थित तो होते हैं, लेकिन अपनी बात रखने में झिझक महसूस करते हैं। उन्हें यह पता ही नहीं होता कि वे विद्यालय की योजनाओं, बच्चों की उपस्थिति, मध्याह्न भोजन, आधारभूत सुविधाओं और सीखने की गुणवत्ता पर अपनी राय दे सकते हैं। ऐसे में प्रशिक्षण उन्हें जागरूक बनाने के साथ-साथ आत्मविश्वास भी प्रदान करता है।

एसएमसी प्रशिक्षणों का उद्देश्य केवल नियम समझाना नहीं होना चाहिए, बल्कि उनमें ज़िम्मेदारी और अपनत्व की भावना विकसित करना भी होना चाहिए। प्रशिक्षण ऐसा हो, जो सदस्यों के मन में यह भावना पैदा करे कि विद्यालय केवल सरकारी भवन नहीं, बल्कि उनके बच्चों के भविष्य का घर है। जब यह भावना जागती है, तब समिति निष्क्रिय नहीं रहती, बल्कि विद्यालय के विकास की सक्रिय भागीदार बन जाती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि एसएमसी प्रशिक्षणों को केवल औपचारिकता न माना जाए। कई बार प्रशिक्षण केवल निर्देश पढ़कर समाप्त कर दिए जाते हैं। समिति सदस्य न तो विषय को ठीक से समझ पाते हैं और न ही अपनी भूमिका को लेकर स्पष्ट हो पाते हैं। ऐसे प्रशिक्षणों का प्रभाव बहुत सीमित रह जाता है। यदि वास्तव में एसएमसी को मज़बूत बनाना है, तो प्रशिक्षणों को जीवंत, संवादात्मक और व्यावहारिक बनाना होगा।

प्रशिक्षण की भाषा भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। यदि प्रशिक्षण कठिन और औपचारिक शब्दों में दिया जाएगा, तो सामान्य अभिभावक स्वयं को उससे जुड़ा हुआ महसूस नहीं करेंगे। प्रशिक्षण सरल, सहज और स्थानीय भाषा में होना चाहिए। जब उदाहरणों, कहानियों और वास्तविक अनुभवों के माध्यम से बात समझाई जाती है, तो उसका प्रभाव कहीं अधिक गहरा होता है। किसी गाँव की सफल एसएमसी की कहानी कई बार लंबे भाषण से अधिक प्रेरणा दे जाती है।

एसएमसी सदस्यों को यह समझाना आवश्यक है कि उनका कार्य केवल बैठकों में हस्ताक्षर करना नहीं है। वे विद्यालय की गुणवत्ता सुधारने के महत्वपूर्ण साथी हैं। उन्हें बच्चों की नियमित उपस्थिति पर ध्यान देना चाहिए, विद्यालय की स्वच्छता और सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, विद्यालय छोड़ चुके बच्चों को वापस लाने में सहयोग करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का सही उपयोग हो रहा है या नहीं।

विद्यालय विकास योजना तैयार करने में भी एसएमसी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि समिति सक्रिय हो, तो विद्यालय की वास्तविक आवश्यकताओं की पहचान बेहतर तरीके से हो सकती है। कई बार शिक्षक अकेले सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते, लेकिन जब समुदाय साथ में खड़ा होता है, तो कठिन कार्य भी आसान हो जाते हैं। कहीं समुदाय ने मिलकर पुस्तकालय बनवाया, कहीं विद्यालय में पौधारोपण अभियान चलाया गया और कहीं अभिभावकों ने स्वयं श्रमदान कर विद्यालय की मरम्मत करवाई। यह सब तभी संभव हुआ, जब एसएमसी ने अपनी ज़िम्मेदारी को समझा।

इनके सदस्यों के प्रशिक्षणों को प्रभावी बनाने के लिए यह भी आवश्यक है कि उनमें केवल भाषण न हों, बल्कि सहभागिता हो। समूह चर्चा, भूमिका निर्वहन, समस्या समाधान गतिविधियाँ और विद्यालय भ्रमण जैसी गतिविधियाँ प्रशिक्षण को अधिक उपयोगी बना सकती हैं। यदि सदस्यों को विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़कर प्रशिक्षण दिया जाए, तो वे अपनी भूमिका को अधिक बेहतर ढंग से समझ पाते हैं।

वर्तमान तकनीक का उपयोग भी एसएमसी प्रशिक्षणों को अधिक प्रभावी बना सकता है। छोटे वीडियो, ऑडियो संदेश, मोबाइल आधारित प्रशिक्षण सामग्री और व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से सदस्यों तक निरंतर जानकारी पहुँचाई जा सकती है। कई बार प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद सदस्य बहुत-सी बातें भूल जाते हैं। यदि समय-समय पर उन्हें सरल भाषा में जानकारी और प्रेरक संदेश मिलते रहें, तो उनकी सक्रियता बनी रहती है।

महिलाओं की भागीदारी भी एसएमसी की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। कई बार समिति में महिलाओं के नाम तो होते हैं, लेकिन बैठकों में उनकी सक्रिय भागीदारी कम दिखाई देती है। प्रशिक्षणों में ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए, जहाँ महिलाएँ खुलकर अपनी बात रख सकें। क्योंकि एक माँ बच्चे की शिक्षा और उसकी भावनात्मक आवश्यकताओं को सबसे अधिक संवेदनशीलता से समझती है। जब माताएँ विद्यालय से

जुड़ती हैं, तो बच्चों की उपस्थिति, स्वच्छता और सीखने के वातावरण में सकारात्मक बदलाव दिखाई देने लगते हैं।

एसएमसी के प्रशिक्षणों में बच्चों के अधिकारों पर भी विशेष चर्चा होनी चाहिए। सदस्यों को यह जानकारी होना आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे को सुरक्षित, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। यदि कोई बच्चा विद्यालय छोड़ देता है या किसी प्रकार की उपेक्षा का सामना करता है, तो समिति की ज़िम्मेदारी बनती है कि वह उसके लिए आगे आए। कई जगहों पर विद्यालयों में अक्सर यह शिकायत सुनने को मिलती है कि यहाँ के अभिभावक बच्चों की शिक्षा के प्रति गंभीर नहीं हैं। लेकिन यह भी सच है कि अनेक अभिभावकों को कभी यह महसूस ही नहीं कराया गया कि वे विद्यालय व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। एसएमसी प्रशिक्षण इस दूरी को कम कर सकते हैं। जब अभिभावक सम्मान और अपनापन महसूस करते हैं, तब वे विद्यालय से अधिक गहराई से जुड़ते हैं।

इस दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव अत्यंत उपयोगी हो सकते हैं। सबसे पहले प्रशिक्षणों को नियमित और चरणबद्ध बनाया जाना चाहिए। केवल एक बार प्रशिक्षण देकर ज़िम्मेदारी पूरी मान लेना उचित नहीं होगा। समय-समय पर पुनः प्रशिक्षण आवश्यक है। दूसरा, प्रशिक्षणों में स्थानीय सफल उदाहरणों को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि सदस्य प्रेरित हो सकें। तीसरा, प्रशिक्षणों में व्यावहारिक गतिविधियों को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। चौथा, प्रशिक्षण के बाद एसएमसी सदस्यों के अच्छे कार्यों की सराहना और सम्मान भी होना चाहिए। जब किसी समिति के कार्यों को सार्वजनिक रूप से पहचान मिलती है, तो अन्य समितियाँ भी प्रेरित होती हैं।

इसके अतिरिक्त विद्यालयों में एसएमसी दिवस जैसी पहल भी शुरू की जा सकती है, जिसमें समिति के सदस्य बच्चों के साथ समय बिताएँ, उनकी समस्याएँ सुनें और विद्यालय विकास के लिए सामूहिक संकल्प लें। इससे विद्यालय और समुदाय के बीच संबंध और अधिक मज़बूत होंगे।

यह भी आवश्यक है कि शिक्षक और एसएमसी के बीच संबंध सहयोगपूर्ण हों। कई बार दोनों पक्ष ही एक-दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं, जबकि वास्तव में दोनों का उद्देश्य एक ही होता है- बच्चों का बेहतर भविष्य। यदि शिक्षक समिति को सहयोगी मानें और समिति शिक्षक के कार्य का सम्मान करे, तो विद्यालय का वातावरण अधिक सकारात्मक और रचनात्मक बन सकता है।

शिक्षा केवल पुस्तकों से नहीं बदलती, बल्कि रिश्तों से भी बदलती है। जब विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक और समुदाय मिलकर बच्चों के भविष्य की ज़िम्मेदारी उठाते हैं, तब शिक्षा में वास्तविक परिवर्तन दिखाई देता है। एसएमसी इसी साझेदारी की सबसे सुंदर मिसाल है।

आज हरियाणा राज्य शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नई पहल कर रहा है। बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान, निपुण हरियाणा मिशन, कक्षा तत्परता कार्यक्रम और गतिविधि आधारित शिक्षण जैसे अभियानों को सफल बनाने में एसएमसी की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो सकती है। यदि विद्यालय की प्रबंधन समिति सक्रिय और जागरूक होगी, तो वह बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने, अभिभावकों को प्रेरित करने और विद्यालय में बेहतर सीखने का वातावरण तैयार करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

यह समय शिक्षा को केवल सरकारी ज़िम्मेदारी मानने का नहीं, बल्कि सामूहिक उत्तरदायित्व के रूप में स्वीकार करने का है। एसएमसी इस सोच को मज़बूत करती है कि विद्यालय समाज का है और समाज ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। किसी भी विद्यालय की वास्तविक पहचान केवल उसके भवनों से नहीं होती। उसकी पहचान इस बात से होती है कि वहाँ बच्चों के चेहरे कितने प्रसन्न हैं, वहाँ सीखने का वातावरण कितना आत्मीय है और वहाँ समाज का रिश्ता कितना मज़बूत है। जब एसएमसी जागरूक, संवेदनशील और सक्रिय होती है, तब विद्यालय केवल पढ़ाई की जगह नहीं रहता, बल्कि उम्मीदों का ऐसा केंद्र बन जाता है, जहाँ हर बच्चा अपने सपनों को उड़ान देना सीखता है।

निस्संदेह, यदि स्कूल प्रबंधन समितियों को सही दिशा, प्रभावी प्रशिक्षण और सम्मानजनक भागीदारी मिले, तो वे विद्यालयों में शिक्षा की नई कहानी लिख सकती हैं। क्योंकि जब समाज शिक्षा के साथ खड़ा होता है, तब परिवर्तन केवल कल्पना नहीं रहता, बल्कि वास्तविकता बन जाता है।

प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर (एलएलएफ)
शिक्षा सदन, पंचकूला, हरियाणा

शिक्षक केवल पढ़ाने वाले व्यक्ति नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण का आधार हैं -राज्यपाल

राज्यपाल का दो दिवसीय नूँह दौरा रहा शिक्षा, स्वास्थ्य और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को समर्पित

दिनेश कुमार गोयल

हरियाणा के राज्यपाल महोदय प्रो. असीम कुमार घोष जी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मित्रा घोष जी के साथ नूँह (मेवात) जिले का दो दिवसीय (30 अप्रैल से 1 मई, 2026) दौरा किया। आमतौर पर लोग यह मान रहे थे कि यह दौरा केवल औपचारिक होगा या किसी भवन अथवा कार्यक्रम के उद्घाटन तक सीमित रहेगा, लेकिन यह दौरा पूरी तरह अलग, संवेदनशील और प्रेरणादायक साबित हुआ। यह दौरा शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को समर्पित दिखाई दिया।

अपने दौरे के दौरान राज्यपाल महोदय ने जिला नूँह के राजकीय मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नूँह-2 तथा गाँव फिरोजपुर नमक स्थित पीएमश्री राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल का निरीक्षण किया। उन्होंने स्कूलों में शौचालयों, पेयजल, साफ-सफाई, बिजली, पंखों, शिक्षा व्यवस्था तथा अन्य मूलभूत सुविधाओं का गहन निरीक्षण किया। यह दौरा केवल औपचारिकता नहीं था, बल्कि हर व्यवस्था को स्वयं देखकर, समझने और सुधारने का प्रयास था।

विद्यालय निरीक्षण के दौरान उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि कक्षाओं में बच्चों को केवल भौतिक सुविधाएँ ही नहीं, बल्कि सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण भी प्राप्त हो। उन्होंने शिक्षकों से संवाद कर शिक्षण पद्धति, विद्यार्थियों की उपस्थिति, बुनियादी साक्षरता और सीखने के स्तर पर भी जानकारी ली। इससे स्पष्ट हुआ कि उनका ध्यान केवल भवनों की स्थिति तक सीमित नहीं था, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता और बच्चों के सीखने के वास्तविक अनुभव पर भी केंद्रित था।

राज्यपाल महोदय ने दोनों विद्यालयों की प्राइमरी विंग की कक्षाओं में जाकर बच्चों से सीधा संवाद किया। बच्चों के बीच पहुँचते ही माहौल खुशियों से भर गया। उन्होंने बच्चों को प्यार से दुलार किया, उनका हालचाल पूछा और उन्हें अपने हाथों से चॉकलेट वितरित कीं। बच्चों ने मुस्कुराते हुए 'थैंक यू' कहा और पूरा वातावरण आनंदमय हो गया।

गाँव फिरोजपुर नमक स्थित विद्यालय की बाल वाटिका कक्षा में पहुँचने पर एक अत्यंत मनमोहक दृश्य देखने को मिला। छोटे-छोटे बच्चे पूरे उत्साह के साथ 'नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए, बाकी जो बचा था काले चोर ले गए' गीत प्रस्तुत कर रहे थे। बच्चों की मासूम आवाज़ और उत्साह को देखकर राज्यपाल महोदय स्वयं भी प्रसन्न हो उठे और बच्चों के साथ झूमने लगे।

राज्यपाल महोदय एवं लेडी गवर्नर श्रीमती मित्रा घोष जी बच्चों के बीच कक्षा में ही बैठ गए। दोनों ने तालियाँ बजाकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया और गीत की धुन पर बच्चों के साथ मुस्कुराते हुए समय बिताया। यह दृश्य विद्यालय परिवार और नन्हे-मुन्ने बच्चों के लिए अत्यंत यादगार बन गया।

राज्यपाल महोदय ने प्यार और दुलार से बच्चों के गालों को छुआ, उनसे बातचीत की, उनके नाम पूछे, पढ़ाई के बारे में जानकारी ली और उन्हें साफ-सफाई, अनुशासन तथा नियमित विद्यालय आने की प्रेरणा दी। उन्होंने बच्चों से कहा कि आप सभी देश का भविष्य हैं और मन लगाकर पढ़ाई करें, ताकि जीवन में अच्छे नागरिक बन सकें।

राज्यपाल महोदय ने बच्चों को स्वच्छता का विशेष संदेश देते हुए कहा कि अपने नाखून साफ रखें और भोजन से पहले तथा बाद में हाथ अवश्य धोएँ। उन्होंने कहा कि अच्छी आदतें ही अच्छे भविष्य की नींव बनती हैं। विद्यालयों में पेयजल व्यवस्था की भी उन्होंने बारीकी से जाँच की। पानी की टोंटियाँ चलाकर देखीं, पानी को स्वच्छ रखने के निर्देश दिए और कहा कि यदि अधिकारी स्वयं यह पानी पी सकते हैं, तभी बच्चों को भी दिया जाना चाहिए। उन्होंने समय-समय पर पानी की टंकियों की सफाई कराने पर ज़ोर दिया।

स्वच्छता और पेयजल पर उनका विशेष आग्रह सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि विद्यालयी आयु के बच्चों में जल-जनित रोगों और अस्वच्छता से होने वाली समस्याओं की रोकथाम सीधे उनके स्वास्थ्य, उपस्थिति और शैक्षणिक प्रगति से जुड़ी होती है। इस दृष्टिकोण ने उनके संदेश को केवल सलाह नहीं, बल्कि व्यावहारिक जनस्वास्थ्य चेतना का रूप दिया।

राज्यपाल महोदय ने विद्यालयों के शौचालयों का भी निरीक्षण किया। सफाई व्यवस्था देखकर उन्होंने कहा कि किसी भी संस्थान की असली पहचान उसके शौचालयों की स्थिति से होती है। उन्होंने स्वच्छ भारत और स्वच्छ हरियाणा की भावना के अनुरूप शौचालयों की सफाई को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। हालाँकि शौचालयों की स्थिति देखकर वे चिंतित दिखे और व्यवस्था में सुधार करने को कहा। मिड-डे मील व्यवस्था का निरीक्षण करते हुए उन्होंने भोजन की गुणवत्ता, मेन्यू और स्वच्छता के बारे में जानकारी ली। रसोई कर्मचारियों को बच्चों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने तथा साफ-सुथरे वातावरण में भोजन तैयार करने के निर्देश दिए।

मिड-डे मील व्यवस्था पर उनका फोकस विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि यह योजना केवल पोषण कार्यक्रम नहीं, बल्कि विद्यालयी उपस्थिति, बाल स्वास्थ्य और सामाजिक समानता का आधार भी मानी जाती है। भोजन की गुणवत्ता और स्वच्छता पर उनका बल यह दर्शाता है कि बच्चों के विकास में पोषण और शिक्षा को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

कक्षाओं में जाकर उन्होंने बच्चों की उपस्थिति, बैठने की व्यवस्था, वेंटिलेशन, पंखों और प्रकाश-व्यवस्था की समीक्षा की। जहाँ कमियाँ मिलीं, वहाँ तुरंत सुधार के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जब बच्चा नियमित विद्यालय आएगा, तभी शिक्षा का सही लाभ मिलेगा। कार्यक्रम में मौजूद अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए राज्यपाल महोदय ने कहा कि बच्चों का समग्र विकास तभी संभव है, जब अभिभावक और शिक्षक मिलकर अपनी ज़िम्मेदारी निभाएँ। शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें खेल, स्वास्थ्य, अनुशासन और नैतिक मूल्यों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

उन्होंने अभिभावकों और शिक्षकों की साझा भूमिका पर जो बल दिया, वह आधुनिक शिक्षा की उस अवधारणा को पुष्ट करता है, जिसमें विद्यालय, परिवार और समुदाय को बच्चे के विकास की त्रयी माना जाता है। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से उन क्षेत्रों में अधिक प्रभावी माना जाता है जहाँ पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को निरंतर प्रेरणा और सहयोग की आवश्यकता होती है।

उन्होंने अभिभावकों से कहा कि बच्चों को पर्याप्त समय दें, उनकी पढ़ाई के साथ-साथ उनके व्यवहार और रुचियों पर भी ध्यान दें। बच्चों को डाँटें नहीं, बल्कि प्यार और दुलार के साथ सिखाएँ। प्यार से बच्चे जल्दी सीखते हैं और उनके व्यवहार में सकारात्मक बदलाव आता है। उन्होंने कहा कि कई बार बच्चे अपनी समस्याएँ साझा नहीं कर पाते, इसलिए अभिभावकों को उनके साथ निरंतर संवाद बनाए रखना चाहिए। अभिभावक बच्चों के मित्र बनें, ताकि वे खुलकर अपनी बात कह सकें। राज्यपाल महोदय का यह संदेश आधुनिक बाल-मनोविज्ञान की उस स्थापित अवधारणा से भी मेल खाता है, जिसमें बच्चों के भावनात्मक विकास, आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता के लिए परिवार के भीतर संवादपूर्ण वातावरण को अत्यंत आवश्यक माना गया है। बच्चों के साथ मित्रवत् व्यवहार न केवल उनके मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करता है, बल्कि उन्हें भय मुक्त होकर अपनी जिज्ञासाएँ, समस्याएँ और सपने साझा करने का अवसर भी देता है। विशेषकर किशोरावस्था की ओर बढ़ते विद्यार्थियों के लिए यह दृष्टिकोण सकारात्मक व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्राथमिक शिक्षकों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षक केवल पढ़ाने वाले व्यक्ति नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का आधार हैं। आपके पास जो बच्चा 5 से 6 घंटे रहता है, उसे अच्छे संस्कार देना, प्रेरित करना और अपने बच्चों की तरह ध्यान रखना आपकी

ज़िम्मेदारी है। शिक्षक बच्चों के मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत होते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों में अनुशासन, आत्मविश्वास और देशभक्ति की भावना विकसित करें। बच्चों को सही दिशा देने के लिए अभिभावकों और शिक्षकों के बीच बेहतर तालमेल होना बेहद ज़रूरी है। उनका यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की उस मूल भावना को भी प्रतिबिंबित करता है, जिसमें शिक्षक को केवल विषय ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों, कौशल, चरित्र और सामाजिक चेतना विकसित करने वाला मार्गदर्शक माना गया है। विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर शिक्षक की भूमिका बच्चों की बुनियादी सोच, भाषा, व्यवहार और आत्मछवि को आकार देने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। ऐसे में शिक्षकों को संवेदनशील, प्रेरक और उत्तरदायी भूमिका निभाने का उनका आह्वान शिक्षा व्यवस्था के व्यापक उद्देश्य को रेखांकित करता है।

राज्यपाल महोदय ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि नूँह का बच्चा भी कल डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट, खिलाड़ी और अधिकारी बन सकता है। ज़रूरत है उन्हें सही दिशा, संस्कार और अवसर देने की। दौरे के दौरान उन्होंने दोनों विद्यालयों में विद्यार्थियों की विभिन्न सुविधाओं के लिए 10-10 लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की, ताकि शौचालय, पेयजल और अन्य बुनियादी सुविधाओं में और सुधार किया जा सके। यह आर्थिक सहयोग केवल वित्तीय सहायता नहीं, बल्कि नूँह जैसे आकांक्षी क्षेत्र के बच्चों के प्रतिविश्वास और संभावनाओं की सार्वजनिक स्वीकृति भी थी। विद्यालयी ढाँचे में सुधार हेतु घोषित यह राशि इस बात का संकेत है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रेरक भाषणों के साथ-साथ संसाधनों का सशक्त प्रावधान भी उतना ही आवश्यक है। आधारभूत सुविधाओं में सुधार से विद्यार्थियों की उपस्थिति, सुरक्षा, स्वास्थ्य और सीखने का वातावरण बेहतर होने की संभावना और अधिक बढ़ती है।

विश्वसनीय समाचार स्रोतों के अनुसार, राज्यपाल महोदय ने अपने नूँह प्रवास के दौरान केवल विद्यालयों तक ही स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि प्रशासनिक अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून व्यवस्था और जनसमस्याओं के त्वरित समाधान पर भी विशेष बल दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि नूँह के समग्र विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, खेल सुविधाओं और बुनियादी ढाँचे को मज़बूत करना आवश्यक है। उन्होंने घासेड़ा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण कर ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं, दवाओं की उपलब्धता, स्वच्छता तथा मरीजों को समय पर उपचार सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। इस व्यापक दृष्टिकोण ने उनके दौरे को केवल विद्यालय निरीक्षण न रखकर नूँह ज़िले के समग्र विकास के प्रति गंभीर प्रशासनिक प्रतिबद्धता के रूप में स्थापित किया। स्वास्थ्य केंद्र निरीक्षण और प्रशासनिक समीक्षा यह दर्शाती है कि उनका दृष्टिकोण विकास को बहुआयामी रूप में देखता है, जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा एक-दूसरे से जुड़े स्तंभ हैं। किसी भी क्षेत्र के स्थायी विकास के लिए विद्यालय, स्वास्थ्य केंद्र और प्रशासनिक जवाबदेही का समान रूप से मज़बूत होना आवश्यक माना जाता है, और उनके दौरे ने इसी समन्वित विकास मॉडल को रेखांकित किया।

कक्षाओं के निरीक्षण के दौरान उन्होंने सभी बच्चों को अपने हाथों से चॉकलेट और कलर पैकेट वितरित किए। बच्चों की मुस्कान और उत्साह ने पूरे कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। इस दौरे का सबसे प्रेरक संदेश यह रहा कि राज्यपाल महोदय ने बार-बार 'समग्र विकास' को केंद्र में रखा अर्थात् शिक्षा केवल परीक्षा परिणाम तक सीमित न रहे, बल्कि स्वच्छता, स्वास्थ्य, खेल, संस्कार, संवाद और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े। नूँह ज़िले के लिए यह संदेश विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि यहाँ बच्चों को अवसर, प्रेरणा और संसाधनों से जोड़ना ही भविष्य निर्माण की सबसे बड़ी कुंजी है।

यह दो दिवसीय दौरा केवल प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि यह शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के प्रति राज्यपाल महोदय की संवेदनशील सोच और समर्पण का जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया। नूँह ज़िले के लोग इस दौरे को लंबे समय तक याद रखेंगे।

पीजीटी कॉमर्स
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
नूँह, हरियाणा

सकुरा साइंस प्रोग्राम में हरियाणा का परचमः सरकारी स्कूलों के चार सितारे पहुँचे जापान

सोनाली वोहरा

प्रदेश के छोटे शहरों और सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की प्रतिभा अब अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुँच चुकी थी। इसका ताज़ा उदाहरण हरियाणा के चार मेधावी छात्र रहे, जिनका चयन जापान के प्रतिष्ठित सकुरा साइंस प्रोग्राम के लिए हुआ था। इस कार्यक्रम में चयनित छात्र जापान जाकर नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिकों और विश्वस्तरीय वैज्ञानिकों से विज्ञान और तकनीक की शिक्षा लेकर लौटे। देश-भर से कुल 56 छात्रों का चयन किया गया था, जिनमें हरियाणा के चार छात्र शामिल रहे। इनके नाम हैं- खुशी, सपना, दीक्षा और ध्रुव। चयनित विद्यार्थियों में कुरुक्षेत्र के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कमोदा में सुपर-100 में अध्ययनरत दो छात्राएँ शामिल थीं, जबकि अन्य छात्र फतेहाबाद तथा महेंद्रगढ़ जिलों से रहे। सकुरा साइंस प्रोग्राम के तहत चयनित इन विद्यार्थियों ने जापान में विज्ञान और तकनीक की बारीकियाँ सीखकर न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे हरियाणा का गौरव बढ़ाया।

चारों छात्र 24 से 30 मई, 2026 तक जापान में आयोजित कार्यक्रम में सहभागी बने। यह उपलब्धि विद्यार्थियों की अथक मेहनत, वैज्ञानिक सोच, अनुशासन एवं उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ-साथ शिक्षकों के सतत मार्ग दर्शन तथा हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद की दूरदर्शी शैक्षणिक पहलों का परिणाम रही।

विशेष रूप से यह तथ्य अत्यंत प्रेरणादायक रहा कि चयनित विद्यार्थियों में अधिकांश छात्राएँ थीं, जिसने यह सिद्ध किया कि हरियाणा की बेटियाँ विज्ञान एवं नवाचार के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रही थीं तथा महिला सशक्तीकरण की दिशा में सशक्त उदाहरण प्रस्तुत कर रहीथीं। इन छात्राओं की यह उपलब्धि केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं रही, बल्कि पूरे राज्य की बालिकाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। उन्होंने सिद्ध किया कि परिश्रम, लगन और सही मार्गदर्शन के माध्यम से वैश्विक मंच तक पहुँचना संभव है। उनकी सफलता अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणादायक उदाहरण बनी, जिसने उन्हें बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने हेतु प्रेरित किया।

इस आधार पर हुआ था चयन-

छात्रों का चयन उनके शैक्षणिक रिकॉर्ड, एनएमएमएस में प्रतिभागिता, विज्ञान विषय में उपलब्धियों तथा विज्ञान गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर किया गया था। भारत-सरकार के शिक्षा-मंत्रालय ने पहले राज्यों से एनएमएमएस के उत्कृष्ट छात्रों की सूची माँगी थी जिन्होंने 11वीं में विज्ञान संकाय को चुना। इसके बाद राज्य ने अपने ज़िलों से नाम भेजे और फिर शिक्षा-मंत्रालय की ओर से अंतिम चयन किया गया था।

सरकार ने उठाया पूरा खर्च-

इस कार्यक्रम का आयोजन जापान की जापान साइंस एंड टेक्नोलॉजी एजेंसी द्वारा किया गया था। कार्यक्रम में चयनित छात्रों के जापान आने-जाने, रहने, खाने, लैब विजिट और अन्य गतिविधियों का पूरा खर्च भारत-सरकार द्वारा वहन किया गया।

यहाँ मिला रियल साइंस का अनुभव-

24 से 30 मई 2026 तक जापान प्रवास के दौरान इन विद्यार्थियों ने वहाँ के प्रतिष्ठित शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थानों का भ्रमण किया, वैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों से संवाद स्थापित किया तथा आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी नवाचारों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया। इस अनुभव ने उनके आत्मविश्वास, ज्ञान एवं वैश्विक समझ को नई दिशा दी तथा उन्हें भविष्य में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिकों के व्याख्यान सुने। जापान के विश्वविद्यालयों और रिसर्च-लैब्स का दौरा किया। रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नई तकनीकों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। इसके साथ ही जापानी छात्रों के साथ संयुक्त गतिविधियों में भाग लेकर उन्होंने जापानी संस्कृति को भी निकट से समझा।

जापान से लौटने के बाद इन विद्यार्थियों के अनुभवों ने अन्य छात्रों में भी विज्ञान के प्रति नई जिज्ञासा जगाई। विद्यालयों में उनके संवाद-सत्र प्रेरणा के केंद्र बने, जहाँ उन्होंने बताया कि वैश्विक स्तर पर विज्ञान केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि प्रयोग, नवाचार और मानवीय कल्याण का माध्यम है। उनके अनुभवों ने यह स्पष्ट किया कि सरकारी विद्यालयों के छात्र भी अवसर मिलने पर विश्व मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रभावशाली प्रदर्शन कर सकते हैं। कई विद्यालयों में विज्ञान क्लबों और नवाचार गतिविधियों के प्रति रुचि बढ़ी, जिससे ग्रामीण एवं छोटे शहरों के विद्यार्थियों में भी अंतरराष्ट्रीय अवसरों के प्रति आत्मविश्वास सुदृढ़ हुआ।

यह सफलता समग्र शिक्षा हरियाणा की उस व्यापक सोच को साकार करती रही, जिसके अंतर्गत राजकीय विद्यालयों में STEM लैब्स, अटल टिंकरिंग लैब्स, रोबोटिक्स लैब्स, एस्ट्रोनॉमी लैब्स, करियर मार्गदर्शन कार्यक्रमों एवं अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक अवसरों के माध्यम से विद्यार्थियों को वैज्ञानिक चिंतन, नवाचार एवं वैश्विक दृष्टिकोण से सशक्त बनाया जा रहा था। राज्य-सरकार का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल परीक्षा-उन्मुख शिक्षा देना नहीं रहा, बल्कि उन्हें भविष्य के वैज्ञानिक, नवप्रवर्तक एवं वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित करना रहा।

यह उपलब्धि इस बात का भी प्रमाण बनी कि सही नीतियाँ, समर्पित शिक्षक और अवसरों की समान उपलब्धता शिक्षा के परिदृश्य को बदल सकती है। हरियाणा के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने यह सिद्ध कर दिया कि संसाधनों की सीमाएँ प्रतिभा की उड़ान को रोक नहीं सकतीं। यह सफलता शिक्षा में समानता, गुणवत्ता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दिशा में हरियाणा की बढ़ती सशक्त उपस्थिति का प्रतीक बन गई।

यह उपलब्धि हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था, शिक्षकों की प्रतिबद्धता तथा समग्र शिक्षा हरियाणा की संकल्पबद्ध दृष्टि का सशक्त उदाहरण बनी, जिसके माध्यम से राज्य के विद्यार्थियों, विशेषकर बेटियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्टता प्राप्त करने के अवसर मिले। यह सफलता न केवल हरियाणा के लिए गौरव का विषय बनी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का एक नया मानदंड भी स्थापित कर गई।

विज्ञान परियोजना समन्वयक
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला

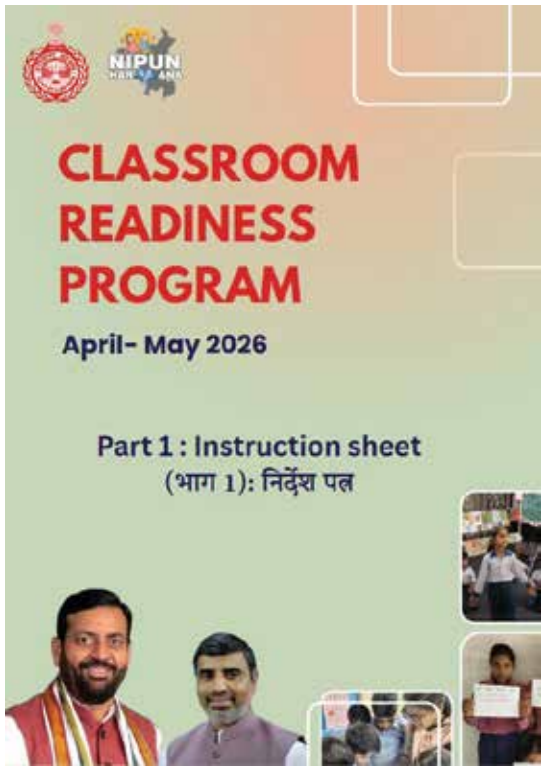

कक्षा तत्परता कार्यक्रम-2026 : आनंदपूर्ण सीखने की सशक्त शुरुआत

डॉ. प्रमोद कुमार

अप्रैल का महीना विद्यालयों में केवल नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत नहीं करता, बल्कि बच्चों के जीवन में सीखने की एक नई यात्रा का द्वार खोलता है। नई कक्षा, नई पुस्तकें, नया वातावरण- इन सबके बीच हर बच्चा अपने भीतर अनेक उत्सुकताएँ, आशंकाएँ और संभावनाएँ लेकर विद्यालय आता है। कोई बच्चा आत्मविश्वास से भरा होता है, तो कोई अभी भी संकोच में रहता है। कोई पिछली कक्षा की अवधारणाओं को सहजता से याद रखता है, तो किसी बच्चे को अक्षर, संख्या, शब्द, वाक्य या गणना जैसी मूलभूत क्षमताओं को दोबारा मज़बूत करने की आवश्यकता होती है। यही वह संवेदनशील समय होता है जब विद्यालय को केवल पाठ्यक्रम आरंभ करने की बजाय बच्चों को सीखने के लिए तैयार करने की भूमिका निभानी होती है।

यदि नए सत्र की शुरुआत सीधे पाठ्यपुस्तकों और अध्यायों से कर दी जाए, तो कई बच्चे पीछे छूटने लगते हैं। लेकिन यदि शुरुआत खेल, कहानी, संवाद, गतिविधि, अनुभव और आत्मीयता से हो, तो वही बच्चा धीरे-धीरे विद्यालय से जुड़ता है, शिक्षक पर भरोसा करता है और सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी करने लगता है।

इसी सोच को केंद्र में रखते हुए हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा इस वर्ष भी कक्षा तत्परता कार्यक्रम-2026 को और अधिक सशक्त और सुव्यवस्थित रूप में लागू किया गया है। यह कार्यक्रम केवल एक प्रारंभिक गतिविधि नहीं, बल्कि बच्चों को अगली कक्षा के लिए शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक और मानसिक रूप से तैयार करने की एक व्यापक पहल है। यह कार्यक्रम उस पुल की तरह कार्य करता है जो बच्चे को पिछली कक्षा की अधूरी समझ से नई कक्षा की अपेक्षाओं तक, संकोच से आत्मविश्वास तक और भय से आनंदपूर्ण सीखने तक ले जाता है।

निपुण हरियाणा मिशन का लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान में दक्ष बने । इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में ही बच्चों की वास्तविक सीखने की स्थिति को समझा जाए और उसी के अनुसार उन्हें सहयोग दिया जाए। इसी उद्देश्य से कक्षा तत्परता कार्यक्रम को 45 दिनों की एक संरचित शैक्षणिक पहल के रूप में संचालित किया गया है, जिसमें बच्चों को पिछली कक्षा की आवश्यक दक्षताओं से जोड़ते हुए नई कक्षा की सीखने की तैयारी करवाई जाती है।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम-2026

इस वर्ष कक्षा तत्परता कार्यक्रम की विशेषता यह है कि इसे केवल गतिविधियों तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि इसे आकलन, उपचारात्मक शिक्षण, निगरानी और सतत समीक्षा से भी जोड़ा गया है। कक्षा तत्परता कार्यक्रम का मूल दर्शन यह है कि बच्चा तभी प्रभावी रूप से सीखता है जब वह सुरक्षित, सम्मानित, उत्साहित और सहभागी महसूस करता है। इसलिए इस कार्यक्रम में सीखने को बोझ नहीं, बल्कि आनंद का अनुभव बनाया गया है।

भाषा सीखने के लिए कहानियाँ, चित्र-पठन, कविता, भूमिका-निर्वाह, तुकांत शब्द, समूह-चर्चा और मौखिक अभिव्यक्ति जैसी गतिविधियों का उपयोग किया जा रहा है। बच्चे चित्र देखकर कहानी बनाते हैं, अपने अनुभव साझा करते हैं, शब्दों से वाक्य बनाते हैं और धीरे-धीरे आत्मविश्वास के साथ बोलना, पढ़ना और समझना सीखते हैं।

गणित को भी इस कार्यक्रम में जीवन से जोड़कर पढ़ाया जा रहा है। संख्या पहचान, गिनती, जोड़, घटाव,

माप, आकार, पैटर्न और तुलना जैसी अवधारणाओं को केवल कॉपी या ब्लैकबोर्ड तक सीमित नहीं रखा गया है। बच्चे कंकड़, पत्तियाँ, खिलौने, कक्षा में उपलब्ध वस्तुएँ, स्थानीय सामग्री और खेलों के माध्यम से गणित सीख रहे हैं। कहीं बच्चे संख्या रेखा पर कूदते हुए गिनती कर रहे हैं, कहीं समूह में वस्तुओं को गिनकर जोड़-घटाव सीख रहे हैं, तो कहीं बाज़ार, दूरी, समय और माप जैसे दैनिक जीवन के उदाहरणों से गणित को समझ रहे हैं। इससे गणित का भय कम होता है और बच्चे संख्याओं को रटने के बजाय समझने लगते हैं।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह बच्चों की विविधता को स्वीकार करता है। सभी बच्चे एक समान गति से नहीं सीखते। किसी बच्चे को अधिक अभ्यास की आवश्यकता होती है, किसी को अधिक प्रोत्साहन की। किसी को दृश्य सामग्री से सीखना आसान लगता है, तो कोई गतिविधि के माध्यम से बेहतर सीखता है। यह कार्यक्रम बच्चों को एक ही तरीके से पढ़ाने के बजाय उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सीखने का अवसर देता है। यही समावेशी शिक्षा का वास्तविक स्वरूप है।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम ने विद्यालयों में वातावरण को भी बदला है। कक्षाएँ अब केवल पाठ्यपुस्तक-आधारित नहीं रहीं, बल्कि गतिविधि-आधारित, संवाद मूलक और बच्चों की भागीदारी से भरी हुई दिखाई देती हैं। कई विद्यालयों में बच्चे समूह में बैठकर चर्चा कर रहे हैं, TLM का उपयोग कर रहे हैं, SAUS Kits और स्थानीय सामग्री से सीख रहे हैं, खेलों के माध्यम से अवधारणाओं को समझ रहे हैं और अपने अनुभवों को भाषा व गणित से जोड़ रहे हैं। यह परिवर्तन केवल पद्धति का नहीं, बल्कि सोच का परिवर्तन है।

तत्परता कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों और शिक्षकों को सहयोग प्रदान करने के लिए तीन CRP मॉड्यूल भी लॉन्च किए गए।

मॉड्यूल 1 को नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में बच्चों को विद्यालय और नई कक्षा के वातावरण से सहज रूप से जोड़ने के लिए तैयार किया गया। इसमें स्वागत गतिविधियाँ, परिचयात्मक खेल, गीत, कहानी, संवाद, समूह गतिविधियाँ और सामाजिक-भावनात्मक तैयारी पर विशेष बल दिया गया, ताकि बच्चे भय और संकोच से बाहर आकर आत्मविश्वास के साथ सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें।

मॉड्यूल 2 का उद्देश्य बच्चों की पिछली कक्षा की आधारभूत दक्षताओं को पहचानना और मजबूत करना था। इसमें भाषा और गणित की आवश्यक पूर्व-दक्षताओं पर आधारित गतिविधियाँ, अभ्यास, खेल-आधारित शिक्षण, TLM/SAUS Kits का उपयोग, चित्र-पठन, शब्द निर्माण, संख्या पहचान, गिनती, जोड़-घटाव और दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरणों के माध्यम से सीखने के अंतराल को कम करने पर ध्यान दिया गया।

मॉड्यूल 3 को बच्चों को नई कक्षा की अपेक्षित

दक्षताओं की ओर आनंदपूर्ण और सहज तरीके से ले जाने के लिए विकसित किया गया। इसका उद्देश्य बच्चों को अभ्यास का बोझ महसूस कराए बिना, आनंदपूर्ण वातावरण में आवश्यक दक्षताओं का पुनर्बलन कराना है, ताकि वे खेल-खेल में सीखें, अपनी समझ को लागू करें और नई कक्षा की सीखने की अपेक्षाओं के लिए आत्मविश्वास के साथ तैयार हो सकें।

कार्यक्रम के दौरान यह भी देखा गया कि बच्चों की उपस्थिति और सहभागिता में सुधार हुआ है। जब कक्षा में खेल, कहानी, गतिविधि और संवाद का वातावरण बनता है, तो बच्चे विद्यालय आने के लिए उत्साहित होते हैं। वे प्रश्न पूछते हैं, उत्तर खोजते हैं, साथियों के साथ काम करते हैं और धीरे-धीरे सीखने की जिम्मेदारी स्वयं लेने लगते हैं। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है कि बच्चे को केवल उत्तर याद करवाना नहीं, बल्कि उसे सोचने, समझने और अभिव्यक्त करने योग्य बनाना।

गतिविधि-आधारित शिक्षण, बच्चों की सीखने की स्थिति की पहचान, उपचारात्मक योजना, समूह कार्य, सतत आकलन और डिजिटल उपकरणों के उपयोग से शिक्षक अधिक विद्यार्थी-केंद्रित बन रहे हैं। वे यह समझ रहे हैं कि प्रत्येक बच्चे की सीखने की कहानी अलग होती है और शिक्षक का कार्य उस कहानी को पहचानकर उसे आगे बढ़ाना है।

45 दिनों की इस शैक्षणिक प्रक्रिया के बाद CRP Assessment भी आयोजित किया गया है, ताकि कक्षा तत्परता कार्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन किया जा सके। CRP Assessment से प्राप्त परिणाम शिक्षकों, मेंटर्स और अधिकारियों को बच्चों की वास्तविक सीखने की स्थिति को समझने, शेष अधिगम अंतरालों की पहचान करने और आगे की उपचारात्मक शिक्षण योजना तैयार करने में सहायता करेंगे। इस प्रकार यह आकलन केवल परीक्षा नहीं, बल्कि कक्षा तत्परता कार्यक्रम की गुणवत्ता, प्रभाव और आगे की शैक्षणिक रणनीति को मज़बूत करने का महत्त्वपूर्ण साधन होगा।

हरियाणा का कक्षा तत्परता कार्यक्रम शिक्षा को भय से मुक्त, अनुभव से युक्त और जीवन से जुड़ा हुआ बनाता है। यह बच्चों के चेहरे पर मुस्कान, मन में आत्मविश्वास और सीखने में आनंद लाने का प्रयास है। यदि इसी ऊर्जा, संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता के साथ यह कार्यक्रम निरंतर आगे बढ़ता रहा, तो यह न केवल निपुण हरियाणा के लक्ष्य को मजबूत करेगा, बल्कि गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा की दिशा में एक निर्णायक कदम सिद्ध होगा।

राज्य कार्यक्रम अधिकारी (राष्ट्रीय शिक्षा नीति)
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

हरियाणा सुपर-100 का शानदार परचम!

सपनों को मिली उड़ान, आईआईटी / जेईई मेन 2026 सैशन-2 में 16 प्रतिभाओं की ऐतिहासिक 99+ परसेंटाइल उपलब्धि

डॉ. सुदेश रानी

हरियाणा सरकार की महत्त्वाकांक्षी पहल हरियाणा सुपर-100 ने एक बार फिर उत्कृष्ट परिणाम देकर शिक्षा के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस कार्यक्रम से जुड़े 16 विद्यार्थियों ने आईआईटी / जेईई मेन 2026 सैशन-2 में 99+ परसेंटाइल प्राप्त कर प्रदेश का नाम रोशन किया है। यह उपलब्धि न केवल हरियाणा के लिए गर्व का विषय है, बल्कि पूरे देश के राजकीय विद्यालयों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण भी है। उल्लेखनीय है कि देश के किसी भी अन्य राज्य के राजकीय विद्यालयों में इस स्तर का सामूहिक परिणाम देखने को नहीं मिला है।

यह सफलता इस बात का जीवंत प्रमाण है कि यदि सरकारी शिक्षा व्यवस्था में दूरदर्शी योजना, गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक सहयोग और विद्यार्थियों की प्रतिभा को सही दिशा मिले, तो संसाधनों की सीमाएँ भी उत्कृष्टता की राह में बाधा नहीं बनतीं। हरियाणा सुपर 100 ने शिक्षा के लोकतंत्रीकरण की उस अवधारणा को मज़बूत किया है, जिसमें प्रतिभा का मूल्य आर्थिक स्थिति से नहीं, बल्कि अवसरों की समानता से तय होता है।

हरियाणा सुपर 100 कार्यक्रम, Vikalpa Foundation Trust के सहयोग से संचालित किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत राजकीय विद्यालयों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को निजी विद्यालयों के समकक्ष उच्च गुणवत्ता वाली निःशुल्क कोचिंग प्रदान की जाती है। इस पहल का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को भी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के अवसर उपलब्ध कराना है।

कार्यक्रम की विशेषता केवल कोचिंग तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विद्यार्थियों को सुव्यवस्थित शैक्षणिक वातावरण, अनुभवी शिक्षकों का मार्गदर्शन, नियमित परीक्षण, व्यक्तित्व विकास, समय प्रबंधन तथा प्रतियोगी परीक्षा की रणनीति भी प्रदान की जाती है। यही समग्र दृष्टिकोण विद्यार्थियों को कठिन राष्ट्रीय परीक्षाओं के लिए मानसिक और बौद्धिक रूप से तैयार करता है।

इस वर्ष सुपर-100 कार्यक्रम से जुड़े 263 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी, जिनमें से 235 विद्यार्थियों (151 लड़के तथा 84 लड़कियाँ) ने जेईई एडवांस्ड के लिए क्वालीफाई किया, जो लगभग 89% सफलता दर को दर्शाता है। विशेष रूप से 16 विद्यार्थियों ने 99+ परसेंटाइल प्राप्त किए।

यह आँकड़ा केवल परीक्षा परिणाम नहीं, बल्कि सरकारी विद्यालयों में छिपी विशाल प्रतिभा का राष्ट्रीय मंच पर सशक्त उद्घोष है। इतनी बड़ी संख्या में विद्यार्थियों का जेईई एडवांस्ड के लिए चयन यह दर्शाता है कि हरियाणा की शैक्षणिक नीतियाँ अब केवल नामांकन तक सीमित नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण परिणामों की दिशा में भी प्रभावी सिद्ध हो रही हैं।

उत्कृष्टता के आँकड़े- मेहनत की सच्ची तस्वीर

	परसेंटाइल	विद्यार्थियों की संख्या
1	99+	16
2	98+	35
3	97+	57
4	95+	85
5	90+	161

इन परिणामों से स्पष्ट है कि हरियाणा सुपर 100 केवल कुछ चुनिंदा विद्यार्थियों की सफलता की कहानी नहीं, बल्कि व्यापक स्तर पर शैक्षणिक उत्कृष्टता का मॉडल बन चुका है। बड़ी संख्या में विद्यार्थियों का 90+ और 95+ परसेंटाइल प्राप्त करना इस बात का संकेत

हरियाणा के लिए गर्व का क्षण

हरियाणा सुपर-100 ने एक बार फिर शानदार प्रदर्शन करते हुए आईआईटी-जेईई मेन 2026 में नया इतिहास रचा है। 16 विद्यार्थियों ने 99+ पर्सेंटाइल हासिल कर प्रदेश का नाम पूरे देश में रोशन किया है। कुल 263 विद्यार्थियों में से 235 विद्यार्थियों ने जेईई एडवांस के लिए क्वालीफाई किया, जो इस योजना की गुणवत्ता, विद्यार्थियों की मेहनत और शिक्षकों के समर्पण का प्रमाण है।

यह सफलता बताती है कि सीमित संसाधनों वाले परिवारों के बच्चों को सही मार्गदर्शन और अवसर मिले तो वे किसी भी मुकाम तक पहुँच सकते हैं। हरियाणा सरकार शिक्षा को मज़बूत बनाकर हर प्रतिभा को आगे बढ़ाने के लिए बचनबद्ध है। सभी सफल विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों और सहयोगी संस्थाओं को हार्दिक बधाई। भविष्य में भी हमारे युवा ऐसे ही नई ऊँचाइयाँ छूते रहें।

महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

रोहतक में 'सुपर-40' मॉडल की शुरुआत

शिक्षा मंत्री ने किया राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रोहतक में कार्यक्रम के नए सत्र का शुभारंभ

शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा ने हिसार रोड स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रोहतक में सुपर-40 कार्यक्रम के नए सत्र का शुभारंभ किया। इस महत्त्वाकांक्षी पहल का मुख्य उद्देश्य सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता की कोचिंग उपलब्ध कराना, उन्हें एम्स, आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों तक पहुँचाना तथा विद्यार्थियों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण विकसित करना है, ताकि वे निजी कोचिंग संस्थानों के विद्यार्थियों के साथ समान स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। इस पहल के माध्यम से यह धारणा समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल निजी संस्थानों में ही उपलब्ध है। कार्यक्रम को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावशाली बनाने हेतु शिक्षा मंत्री ने अपने स्वैच्छिक कोष से 5 लाख रुपये देने की घोषणा की।

सुपर-100 की तर्ज पर जिला स्तरीय मॉडल के रूप में उपायुक्त सचिन गुप्ता ने बताया कि यह कार्यक्रम हरियाणा सरकार के सुपर 100मॉडल से प्रेरित है। सुपर-40 उन विद्यार्थियों के लिए अवसर का सशक्त मंच है, जो किसी कारणवश सुपर 100 का हिस्सा नहीं बन पाते। यहाँ उन्हें उसी स्तर की कोचिंग, मार्गदर्शन और शैक्षणिक वातावरण प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों को जेईई एवं नीट -दोनों परीक्षाओं की व्यवस्थित तैयारी करवाई जा रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को आईआईटी-जेईई (इंजीनियरिंग) तथा नीट (मेडिकल) दोनों प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अनुभवी सरकारी शिक्षकों द्वारा योजनाबद्ध प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उपायुक्त ने बताया कि आगामी सत्र से योजना का और विस्तार किया जाएगा। कक्षा 11वीं और 12वीं के विद्यार्थियों के लिए एक वर्षीय कोर्स के साथ-साथ दो वर्षों का स्ट्रक्चर्ड तैयारी मॉडल लागू किया जाएगा, जिसमें एनसीईआरटी आधारित कॉन्सेप्ट बिल्डिंग, नियमित टेस्ट, प्रदर्शन मूल्यांकन तथा व्यक्तिगत शैक्षणिक निगरानी को शामिल किया जाएगा। इससे विद्यार्थियों की बुनियाद मज़बूत होगी और वे प्रतियोगी परीक्षाओं में अधिक आत्मविश्वास के साथ सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा ने सुपर-40 के प्रथम बैच के विद्यार्थियों से संवाद कर उनकी तैयारी का फीडबैक लिया। उन्होंने कहा कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी किसी से कम नहीं हैं। उनमें अपार प्रतिभा, क्षमता और संभावनाएँ हैं। आवश्यकता केवल सही मार्गदर्शन, उचित संसाधनों और निरंतर परिश्रम की है। उन्होंने कहा कि राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के सुपर-40 के होनहार विद्यार्थियों से मिलकर मन अत्यंत प्रसन्न हुआ। इन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की लगन, मेहनत और अपने सपनों के प्रति समर्पण देखकर यह विश्वास और भी मज़बूत होता है कि देश का भविष्य सुरक्षित हाथों में है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों की आँखों में दिखने वाले सपने और उन्हें साकार करने का जज़्बा वास्तव में प्रेरणादायक है। सुपर-40 केवल एक कोचिंग कार्यक्रम नहीं, बल्कि सरकारी शिक्षा को प्रतिस्पर्धात्मक, परिणामोन्मुख और उत्कृष्टता आधारित बनाने की दिशा में एक ठोस मॉडल है। यह पहल न केवल प्रतिभाओं को निखार रही है, बल्कि ग्रामीण एवं साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को भी बड़े सपने देखने, उन्हें साकार करने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर रही है। उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि युवा-शक्ति ही राष्ट्र की वास्तविक ताकत है। यदि सही दिशा, संसाधन और अवसर मिलें तो सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी भी राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं। सुपर-40 जैसे प्रयास शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर, सामाजिक न्याय और प्रतिभा संवर्धन की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होंगे। उन्होंने सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आशा व्यक्त की कि वे अपनी मेहनत, अनुशासन और दृढ़ संकल्प के बल पर नई ऊँचाइयों को स्पर्श करेंगे।

है कि कार्यक्रम ने प्रतिस्पर्धी शिक्षा की मजबूत संस्कृति विकसित की है।

इस सफलता के पीछे मिशन बुनियाद की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है, जिसने विद्यार्थियों की आरंभिक शैक्षणिक नींव को मजबूत किया है। इस वर्ष मिशन बुनियाद से कुल 82 विद्यार्थियों ने जेईई एडवांस्ड के लिए क्वालीफाई किया, जिसमें से 04 विद्यार्थियों ने 99+ परसेंटाइल प्राप्त किया है। यह स्पष्ट संकेत है कि कक्षा 9वीं व 10वीं में बनाई गई मज़बूत बुनियाद विद्यार्थी को आगे की कठिन परिस्थितियों में बढ़त दिलाती है।

हरियाणा का सुपर-100 कार्यक्रम यह सिद्ध करता है कि यदि मज़बूत आधार (मिशन बुनियाद) और लक्षित तैयारी (सुपर 100) साथ मिलकर कार्य करें तो राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी भी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अग्रणी बन सकते हैं। यह सफलता केवल एक परिणाम नहीं, बल्कि एक विचार, एक प्रणाली और विद्यार्थियों के अथक प्रयास का परिणाम है। आज हरियाणा सुपर-100 के विद्यार्थी यह दिखा रहे हैं कि सपने संसाधनों से नहीं बल्कि संकल्प और सही दिशा से पूरे होते हैं।

यह पहल सामाजिक न्याय के उस बड़े उद्देश्य को भी साकार करती है, जिसमें ग्रामीण, आर्थिक रूप से कमज़ोर और सीमित संसाधनों वाले परिवारों के बच्चे भी आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों तक पहुँचने का आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं।

शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने इस उपलब्धि पर विद्यार्थियों, शिक्षकों और सहयोगी संस्थाओं को बधाई देते हुए कहा कि यह मॉडल देश के अन्य राज्यों के लिए भी मार्गदर्शक साबित होगा। निस्संदेह, हरियाणा सुपर 100 आज शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर और परिणामोन्मुखी नीति का प्रेरक उदाहरण बनकर उभरा है। यह केवल हरियाणा की सफलता नहीं, बल्कि भारत के सरकारी विद्यालयी शिक्षा तंत्र के लिए एक नई आशा, नया विश्वास और नई दिशा है।

हिंदी अध्यापिका
रामा विद्यालय सैक्टर-25, पंचकूला

विज्ञान, रोबोटिक्स और नवाचार की ओर हरियाणा

अटल टिंकरिंग लैब्स से सशक्त हो रही नई पीढ़ी

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् राज्य के विद्यार्थियों के समग्र शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक विकास को सुनिश्चित करने हेतु निरंतर नवाचारपूर्ण कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है। इसी क्रम में हरियाणा ने समग्र शिक्षा के अंतर्गत राजकीय विद्यालयों में STEM लैब्स, अटल टिंकरिंग लैब्स, रोबोटिक्स लैब्स एवं एस्ट्रोनॉमी लैब्स की व्यापक स्थापना के माध्यम से STEM शिक्षा को सशक्त बनाने की एक परिवर्तनकारी पहल प्रारंभ की है। यह पहल विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मकता, नवाचार एवं अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने के साथ-साथ विद्यालयी शिक्षा को कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, कोडिंग, डिज़ाइन थिंकिंग एवं टिंकरिंग-आधारित शिक्षण जैसी उभरती तकनीकों से जोड़ने की राज्य की दूरदर्शी सोच को दर्शाती है।

राज्य सरकार ने दिसंबर 2026-27 तक कुल 538 STEM लैब्स स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। वर्ष 2024-25 में 50 STEM लैब्स सफलतापूर्वक स्थापित की गईं, जिनके माध्यम से शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं विद्यार्थियों के कौशल विकास को बढ़ावा दिया गया। इसके पश्चात् वर्ष 2025-26 में 391 अतिरिक्त STEM/ATL लैब्स स्थापित की गईं, जिससे राज्य में कुल संख्या बढ़कर 441 हो गई। वर्ष 2026-27 में भारत सरकार द्वारा उपलब्ध शेष बजट से 97 अतिरिक्त STEM लैब्स स्थापित की जाएँगी, जिससे कुल संख्या 538 तक पहुँच जाएगी। साथ ही, पीएमश्री विद्यालयों के अंतर्गत 240 अतिरिक्त STEM/ATL लैब्स स्थापित करने हेतु प्रस्ताव भारत सरकार को अनुमोदन के लिए भेजा गया है, जिससे राज्य में नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को और अधिक विस्तार मिलेगा। यह विस्तार केवल संख्या वृद्धि नहीं, बल्कि ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी आधुनिक वैज्ञानिक संसाधनों तक समान पहुँच प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। इससे ऐसे विद्यार्थियों को, जो अब तक उन्नत तकनीकी संसाधनों से वंचित थे, नवाचार-आधारित शिक्षा से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा।

राज्य की यह पहल केवल आधारभूत संरचना निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके प्रभावी क्रियान्वयन, संचालन उत्कृष्टता एवं सतत क्षमता निर्माण पर समान रूप से केंद्रित है। इसी उद्देश्य से 391 नवस्थापित लैब्स से जुड़े शिक्षकों हेतु 4-दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 अप्रैल, 2026 से प्रारंभ किया गया है, ताकि शिक्षक STEM आधारित शिक्षण को प्रभावी रूप से विद्यालयी कक्षाओं में लागू कर सकें। इसके अतिरिक्त, 11 मई, 2026 से राज्य के सभी 391 विद्यालयों में विशेषज्ञ प्रशिक्षकों द्वारा प्रति विद्यालय 35 संरचित छात्र सत्रों का संचालन प्रारंभ किया गया है, जिससे विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रयोग, नवाचार गतिविधियों एवं तकनीक-आधारित समस्या समाधान का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हो सके। इन सत्रों में विद्यार्थियों को 3-डी प्रिंटिंग, सेंसर-आधारित प्रोजेक्ट्स, प्रारंभिक रोबोटिक्स मॉडल, कोडिंग अभ्यास तथा स्थानीय समस्याओं के तकनीकी समाधान विकसित करने जैसे अवसर दिए जा रहे हैं, जिससे सीखना अधिक प्रयोगधर्मी और जीवनोपयोगी बन रहा है।

हरियाणा इस दिशा में देश का प्रथम राज्य बनकर उभरा है, जिसने 110 विज्ञान प्रवक्ताओं, जिला विज्ञान विशेषज्ञों (DSS) एवं ब्लॉक रिसोर्स पर्सन्स (BRPs) के लिए CSIRIMTech में 5-दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों का शुभारंभ माननीय शिक्षा मंत्री, हरियाणा द्वारा किया गया तथा प्रशिक्षण IITs, NITTTR एवं CSIR जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के विशेषज्ञों द्वारा प्रदान किया गया। इससे विद्यालय स्तर पर प्रभावी मार्गदर्शन हेतु प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स का सशक्त समूह तैयार हुआ है। इसी सहयोग को आगे बढ़ाते हुए 391 STEM लैब्स के शिक्षकों हेतु विशेष आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, विद्यालय स्तरीय सतत मॉनिटरिंग तथा उन्नत दक्षता विकास मॉड्यूल भी संचालित किए जाएँगे, जो राज्य-विशिष्ट ATL पाठ्यक्रम के अनुरूप होंगे। यह बहु-स्तरीय प्रशिक्षण मॉडल सुनिश्चित करता है कि STEM शिक्षा केवल उपकरण-आधारित पहल न रहकर शिक्षण-पद्धति का स्थायी हिस्सा बने, जहाँ शिक्षक विद्यार्थियों में प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और नवाचार विकसित करने की संस्कृति स्थापित कर सकें।

प्रभावी शासन, सतत मॉनिटरिंग एवं दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने हेतु राज्य द्वारा मई-जून 2026 के दौरान जिला स्तरीय संचालन एवं मॉनिटरिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन प्रशिक्षणों में एससीईआरटी के अतिरिक्त निदेशक, जिला शिक्षा अधिकारी, जिला परियोजना समन्वयक, जिला विज्ञान विशेषज्ञ, डाइट प्राचार्य एवं विज्ञान प्रवक्ता, खंड शिक्षा अधिकारी, 391 चयनित विद्यालयों के प्राचार्य, निदेशालय के शैक्षणिक प्रकोष्ठ के कार्यक्रम अधिकारी तथा विभागीय, नीति आयोग एवं सीएसआर सहयोग से स्थापित ATL/STEM/एस्ट्रोनॉमी लैब्स वाले विद्यालयों के प्राचार्य सम्मिलित होंगे। इन प्रशिक्षणों का उद्देश्य लैब्स का अधिकतम उपयोग, प्रभावी पर्यवेक्षण, संचालन दक्षता तथा दीर्घकालिक कार्य-क्षमता सुनिश्चित करना है। इस सुव्यवस्थित प्रशासनिक ढाँचे से नीति निर्माण से लेकर विद्यालय स्तर तक उत्तरदायित्व की स्पष्ट शृंखला विकसित हो रही है, जिससे प्रत्येक लैब की उपयोगिता, रखरखाव और परिणामों का सतत मूल्यांकन संभव हो सकेगा। दीर्घकालिक रूप से यह मॉडल हरियाणा को विद्यालयी नवाचार, वैज्ञानिक प्रतिभा संवर्धन और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय अग्रणी राज्यों की श्रेणी में स्थापित करने की क्षमता रखता है।

सोनाली वोहरा
विज्ञान परियोजना समन्वयक
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला

स्वच्छता से समानता तक: माहवारी शिक्षा का महत्त्व

डॉ. सारिका धूपड़

माहवारी को लंबे समय तक केवल जैविक प्रक्रिया के रूप में देखा गया है, लेकिन आज यह स्पष्ट है कि यह स्वास्थ्य, गरिमा और मानवाधिकारों से जुड़ा एक व्यापक मुद्दा है। माहवारी और किशोरावस्था जीवन के प्राकृतिक विकास चरण हैं, जिनका सीधा प्रभाव छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन और शैक्षिक उपब्धियों पर पड़ता है। एनसीईआरटी की कक्षा 12 जीव विज्ञान पाठ्यपुस्तक माहवारी को गर्भाशय की आंतरिक परत से रक्त, श्लेष्म और ऊतक के निर्वहन के रूप में परिभाषित करती है, जो तब होता है जब मासिक चक्र के दौरान जारी अंडाणु का निषेचन नहीं हो पाता। वहीं, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार माहवारी केवल जैविक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य, गरिमा और मानवाधिकारों का भी विषय है। WHO इस बात पर ज़ोर देता है कि मासिक धर्म स्वास्थ्य का अर्थ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की संपूर्ण स्थिति, है जिसे बिना किसी कलंक, शर्म या बाधा के प्रबंधित किया जाना चाहिए। यह दृष्टिकोण माहवारी को वैश्विक लक्ष्यों- स्वास्थ्य, लैंगिक समानता और स्वच्छता सुविधाओं तक समान और सुरक्षित पहुँच से जोड़ता है और सभी के लिए सुरक्षित, गरिमापूर्ण तथा कलंक-मुक्त प्रबंधन की वकालत करता है।

भारत सहित कई देशों में माहवारी स्वच्छता प्रबंधन (MHM) का बुनियादी ढाँचा अब भी कमज़ोर है। कई स्कूलों में कार्यात्मक शौचालयों की कमी, सैनिटरी उत्पादों की अनुपलब्धता और सामाजिक उपेक्षा किशोरियों की शिक्षा और आत्मविश्वास को प्रभावित करते हैं। खराब रखरखाव और सीमित सामुदायिक भागीदारी के कारण छात्राओं को अस्वस्थता, अनुपस्थिति और पढ़ाई छोड़ने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, क्रेम्प, थकान और मूड स्विंग जैसी सामान्य समस्याएँ शिक्षा को प्रभावित करती हैं।

इसके साथ ही, पीसीओएस (Polycystic Ovary Syndrome) और पीसीओडी (Polycystic Ovary Disease) जैसी बीमारियों की शुरुआती पहचान और समय पर स्वास्थ्य विशेषज्ञों को रेफ़रल भी बेहद ज़रूरी है, क्योंकि देर से निदान होने पर प्रजनन क्षमता, मानसिक स्वास्थ्य और दीर्घकालिक बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। पीसीओएस/पीसीओडी में आमतौर पर मासिक धर्म का अनियमित होना, चेहरे और शरीर पर अनचाहे बाल, मुँहासे, वज़न बढ़ना, सिर के बाल पतले होना और गर्भधारण में कठिनाई जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। असंतुलित आहार, शारीरिक गतिविधि की कमी, तनाव

और नींद की कमी जैसे जीवन-शैली कारक इस स्थिति को और गंभीर बना सकते हैं। इस प्रकार, पीसीओएस/पीसीओडी केवल शारीरिक स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं है, बल्कि जीवनशैली और मानसिक स्वास्थ्य से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

विद्यालय आधारित मासिक धर्म स्वच्छता पहल को मज़बूत बनाने के लिए सरकार समर्थित 'जन औषधि सुविधा नैपकिन्स' एक पर्यावरण-अनुकूल और अत्यंत किफ़ायती विकल्प हैं, जो जन-औषधि केंद्रों पर मात्र 1 रुपये प्रति पैड की दर से उपलब्ध हैं। विद्यालय अपने 'मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन (MHM) कार्यक्रमों' को सुदृढ़ करने के लिए निकटवर्ती जनऔषधि केंद्रों से सहयोग प्राप्त कर सकते हैं और इन नैपकिन्स को निर्धारित कोनों में रख सकते हैं। इसके साथ ही, विद्यालयों को इंसिनिरेटर्स (Incinerators) को MHM कार्यक्रमों में शामिल करना चाहिए ताकि प्रयुक्त नैपकिन्स का सुरक्षित निपटान हो सके। स्वच्छ शौचालयों और सैनिटरी उत्पादों तक पहुँच सुनिश्चित करना, नियमित रखरखाव करना और छात्रों को सही उपयोग व स्वच्छता के महत्त्व पर शिक्षित करने हेतु जागरूकता सेमिनार आयोजित करना भी आवश्यक है।

स्कूलों को चाहिए कि वे छात्राओं के लिए सुरक्षित और सहयोगी वातावरण तैयार करें, जहाँ माहवारी से जुड़ी समस्याओं पर खुलकर चर्चा हो सके। शिक्षकों और परामर्शदाताओं द्वारा मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना, आत्मविश्वास बढ़ाने वाली गतिविधियाँ आयोजित करना और जागरूकता कार्यक्रम चलाना छात्राओं को इस स्थिति को बेहतर ढंग से संभालने में मदद करता है। माहवारी शिक्षा को स्वास्थ्य और जीवन कौशल कक्षाओं में शामिल करना एक लिंग-संवेदनशील पाठ्यक्रम की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। यह केवल लड़कियों के लिए नहीं, बल्कि लड़कों के लिए भी जरूरी है ताकि वे इस प्राकृतिक प्रक्रिया को समझें और सम्मान दें। शिक्षक और अभिभावक मिलकर माहवारी के आसपास की चुप्पी और मिथकों को तोड़ सकते हैं। सहकर्मी समर्थन समूह और छात्र राजदूत माहवारी पर बातचीत को सामान्य बनाने में मदद कर सकते हैं।

यह पहल न केवल व्यक्तिगत कल्याण को मजबूत करेगी, बल्कि स्कूलों को एक सुरक्षित, समावेशी और सम्मानजनक वातावरण में बदल देगी। इस तरह विद्यालय, परिवार और समुदाय मिलकर किशोरियों को भावनात्मक और सामाजिक सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जब विद्यालय और समुदाय मिलकर माहवारी को एक सामान्य, सम्मानजनक और कलंक-मुक्त प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करेंगे, तभी हम उस समाज की ओर अग्रसर होंगे जहाँ हर किशोरी आत्मविश्वास और गरिमा के साथ शिक्षा जारी रख सकेगी और जीवन में आगे बढ़ने की पूरी क्षमता हासिल कर सकेगी।

विषय विशेषज्ञ (जीवविज्ञान)
एससीईआरटी हरियाणा, गुरुग्राम

कला-समेकित शिक्षा की ओर हरियाणा का सृजनात्मक कदम

डॉ. रेखा रानी

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश के विद्यालयों में कला शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने तथा नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप उसे व्यापक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया गया। इस पहल का उद्देश्य न केवल शिक्षकों के कलात्मक कौशल को विकसित करना था, बल्कि उन्हें कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए समग्र, आनंददायक और प्रभावी शिक्षण अनुभव तैयार करने हेतु कला को एक सशक्त माध्यम के रूप में उपयोग करने के लिए सक्षम बनाना भी था। शिक्षा-विभाग द्वारा रोहतक और हिसार मंडल में 20 नवम्बर से 10 दिसम्बर 2025 तक तीन-तीन दिवसीय स्किल-बेस्ड आवासीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

हिसार मंडल में जिला जींद, हिसार, सिरसा और फतेहाबाद के कला शिक्षकों ने आरोही मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अग्रोहा, हिसार में भाग लिया। वहीं, रोहतक मंडल में रोहतक, झज्जर, सोनीपत, भिवानी और चरखी दादरी जिलों के शिक्षकों ने सरकारी कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, हिसार रोड, रोहतक में इस ज्ञानवर्धक अनुभव का लाभ प्राप्त किया। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित इस आवासीय कार्यशाला की सफलता के पीछे कुशल नेतृत्व तथा मास्टर ट्रेनर्स के व्यावहारिक मार्गदर्शन का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। हिसार और रोहतक मंडल के इन विशेषज्ञों ने अपनी कलात्मक दक्षता और शैक्षणिक अनुभव के माध्यम से शिक्षकों को प्रशिक्षित किया। कार्यशाला के दौरान मास्टर ट्रेनर्स ने न केवल सैद्धांतिक जानकारी साझा की, बल्कि विभिन्न कला विधाओं का गहन अभ्यास भी करवाया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 शिक्षा के प्रति एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें कला और रचनात्मकता को स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम का केंद्रीय स्तंभ बनाया गया है। नीति इस बात पर बल देती है कि कला को केवल एक वैकल्पिक या अतिरिक्त गतिविधि के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे सभी विषयों के साथ गहराई से एकीकृत किया जाना चाहिए। इसका मूल उद्देश्य आर्ट-इंटीग्रेटेड लर्निंग (Art-Integrated Learning) अथवा कला-समेकित अधिगम को बढ़ावा देना है। इस दृष्टिकोण के अनुसार कला -चाहे वह दृश्य कला हो, प्रदर्शन कला हो अथवा साहित्यिक कला, सीखने की प्रक्रिया को अधिक सहज, आकर्षक और सार्थक बना सकती है। कला-समेकित अधिगम न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मकता,

आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान क्षमता तथा सौंदर्य-बोध को विकसित करता है, बल्कि यह अमूर्त अवधारणाओं को समझने और विभिन्न विषयों के बीच संबंध स्थापित करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

इस तीन-दिवसीय कार्यशाला में कक्षा 6 से 8 के कला शिक्षकों को कला की विस्तृत विधाओं से परिचित कराया गया, जिनमें पारंपरिक, आधुनिक, लोक तथा प्रायोगिक कलाएँ शामिल थीं। इन विधाओं का गहन प्रशिक्षण इसलिए दिया गया ताकि शिक्षक इन्हें स्वयं अनुभव कर सकें तथा अपनी कक्षाओं में विद्यार्थियों को भी प्रभावी ढंग से सिखा सकें।

कार्यशाला में कुछ प्रमुख थीम्स पर कार्य किया गया, जिनमें पोस्टर मेकिंग, कैलिग्राफी, ऑयल पेस्टल, लिप्पन आर्ट, वरली आर्ट, क्ले मॉडलिंग, स्टिललाइफ, रंगोली तथा वॉटर कलर तकनीकें प्रमुख रहीं। इन सभी विषयों के प्रशिक्षण का उद्देश्य कला को केवल एक स्वतंत्र विषय के रूप में प्रस्तुत करना नहीं था, बल्कि भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन तथा स्थानीय विचारधाराओं जैसे अन्य शैक्षिक विषयों के साथ समेकित करते हुए आर्ट-इंटीग्रेटेड लर्निंग का व्यावहारिक मॉडल प्रस्तुत करना था।

कक्षा 6 से 8 तक का आयु वर्ग (लगभग 11 से 14 वर्ष) किशोरावस्था की शुरुआत का समय होता है, जब विद्यार्थियों में वैचारिक विकास और अवधारणाओं को समझने की क्षमता तीव्र गति से विकसित होती है। यह वह महत्वपूर्ण चरण है, जहाँ उन्हें केवल अकादमिक विषयों की ठोस समझ ही नहीं, बल्कि रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता और आलोचनात्मक सोच को भी विकसित करने की आवश्यकता होती है। उदाहरण स्वरूप, पोस्टर मेकिंग को सामाजिक विज्ञान में सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान, स्वच्छता जागरूकता,

राज्य स्तर पर कला-समेकित शिक्षा को एक सुदृढ़ और नीति-अनुकूल ढाँचे के रूप में स्थापित करना आज की आवश्यकता है। इस कार्यशाला ने विद्यालयी शिक्षा में कला की महत्ता को पुनः रेखांकित करते हुए यह स्पष्ट किया कि कला केवल सहगामी गतिविधि नहीं, बल्कि प्रभावी शिक्षण का माध्यम है। प्रशिक्षण के दौरान कला को मुख्य पाठ्यक्रम से जोड़ने के वैज्ञानिक, व्यावहारिक और सृजनात्मक तरीकों पर विशेष बल दिया गया। इसका उद्देश्य ऐसी शिक्षण व्यवस्था विकसित करना है, जहाँ रटने की प्रवृत्ति समाप्त हो और विद्यार्थी अनुभवात्मक रूप से विषयों को समझ सकें। यह प्रशिक्षण शिक्षकों की वैचारिक स्पष्टता, नवाचार क्षमता और अभिव्यक्ति कौशल को सशक्त बनाएगा, जिससे वे जटिल अवधारणाओं को भी विद्यार्थियों के समक्ष सरल, रोचक और रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।

हरप्रीत कौर
संयुक्त निदेशक (एमएसएस)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

यह कार्यशाला राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप देने की दिशा में विभाग की दूरदर्शी सोच का परिणाम रही। प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार करते समय विशेष रूप से कक्षा 6 से 8 के शैक्षिक लक्ष्यों, स्थानीय परिवेश तथा सीमित संसाधनों को ध्यान में रखा गया। कार्यशाला की संकल्पना से लेकर उसके सफल क्रियान्वयन तक यह प्रयास इसी विश्वास पर आधारित रहा कि कला शिक्षा सीखने को अधिक प्रभावी और जीवन्त बनाती है। इसमें लोक कला और शास्त्रीय कला दोनों को समान महत्त्व दिया गया, ताकि विद्यार्थी परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित कर सकें। मिनिएचर पेंटिंग और वार्ली आर्ट जैसी विधाएँ विद्यार्थियों को सांस्कृतिक विरासत से जोड़ते हुए आधुनिक अवधारणाओं को सरल ढंग से समझाने में सहायक सिद्ध होंगी। इस पहल के माध्यम से कला शिक्षा के मूलभूत लाभ विद्यार्थियों तक प्रभावी रूप से पहुँच सके हैं।

अमनप्रीत कौर
कार्यक्रम अधिकारी
निदेशालय विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

विद्यालयों में कला-आधारित शिक्षण को बढ़ावा देना केवल शैक्षिक सुधार नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। हमारे जिले में आयोजित यह कार्यशाला इसी सोच को व्यावहारिक रूप देने में सफल रही। इस प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों ने न केवल नई तकनीकी एवं शैक्षणिक दक्षताएँ विकसित कीं, बल्कि बहु-विषयक शिक्षण को कक्षा-कक्ष में प्रभावी ढंग से अपनाने की प्रेरणा भी प्राप्त की। कला के माध्यम से भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक अध्ययन जैसे विषयों को जोड़ने से विद्यार्थियों की समझ अधिक गहरी और सीखने में उनकी सहभागिता अधिक सक्रिय हुई है। सीमित संसाधनों के बावजूद प्रशिक्षकों और शिक्षकों ने रचनात्मकता के साथ सीखने को जीवंत बनाया।

राम रतन
जिला शिक्षा अधिकारी
हिसार

एक नोडल अधिकारी के रूप में मेरा प्रमुख उद्देश्य प्रशिक्षण के बाद उसके स्थायी प्रभाव और प्रभावी फॉलो-अप को सुनिश्चित करना रहा। अगरोहा विद्यालय में बारह दिनों तक आयोजित इस कार्यशाला ने मुझे एक शिक्षक के रूप में पुनः सीखने और स्वयं को नए दृष्टिकोण से समझने का अवसर प्रदान किया। यहाँ प्रशिक्षक और प्रशिक्षार्थी के बीच का अंतर समाप्त हो गया था; हम सभी सीखने की प्रक्रिया के सहभागी थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 भी हमें इसी अनुभवात्मक और सहभागी शिक्षण की ओर प्रेरित करती है। मेरी भूमिका केवल आयोजन तक सीमित नहीं रही, बल्कि इस विचारधारा के प्रति एक सक्रिय और प्रतिबद्ध संवाहक बनने की थी। फोटोग्राफी के प्रति अपने रुचि के कारण कार्यशाला के दौरान मैंने अपने भीतर के कलाकार को भी निकटता से अनुभव किया। निःसंदेह, विद्यार्थियों के हित में विभाग द्वारा उठाया गया यह कदम अत्यंत सार्थक और उपयोगी सिद्ध होगा।

अमनदीप सिंह
उप-जिला शिक्षा अधिकारी
एवं हिसार के नोडल अधिकारी

शिक्षा केवल जानकारी प्रदान करने का माध्यम नहीं, बल्कि संवेदनाओं, संस्कृति और कौशलों के समन्वय की प्रक्रिया है। रोहतक मंडल में नोडल अधिकारी के रूप में मेरा प्रयास रहा कि कार्यशालाओं का स्वरूप ऐसा हो, जो शिक्षकों को कक्षा-आधारित, बाल-केंद्रित और परियोजना-आधारित शिक्षण के लिए सक्षम बनाए। मास्टर ट्रेनरों के सहयोग से ऐसी गतिविधियाँ विकसित की गईं, जिनमें कला और विषय-समेकन का प्रभावी समावेश हो सके। इस कार्यशाला के माध्यम से विद्यालय को एक ऐसे सृजनात्मक मंच में परिवर्तित करने का प्रयास किया गया, जहाँ रंग, मिट्टी और विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति संभव हो। रोहतक मंडल के पाँच जिलों से आए शिक्षकों ने यहाँ जो सृजन किया, वह केवल कलाकृतियाँ नहीं, बल्कि भविष्य की नवाचारी पाठ योजनाओं की आधारशिला है। अब हमारी जिम्मेदारी है कि इन नवाचारों को विद्यालयों में प्रभावी रूप से लागू कर उन्हें निरंतर विकसित करें।

डॉ. सुनीता अहलावत
प्रधानाचार्या
एवं रोहतक डिवीज़न की नोडल अधिकारी

ऐतिहासिक घटनाओं के प्रचार अथवा संविधान के मूलभूत सिद्धांतों को अभिव्यक्त करने के प्रभावशाली माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया। पोस्टर निर्माण की प्रक्रिया में विद्यार्थी विषय पर शोध करते हैं, केंद्रीय संदेश तैयार करते हैं, दृश्य प्रतीकों का चयन करते हैं तथा रंगों और लेआउट के माध्यम से भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। यह पूरी प्रक्रिया उनके विश्लेषणात्मक कौशल को विकसित करती है।

कैलिग्राफी को हिंदी, अंग्रेज़ी तथा क्षेत्रीय भाषाओं की लिपि-सौंदर्य और शब्दावली को समझने के सृजनात्मक माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया। जब कोई विद्यार्थी सुलेख के माध्यम से कविता की पंक्ति अथवा ऐतिहासिक उद्धरण को सुंदर अक्षरों में लिखता है, तो वह न केवल भाषा की सुंदरता से जुड़ता है, बल्कि उस पाठ के अर्थ को भी गहराई से आत्मसात् करता है। ऑयल पेस्टल और वॉटरकलर तकनीकों का उपयोग भूगोल में प्राकृतिक दृश्यों, पर्यावरणीय चक्रों, जलवायु क्षेत्रों तथा विज्ञान में पादप कोशिका, जंतु कोशिका अथवा विभिन्न प्रकार के पत्तों के चित्रण के लिए किया जा सकता है। रंगों के संयोजन और ब्रश स्ट्रोक्स के माध्यम से वैज्ञानिक अवधारणाएँ दृश्य रूप ग्रहण कर लेती हैं, जिससे उन्हें समझना और याद रखना अधिक सरल हो जाता है।

लिप्पन आर्ट जैसी त्रि-आयामी कला, जिसमें विशेष पेस्ट के माध्यम से उभरी हुई आकृतियाँ बनाई जाती हैं, गणित में ज्यामितीय आकृतियों, भूगोल में स्थलाकृतिक मानचित्रों को समझने में सहायक सिद्ध हो सकती है। स्पर्श और दृष्टि दोनों के उपयोग से सीखने का अनुभव और अधिक समृद्ध बनता है।

कार्यशाला के दौरान शिक्षकों ने अत्यंत उत्साह के साथ विभिन्न व्यावहारिक गतिविधियों में भाग लिया, जहाँ उन्होंने मिट्टी के कार्य से लेकर रंगों के रचनात्मक प्रयोग तक अनेक कलात्मक तकनीकों को सीखा। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों ने मृदा शिल्प (Clay Modeling) और मूर्तिकला के सत्रों में मिट्टी से सजीव आकृतियाँ और मूर्तियाँ बनाना सीखा, जिससे यह समझ विकसित हुई कि विज्ञान और गणित के जटिल सिद्धांतों को ठोस मॉडल के माध्यम से सरल बनाया जा सकता है। स्थानीय संस्कृति को कक्षा से जोड़ने के उद्देश्य से मटकों की सजावट, रंगोली तथा वॉल पेंटिंग (जैसे वरली और लिप्पन आर्ट) का विशेष अभ्यास करवाया गया, जहाँ दीवारों और धरातल पर ज्यामितीय आकृतियों तथा सुंदर पैटर्न्स के माध्यम से कलात्मक वातावरण निर्मित किया गया।

इसी प्रकार, वॉटरकलर और ऑयल पेस्टल की बारीकियों जैसे रंगों का संयोजन तथा परतों का निर्माणको सीखते हुए शिक्षकों ने प्राकृतिक दृश्यों और वैज्ञानिक चित्रों को कागज़ पर उकेरा। वहीं, स्टिल लाइफ के माध्यम से निर्जीव वस्तुओं के सूक्ष्म अवलोकन तथा प्रकाश-छाया के प्रभाव को समझा गया। इसके अतिरिक्त, कैलिग्राफी (सुलेख) और पोस्टर मेकिंग के माध्यम से सुंदर लेखन तथा प्रभावशाली संदेश प्रस्तुति की तकनीकें सिखाई गईं। मिनिएचर पेंटिंग जैसी सूक्ष्म कला विधा के जरिए बारीकी से कार्य करने का अभ्यास कराया गया, ताकि ये सभी व्यावहारिक अनुभव विद्यालयों तक पहुँच कर विद्यार्थियों की शिक्षा को अधिक रोचक, आनंददायक और स्थायी बना सकें।

पीजीटी संस्कृत
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक
विद्यालय, नलवा, हिसार

एक विद्यालय ऐसा भी...

सुरेंद्र बांसल

भूमण्डलीकरण, निजीकरण के अजीब बाजारू दौर में पंजाब में एक ऐसा शिक्षण संस्थान भी है, जहाँ सेवा, सुमिरन, सहयोग, सादगी, शुचिता, ईमानदारी, सच्ची किरत, सत्कर्म तथा परोपकार का व्यावहारिक पाठ पढ़ाया जाता है।

इस शिक्षण संस्थान का नाम है- बाबा आया सिंह रियाड़की कॉलेज तुगलवाला। इसकी स्थापना रियाड़की क्षेत्र के एक परोपकारी बाबा श्री आया सिंह ने 1923 में पुत्री पाठशाला के रूप में की थी। बाबा आया जी 'गुरुमुख परोपकार उमाहा' यानी गुरु का सच्चा सेवक परोपकार, समाज सेवा भी बहुत चाव से करे- जैसे महा वाक्य का अनुसरण करते-करते अपने जीवन के अंतिम अध्याय तक इस पाठशाला से जुड़े रहे। यह शाला जिला गुरदासपुर के उत्तर-पूर्व, दरिया व्यास के साथ पग-पग बहती अपर बारी दोआब नदी के किनारे रियाड़की क्षेत्र के गाँव तुगलवाला में है।

पाठ्य पुस्तकों के साथ-साथ यहाँ जीवन से साक्षात्कार की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। नकल तथा निठल्लेपन की इस शाला में कोई जगह नहीं। दिन के उजाले की सादगी की तरह इस शिक्षण संस्था की शुरुआत होती है। संस्थान के प्रांगण में प्राइमरी, हाई, सीनियर सैकेण्डरी के साथ एमए तक की शिक्षा दी जाती है। लगभग पंद्रह एकड़ में फैले इस विशाल कॉलेज में दस एकड़ जमीन पर खेती-बाड़ी की जाती है, जिसमें सभी विद्यार्थियों का सहयोग रहता है। पाँच एकड़ में लड़कियों का हॉस्टल स्थापित है, जहाँ लगभग 2400 लड़कियाँ रहती हैं। संस्थान वर्ष भर की पढ़ाई का प्रति लड़की 800 रुपया लेता है। निर्धन विद्यार्थियों से रत्ती-भर भी फीस नहीं ली जाती।

कॉलेज के खुशनुमा पहलुओं में से एक पहलू यह भी है कि सभी कक्षाओं के सीनियर विद्यार्थी ही जूनियर कक्षाओं के विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं। यह सिलसिला एमए से लेकर नर्सरी तक चलता है। 4,000 विद्यार्थियों की

> नकल मार कर, पैसे देकर सर्टिफिकेट, डिग्रियाँ लेकर ली गई शिक्षा का क्या अर्थ है? अगर शिक्षा चरित्र नहीं बनाती तो उस शिक्षा का कोई अर्थ नहीं। शिक्षा का असली अर्थ है- मनुष्य को सच्चा इंसान बनाना। अगर शिक्षा बच्चों को हाथ से कर्म करना, संघर्ष करके ऊपर उठना, प्रकृति से प्रेम और अपने परिवेश के प्रति ज़िम्मेदार नागरिक नहीं बनाती तो उस शिक्षा का कोई अर्थ नहीं है।
>
> **- प्रिंसिपल स्वर्ण सिंह विर्क**

संख्या वाले इस संस्थान में मात्र पाँच ही शिक्षक हैं। शिक्षण प्रक्रिया के पहले चरण में एक विद्यार्थी सौ विद्यार्थियों को एक समूह में पढ़ाता है, फिर 10-10 के अन्य समूहों को पढ़ाया जाता है। पढ़ाई में किसी कारण से थोड़ा पिछड़ रहे या कमजोर छात्र को मूर्ख नहीं माना जाता। उस पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ऐसे छात्रों में से एक-एक छात्र को एक-एक शिक्षक विशेष मेहनत कर पढ़ाते हैं।

पूरे शिक्षण संस्थान में 'अपने हाथ अपना काज स्वयं ही सँवारने' की शिक्षा दी जाती है। कॉलेज की सभी लड़कियाँ पढ़ाई के साथ-साथ, प्रोफेसर, प्रिंसिपल, क्लर्कों तक का सारा काम स्वयं ही सँभालती हैं। इन सभी कामों के संचालन हेतु विद्यार्थियों की स्व-निर्मित कमेटी है जो सभी कार्यकर्ताओं को स्वयं सेवा, स्व-निर्भरता तथा सत् चित जैसे जीवन मूल्यों के प्रति सदैव सचेत करती रहती हैं। खुद पर भरोसे से निर्णय लेना, आत्मनिर्भरता के लिये डेयरी, बागवानी, रसोई तथा खेती का सारा काम, हॉस्टल में उपयोग होने वाला अनाज तथा सब्जियाँ लड़कियाँ स्वयं ही उगाती हैं। संस्थान में बचत के उपाय भी निरन्तर खोजे जाते रहते हैं। इसमें संस्थान की अपनी आटा चक्की, धान छानने की मशीन, गन्ने के रस की मशीन, सौर ऊर्जा वाला पंप तथा बिजली प्रबंधन स्कूल का अपना है। बचत के साथ-साथ ये बातें स्वावलंबन भी सिखाती हैं।

संस्थान की दिनचर्या सुचारु ढंग से चले, इसलिए उसे छह भागों में बाँटा गया है। दिन की शुरुआत गुरुवाणी के पाठ, शब्द कीर्तन तथा अरदास से होती है। दिनभर की साफ-सफाई, पढ़ाई तथा खाना बनाने की जिम्मेदारी भी स्वयं विद्यार्थियों की ही होती है। दोपहर का भोजन एक सादे हॉल में पंगत में बैठकर खिलाया जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने बर्तन स्वयं साफ करता है। संस्थान में कोई राज पत्रित अवकाश नहीं होता। यहाँ छुट्टी के बदले सभी धर्मों के गुरुओं, अवतारों के जन्म तथा शहीदी दिवस पूरे उत्साह से मनाए जाते हैं।

आज पाठ्यपुस्तकों का विकल्प बन चुकीं गाइडों तथा नकल का यहाँ नामोनिशान तक नहीं। परीक्षा-सत्र में गुरु नानक देव विश्वविद्यालय से किसी उड़न दस्ते की बजाय सरकारी प्रक्रिया पूरी करने के लिये मात्र एक ही व्यक्ति आता है। इस अधिकारी का काम केवल इतना होता है कि वह सीलबंद लिफाफों को खोल सके। शेष सभी काम कॉलेज प्रबंधन या विद्यार्थी करते हैं। संस्थान की सभी परीक्षाओं यानी एमए से नर्सरी तक का परिणाम शत-प्रतिशत रहता है। यहाँ प्रतिवर्ष अनेक विद्यार्थी प्रथम स्थान के साथ मैरिट में भी रहते हैं। संस्थान के आस-पास के गाँवों में यहाँ की छात्राएँ सेहत, सामाजिक चेतना के लिये नशा मुक्ति, अश्लीलता, एड्स जैसी बुराइयों के प्रति चेतना यात्राएँ भी निकालती हैं।

कॉलेज के प्रिंसिपल और सबके लिए पितातुल्य श्री स्वर्ण सिंह विर्क यहाँ चौबीस घंटे किसी भी काम के लिए उपलब्ध रहते हैं। कॉलेज का स्वभाव ज्यादा से ज्यादा कैसे स्वदेशी हो पाए, उनका पूरा परिवार इसी धुन में जागता और सोता है। कॉलेज का आर्थिक पक्ष कैसे मजबूत हो सके, इसके लिए उन्होंने कॉलेज परिसर में 12 गोबर गैस प्लांट बनवाए हैं, ताकि विशाल हॉस्टल में रहने वाले बच्चों के लिये भोजन बिना बाहरी लकड़ी अथवा गैस के पकाया जा सके। इस संकल्पवान संस्थान ने कभी सरकारी अथवा गैर-सरकारी अनुदान की माँग नहीं की है।

स्वतंत्र लेखक, चंडीगढ़

पुस्तक से परे, परंपरा के साथ: भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का समन्वय

डॉ.राजीव वत्स

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 केवल एक नीतिगत दस्तावेज़ नहीं, बल्कि हमारी शिक्षा दृष्टि में एक गहरा दार्शनिक परिवर्तन है। यह उस प्राचीन भारतीय ज्ञान-वृक्ष की ओर लौटने का साहसिक प्रयास है, जहाँ दर्शन, विज्ञान, कला, भाषा, गणित, शासन और अध्यात्म सभी शाखाएँ एक ही जड़ से पोषित होती थीं और शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी नहीं, बल्कि मनुष्य का समग्र विकास था।

पाठ्य पुस्तक से आगे, ज्ञान-वृक्ष की ओर-

पिछले कई दशकों में हमारी शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः पाठ्यक्रम-केंद्रित और परीक्षा-प्रधान बन गई थी। कक्षा को अक्सर इस तरह देखा जाने लगा, मानो वह एक दौड़ का मैदान हो, जहाँ लक्ष्य केवल अंक, रैंक और प्रमाण पत्र हों। इसके विपरीत सनातन धर्म के ज्ञान-वृक्ष की अवधारणा हमें याद दिलाती है कि भारत की ज्ञान-परंपरा कभी खंडित नहीं रही। भाषा और व्याकरण से लेकर न्याय-तर्क शास्त्र, ज्योतिष और आयुर्वेद से लेकर नाट्य, संगीत और नीतिशास्त्र तक सबको एक समेकित संपूर्ण के रूप में देखा गया।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद केवल आस्था के ग्रंथ नहीं थे, वे भाषा-विज्ञान, छंदशास्त्र, गणितीय चिंतन, खगोल-ज्ञान, चिकित्सा और लोक-शासन पर गहन विमर्श के जीवित स्रोत थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इस तथ्य को स्वीकार करते हुए स्पष्ट रूप से कहती है कि शिक्षा का ढाँचा भारत की 'प्राचीन और निरंतर ज्ञान-परंपरा' से प्रेरित होना चाहिए। साथ ही 21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए आधुनिक कौशल भी दे।

नीति नहीं, सोच में क्रांति-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह शिक्षा को मात्र 'सिस्टम रिफॉर्म' नहीं, बल्कि 'माइंडसेट रिफॉर्म' के रूप में देखती है। नीति स्पष्ट शब्दों में कहती है कि शिक्षण पद्धति को रटने से हटाकर अनुभवात्मक, समग्र, बहु-विषयी, जिज्ञासा-आधारित, संवाद-प्रधान और विद्यार्थी-केंद्रित बनाना अनिवार्य है।

यह बदलाव शिक्षा के मूल प्रश्न को ही बदल देता है- 'बच्चों ने कितना याद किया ?' से 'बच्चों ने कितना समझा, महसूस किया और जिया?' तक। समग्र विकास- बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक, शारीरिक और आध्यात्मिक को नीति के मूल में रखा गया है, ताकि विद्यालय केवल परीक्षा की तैयारी का केंद्र न रह जाए, बल्कि जीवन की तैयारी का स्थान बन सके।

भारतीय ज्ञान प्रणाली : जड़ों से जुड़ने का संकल्प-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-अ2020 की सबसे प्रेरक

धारा भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge Systems IKS) की पुनर्स्थापना है। नीति विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक वेद, उपनिषद्, दर्शन, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, पर्यावरणीय संतुलन, शिल्प, कला, साहित्य, लोक-परंपराओं और नैतिक दृष्टि को आधुनिक पाठ्यचर्या से सार्थक रूप से जोड़ने की बात करती है।

शिक्षा मंत्रालय के अधीन IKS प्रभाग की स्थापना, विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों में IKS-आधारित कोर्स, क्रेडिट और अनुसंधान के लिए दिशा-निर्देश- ये सभी संकेत हैं कि भारतीय ज्ञान अब केवल 'सहायक' विषय नहीं, बल्कि मुख्य धारा की अकादमिक भाषा में पुनः स्थान पा रहा है। यह प्रयास शिक्षा के उपनिवेशित ढाँचे को चुनौती देता है और यह संदेश देता है कि भारतीय चिंतन-परंपरा आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैश्विक विमर्श के साथ सम्मानजनक संवाद कर सकती है।

खंडित विषयों से समग्र और संदर्भित ज्ञान तक-

आज की पारंपरिक कक्षा में गणित, विज्ञान, भाषा, सामाजिक विज्ञान और कला अक्सर अलग-अलग खाँचों में बँटे रहते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इस दीवार को तोड़ने का प्रस्ताव रखती है। बहु-विषयी और अंतर्विषयी शिक्षा के माध्यम से नीति चाहती है कि विद्यार्थी एक ही परियोजना में भाषा, गणित, पर्यावरण, इतिहास, कला और नैतिकता के तारों को जोड़ते हुए सीखें, जैसे प्राचीन ज्ञान-वृक्ष की विभिन्न शाखाएँ एक ही तने से निकलती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति अनुभवात्मक शिक्षण प्रोजेक्ट, फील्डवर्क, इंटर्नशिप, सामुदायिक सहभागिता, स्थानीय शिल्प और लोक-ज्ञान को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना चाहती है, ताकि छात्र पुस्तक के बाहर के जीवन को भी 'पाठ्य-सामग्री' के रूप में अनुभव कर सकें। जब बच्चा अपने गाँव के तालाब, किसान के खेत, मंदिर के स्थापत्य या स्थानीय लोक-कला को सीखने की प्रयोगशाला बनाता है, तब ज्ञान 'सिलेबस' से निकलकर 'संस्कृति' और 'जीवन' का हिस्सा बनता है।

शिक्षकः नीतियों को अनुभव में बदलने वाले कारीगर-

किसी भी नीति को ज़मीन पर उतारने की असली शक्ति शिक्षक के हाथ में होती है। शोध स्पष्ट संकेत देते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और IKS के सफल एकीकरण के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण, दृष्टि-परिवर्तन और सतत पेशेवर विकास निर्णायक कारक हैं। केवल पाठ्यक्रम बदल देना पर्याप्त नहीं, शिक्षक की भूमिका को 'व्याख्याता' से 'मार्गदर्शक, संवादक और सह-शोधी' में बदलना होगा।

इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक भारतीय ज्ञान-परंपरा से आत्मीयता और बौद्धिक विश्वास के साथ परिचित हों, चाहे वह न्याय-तर्क शास्त्र की तार्किकता हो, उपनिषदों की नैतिक दृष्टि, योग और आयुर्वेद की जीवन-दृष्टि, या लोक-कला और लोक-भाषाओं की रचनात्मकता। जब शिक्षक इन तत्त्वों को आधुनिक पाठ्यक्रम विज्ञान, प्रबंधन, भाषा या सामाजिक विज्ञान के साथ सहज रूप से पिरो सकेंगे, तभी कक्षा-कक्ष वास्तव

में परंपरा और आधुनिकता के जीवंत संगम का मंच बन पाएगे

स्कूलः जीवित प्रयोगशालाएँ, न कि केवल परीक्षा-केंद्र-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का असली प्रभाव तभी दिखेगा जब विद्यालय स्वयं को 'परीक्षा-केंद्रित संस्थान' से 'जीवित, सीखने वाले समुदाय' के रूप में पुनर्गठित करेंगे। शोध और नीतिगत विमर्श इस बात पर सहमत हैं कि इसके लिए पाठ्यचर्या, समय-सारिणी, मूल्यांकन और स्कूल-संस्कृति सभी स्तरों पर परिवर्तन आवश्यक है।

इस पुनर्रचना के कुछ आयाम हैं-

समय-सारिणी को इस तरह लचीला बनाना कि अंतर्विषयी परियोजनाएँ, कला-एकीकरण, खेल और सामुदायिक कार्य दैनिक अभ्यास बन जाएँ, 'अतिरिक्त गतिविधि' नहीं।

मूल्यांकन को केवल वर्षांत परीक्षा से हटाकर पोर्टफोलियो, प्रस्तुति, प्रोजेक्ट, स्व-मूल्यांकन और सह-मूल्यांकन की विविधविधियों तक विस्तृत करना, ताकि समझ, सृजनशीलता और चरित्र सभी को स्थान मिले।

विद्यालयी संस्कृति को ऐसा बनाना, जहाँ स्थानीय भाषा, ज्ञान, परंपरा और समुदाय केवल 'उत्सव के दिन' नहीं, बल्कि रोज़मर्रा की शैक्षिक प्रक्रियाओं के अंग हों।

जड़ों में आत्मविश्वास, शाखाओं में वैश्विकता-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की दृष्टि एक ऐसे भारतीय विद्यार्थी की है जो अपनी भाषा, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा में गर्व के साथ तो जुड़ा हो, परंतु विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्यमिता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैश्विक अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संवाद की भाषा में भी उतनी ही सहजता से भाग ले सके। भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश आधुनिक ज्ञान से दूरी नहीं, बल्कि उसकी जड़ों को मज़बूत करने का प्रयास है ताकि प्रगति केवल तकनीकी न होकर नैतिक, पर्यावरणीय और मानवीय भी हो।

भविष्य का भारतीय शिक्षा-दर्शन 'परंपरा बनाम आधुनिकता' की कृत्रिम द्वंद्व-रेखा को पार करके 'परंपरा और आधुनिकता के रचनात्मक समन्वय' की ओर बढ़ सकता है। ज्ञान-वृक्ष की जड़ें सदियों से सशक्त हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हमें यह दुर्लभ अवसर दे रही है कि हम इन जड़ों से नई शाखाएँ उगाएँ। ऐसी पीढ़ी तैयार करें, जो पेशेवर रूप से दक्ष हो, बौद्धिक रूप से जिज्ञासु हो, सांस्कृतिक रूप से रचनाशील हो और वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास से खड़ी हो सके।

यही वह क्षण है जब भारत अपनी शिक्षा से दुनिया को केवल 'डिग्रीधारक' नहीं, बल्कि 'दिशा-दर्शक' मनुष्य दे सकता है। ऐसे मनुष्य, जिनके लिए ज्ञान केवल सूचना नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला हो।

सहायक निदेशक (शैक्षणिक)
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, पंचकूला, हरियाणा

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना, अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

हर वाक्य में शहर का नाम खोजिए-

1. सुमेर ठठेरा है।
2. शंभो पालनहार हैं।
3. गुल बर्गर खाता है।
4. बात को टालो मत।
5. आग रात को लगी।
6. झटपट नाम बताओ।
7. घर में बना रस पियो।
8. झबरे लीना के कुत्ते हैं।
9. लखन ऊर्जा से भरे थे।
10. महाराज कोट पहने थे।
11. सोनी पतली लड़की है।
12. मटर पीली भी तलते हैं।
13. पानी पतवार से हटाओ।
14. महाराजश्री नगर में घूमे।
15. मंसूर तबला बजा रहे थे।
16. नाग पुरवाई में झूम उठा।
17. इंधन बाद में डलवा लेंगे।
18. हरि द्वारका में भी रहते हैं।
19. दिशि लांग ड्राइव पसंद करती है।
20. अगर तला खाया, तो रोग होगा।
21. अमृत सरलता से नहीं मिलता।
22. किसी को एकटक मत देखो।
23. उसका प्रभाव नगर में अधिक है।
24. हाशिम लाठी लेकर आया।
25. विजय पुरस्कार दिलाती है।
26. हार का अवरोह तकलीफदेह है।
27. उदय पुरस्कार लेने पहुँचा।
28. ओमपुरी बड़े कलाकार थे।
29. राम पुरखों का आदर करते थे।
30. थोड़ा कमा ले, गाँव चलेंगे फिर।

1. मेरठ, 2. भोपाल, 3. गुलबर्ग,
4. कोटा, 5. आगरा, 6. पटना,
7. बनारस, 8. बरेली, 9. लखनऊ,
10. राजकोट, 11. सोनीपत,
12. पीलीभीत, 13. पानीपत,
14. श्रीनगर, 15. सूरत, 16. नागपुर,
17. धनबाद, 18. हरिद्वार, 19. शिलांग,
20. अगरतला, 21. अमृतसर,
22. कटक, 23. भावनगर,
24. शिमला, 25. जयपुर,
26. रोहतक, 27. उदयपुर, 28. पुरी,
29. रामपुर, 30. मालेगाँव।

पहेली-निर्माता :
प्रशान्त अग्रवाल
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी, जिला बरेली
उत्तर प्रदेश

अनाजों, दालों पर आधारित बाल पहेलियाँ

1. संस्कृत में तंडुल कहलाता,
तीन अक्षर का नाम।
मध्य हटे तो चाल बनूँ मैं,
अन्न नहीं मैं आम।।

2. प्रथम हटे तो टर कहलाऊँ,
तीन अक्षर का नाम।
फली के अंदर पाई जाऊँ,
सब्जी नहीं मैं आम।।

3. रहूँ अगर मैं अलग-थलग तब,
भाड़ फोड़ न पाऊँ।
यह कहावत जानी-समझी,
बोलो क्या कहलाऊँ?

4. अंत हटे तो बाज बनूँ मैं,
मध्य हटे तो बारा।
तीन अक्षर का मेरा नाम,
बोलो नाम हमारा।।

5. घास कुल का एक पौधा मैं,
दो अक्षर का नाम।
मुझसे रोटी रोज बनाओ,
अन्न नहीं मैं आम।।

6. कैमल क्रॉप के नाम से सब
सदा ही मुझको जानें।
मुझसे दलिया रोज बनाओ,
मोटे हैं मेरे दाने।।

7. पीला-पीला रंग है मेरा,
मैं मैज (कॉर्न) कहलाता।
घास कुल का पौधा हूँ मैं,
खेतों की शान बढ़ाता।।

8. मेरी बाली गेहूँ जैसी,
एक अक्षर का नाम।
संस्कृत में मैं यवः कहलाता,
अन्न नहीं मैं आम।।

9. मंडुआ-मंडुआ कहते हैं,
कैल्शियम, फाइबर से भरपूर।
प्रोटीन का भरपूर खजाना,
रहो न कोई इससे दूर।।

10. लिटिल बाजरा कहते हैं सब,
फाइबर, आयरन से भरपूर।
स्वास्थ्यप्रद कहलाता मैं,
हूँ अपने भारत में मशहूर।।

11. भरपूर कैल्शियम मुझसे पाओ,
मुझसे उपमा, खीर बनाओ।
प्रोसो मिलेट्स सब कहते मुझको,
झटपट मेरा नाम बताओ।।

12. कन्नड़ में हरका सब कहते,
दो अक्षर का नाम।
फाइबर और प्रोटीन प्रदायक,
मिलेट्स नहीं मैं आम।।

13. दलिया, खिचड़ी, इडली, चीला
मुझसे लोग बनाते।
अंग्रेज़ी में ओट्स बुलाते,
खूब फाइबर पाते।।

14. संस्कृत में यवः सब कहते,
हिंदी में तुम बोलो।
गेहूँ जैसा रूप है मेरा,
राज़ मेरा तुम खोलो।।

15. टाऊ, ओगला मुझको कहते,
व्रत में मुझको खाते।
पूड़ी, पराठा और कचौड़ी
मुझसे लोग बनाते।।

उत्तर- 1- चावल, 2- मटर, 3- चना,
4- बाजरा, 5- गेहूँ, 6- ज्वार,
7- मक्का, 8- जौ, 9- रागी, 10-
कुटकी, 11- चीना, 12- कोदो,
13- जई, 14- जौ, 15- कुटटू

डॉ. कमलेंद्र कुमार
रावगंज, कालपी
जिला- जालौन
उत्तर प्रदेश- 285204

घड़े का पानी ठंडा क्यों लगता है ?

बच्चो! क्या तुमने कभी सोचा है कि मिट्टी के घड़े का पानी गर्मियों में इतना ठंडा और स्वादिष्ट क्यों लगता है? इसका कारण बहुत रोचक है। घड़ा मिट्टी से बना होता है और मिट्टी में बहुत छोटे-छोटे छेद होते हैं। इन छेदों से पानी की थोड़ी-थोड़ी मात्रा बाहर आती रहती है। बाहर आने वाला यह पानी हवा के संपर्क में आकर धीरे-धीरे उड़ जाता है। पानी के उड़ने की इस प्रक्रिया को वाष्पीकरण कहते हैं।

जब पानी उड़ता है, तो वह अपने साथ घड़े की गर्मी भी ले जाता है। इससे घड़े के अंदर का पानी ठंडा हो जाता है। यही कारण है कि बिना बिजली और फ्रिज के भी घड़े का पानी ठंडा रहता है।

घड़े का पानी केवल ठंडा ही नहीं होता, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा माना जाता है। मिट्टी पानी को प्राकृतिक रूप से ठंडा करती है और उसका स्वाद भी बढ़ा देती है। पहले के समय में लोग गर्मियों में अधिकतर घड़े का ही पानी पीते थे।

इसलिए अगली बार जब तुम घड़े का ठंडा पानी पियो, तो याद रखना कि यह विज्ञान का एक छोटा-सा और मज़ेदार चमत्कार है।

-शिक्षा सारथी डेस्क

फूलों का राजा

फूलों का मैं राजा हूँ,
देखो कितना ताजा हूँ।
लाल पीला और गुलाबी,
सबके मन को भाता हूँ।

अपने रूप पर इतराता हूँ,
भँवरों को पास बुलाता हूँ।
सुनकर प्यारी गुँजन उनकी,
रमणीक जहान बनाता हूँ।

फूलों का मैं राजा हूँ,
सुंदर वसंत खिलाता हूँ।
काँटों संग रहकर भी मैं,
जीने का मंत्र सिखाता हूँ।

कितना प्यारा कोमल फूल,
तोड़ने की मत करना भूल।
गुलाब तुल्य बनकर भाइयो,
पावन रखना अपने उसूल।

अशोक कुमार ढोरिया
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
तुम्बाहेड़ी, झज्जर
हरियाणा- 124109

गरमी की छुट्टियाँ

गरमी की छुट्टियाँ आईं,
मन में नई उमंगें लाईं।
नई खुशी हर ओर बिखरी,
हँसी गूँजी घर-आँगन छाई।

दादी बोलीं प्यारे बच्चो,
सुन लो बातें अकल के कच्चो।
दोपहरी में घर में रहना,
ठंडा पानी पीते रहना।

आमों की खुशबू घर महकाए,
मीठे रस से मन हर्षाए।
ठंडी शिकंजी जब मिल जाती,
भीतर तक ठंडक पहुँचाती।

छत पर रख देते हैं पानी,
आती फिर चिड़िया रानी।
प्यास बुझाकर फुर्र उड़ जाती,
मीठा-मीठा गीत सुनाती।

शाम ढले जब हवा सुहानी,
लगती प्यारी हर कहानी।
पापा संग हम सैर को जाएँ,
हँसते-गाते लौट के आएँ।

थोड़ा खेलें, थोड़ा पढ़ लें,
अच्छे-अच्छे काम भी कर लें।
शिक्षक जी का कहना मानें,
गृह-कार्य भी पूरा कर लें।

डॉ. सुदेश रानी
हिंदी अध्यापिका
रामा विद्यालय सैक्टर-25, पंचकूला

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियों व उत्साही विद्यार्थियो! 'खेल-खेल में विज्ञान' शृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर विज्ञान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। विशेष, बात यह है कि इस शृंखला में अब तक प्रकाशित हो चुकी विज्ञान गतिविधियों का आँकड़ा 300 पार कर चुका है।

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक का उपयोग करना सीखा-

जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने खेल-खेल में विज्ञान की अवधारणा को नई दिशा देते हुए अपने कार्यशील विज्ञान मॉडल प्रस्तुत किए। इस अवसर पर विद्यार्थियों

को मॉडल तैयार करने से पहले उसकी रूपरेखा (सिनॉप्सिस) लिखने, आरेख बनाने व सुधार की संभावनाएँ तलाशने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता(आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) तकनीक का उपयोग करना सिखाया गया। नई तकनीक की सहायता से विद्यार्थियों ने अपने विचारों को बेहतर ढंग से व्यवस्थित किया और वैज्ञानिक मॉडलों को अधिक प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया। प्रदर्शनी में लगाए गए इन मॉडलों का अवलोकन शिक्षा अधिकारियों एवं गणमान्य अतिथियों ने किया और विद्यार्थियों की रचनात्मकता की सराहना की। इस गतिविधि के दौरान विद्यार्थियों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग में विशेष रुचि दिखाई और भविष्य में इसके माध्यम से और अधिक सीखने तथा लाभ उठाने की उत्सुकता भी व्यक्त की। इससे स्पष्ट हुआ कि नई तकनीक के प्रति विद्यार्थियों में जिज्ञासा और सीखने की भावना निरंतर बढ़ रही है।

2. नवोदित फलों व बीजों से की दोस्ती-

विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों ने प्रकृति से जुड़ने और फलों-बीजों को समझने के उद्देश्य से एक रोचक प्रकृति भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने आसपास उपलब्ध विभिन्न पौधों, फलों और बीजों को नज़दीक से देखा और उनके विकास तथा जीवन-चक्र के बारे में जानकारी प्राप्त की। विद्यार्थियों ने गेहूँ की बालियों, कद्दू के फल, शहतूत के छोटे-छोटे

फलों, लहसुन की कलियों, कटहल, सहजन फलियाँ तथा आम की कैरी जैसे अनेक फलों और बीजों को पहचानना सीखा। इस गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों ने जाना कि प्रकृति में बीज से पौधा, पौधे से फूल और फल बनने की प्रक्रिया किस प्रकार निरंतर चलती रहती है। इस प्रकार का प्रकृति भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ उन्हें पर्यावरण और प्रकृति के प्रति अधिक जागरूक बनाने वाला भी सिद्ध हुआ।

3. बीज एकत्र व संग्रह-संरक्षण करना सीखा-

प्रकृति अध्ययन गतिविधि के अंतर्गत विद्यार्थियों ने विद्यालय परिसर और आसपास के पेड़ों के नीचे बिखरी पड़ी फलियों को एकत्रित कर उनसे बीज निकालने और उन्हें सुरक्षित रखने की प्रक्रिया को समझा। इस दौरान विद्यार्थियों ने विशेष रूप से अमलतास,

सिरिस, अरंडी व अन्य पेड़ों की फलियों से बीज इकट्ठा किए और उन्हें सावधानीपूर्वक प्लास्टिक डिब्बियों में भरकर भविष्य के लिए संरक्षित किया। इस गतिविधि के माध्यम से उन्होंने इसे हॉबी के रूप में अपनाकर नर्सरी में पौधे उगाने और उनसे जुड़ी रोज़गार व आजीविका के अवसरों पर भी विचार किया। विद्यार्थियों ने प्रकृति के इस सरल,लेकिन महत्त्वपूर्ण कार्य को बड़े उत्साह से किया और जाना कि पेड़ों से गिरने वाले बीज भी भविष्य में हरियाली और नए जीवन का आधार बन सकते हैं।

4. बॉटल ब्रश फूल को नज़दीक से जाना-

विद्यालय प्रांगण में प्रकृति अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों ने आकर्षक लाल रंग के बॉटलब्रश पौधे के पुष्पों को नज़दीक से देखा और उनके बारे में रोचक जानकारी प्राप्त की। इस पौधे के फूल लंबे लाल गुच्छों के रूप में होते हैं, जिनकी बनावट बोतल साफ़ करने वाले ब्रश जैसी दिखाई देती है, इसी कारण इसे बॉटलब्रश कहा जाता है। मूल रूप से यह पौधा ऑस्ट्रेलिया का माना जाता है, लेकिन आज इसे सुंदर सजावटी पौधे के रूप में विद्यालयों, पार्कों और बगीचों में व्यापक रूप से लगाया जाता है। इसके चमकीले लाल फूल मधुमक्खियों और पक्षियों को भी आकर्षित करते हैं, जिससे पर्यावरण में जैव विविधता बढ़ती है। वास्तव में यह एक अकेला फूल नहीं होता, बल्कि अनेक छोटे-छोटे फूलों का एक घना पुष्प-समूह होता है, जिसमें लाल रंग के लंबे पुंकेसर बाहर की ओर निकलकर पूरे गुच्छे को ब्रश जैसा रूप दे देते हैं। विद्यार्थियों ने इन फूलों को स्पर्श कर उनकी बनावट और संरचना को समझा।

5. गुब्बारों से खेला स्थिर विद्युत का रोचक खेल-

विज्ञान अध्यापकों की कार्यशाला में 'खेल-खेल में विज्ञान' गतिविधि के अंतर्गत गुब्बारों के माध्यम से स्थिर विद्युत् के रोचक प्रयोग किए गए। अध्यापकों ने गुब्बारों को अपने कपड़ों या बालों पर रगड़कर उन्हें स्थिर विद्युत आवेश से आवेशित किया और फिर विभिन्न तरीकों से उनके बीच आकर्षण और प्रतिकर्षण का अनुभव किया। कभी गुब्बारों को हथेली के ऊपर संतुलित करके, तो कभी उन्हें एक-दूसरे के पास लाकर यह देखा गया कि समान आवेश होने पर वे एक-दूसरे को दूर धकेलते हैं, जबकि विपरीत प्रभाव होने पर आकर्षित होते हैं। इस सरल लेकिन रोचक गतिविधि ने यह संदेश दिया कि विज्ञान केवल पढ़ने का विषय ही नहीं, बल्कि प्रयोगों और खेल के माध्यम से आनंदपूर्वक समझा जाने वाला ज्ञान भी है। इस दौरान अध्यापकों ने भी अनुभव किया कि वैज्ञानिक सिद्धांतों को खिलौनों और सरल प्रयोगों की सहायता से बड़े ही रोचक ढंग से सिखाया जा सकता है।

6. देशज ज्ञान- कूचला (झाड़ू) बनाना जाना-

विद्यार्थियों को स्थानीय परंपरागत कौशल से परिचित कराने के उद्देश्य से उन्हें देशज ज्ञान के अंतर्गत कूचला (झाड़ू) बनाने की प्रक्रिया दिखाने के लिए एक कारीगर के पास ले जाया गया। इस दौरान उन्होंने जाना कि किस प्रकार जंगली खजूर की सूखी पत्तियों से हाथों से झाड़ू तैयार किया जाता है, जिसे स्थानीय भाषा में कूचला कहा जाता है। विद्यार्थियों ने झाड़ू बनाने की पूरी विधि के साथ-साथ उससे जुड़ी व्यावसायिक जानकारी भी प्राप्त की, जैसे- कच्चा माल कहाँ से मिलता है? एक झाड़ू बनाने में कितना खर्च आता है और वह बाज़ार में कितने मूल्य पर बिकती हैं आदि-आदि। यह गतिविधि प्रगतिशील किसान धर्मवीर कंबोज के सहयोग से सम्पन्न हुई और प्राप्त जानकारी को उन्होंने ग्रामीण ज्ञान रजिस्टर में भी दर्ज किया। इस अनुभव ने विद्यार्थियों को यह समझने का अवसर दिया कि पारंपरिक ज्ञान भी समय के साथ एक छोटे उद्योग और उद्यमिता के रूप में विकसित हो सकता है।

अच्छा तो आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो! आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ। आशा है, आप उन्हें भी पसंद करेंगे व करके देखेंगे।

साइंस मास्टर/ईएसएचएम
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दामला
खंड जगाधरी, यमुनानगर

मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

अदृश्य जीवों की रसोई (किण्वन का विज्ञान)

डॉ. मोनिका शर्मा

प्यारे बच्चो! क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि हमारी रसोई केवल गैस, बर्तनों और मसालों की जगह नहीं है? यह एक ऐसी जीवित प्रयोगशाला है, जहाँ हर दिन अनगिनत छोटे-छोटे वैज्ञानिक प्रयोग होते रहते हैं। यहाँ न माइक्रोस्कोप दिखाई देता है, न वैज्ञानिकों की सफेद लैब-कोट; फिर भी जीवन से जुड़े कई रहस्य यहीं समझ में आते हैं। जब मम्मी दूध उबालकर ठंडा करती हैं, उसमें एक चम्मच दही मिलाकर ढक देती हैं और सुबह हमें गाढ़ा दही खाने को मिलता है, तब वे अनजाने में ही जीव-विज्ञान और रसायन-विज्ञान दोनों के नियमों का उपयोग कर रही होती हैं।

रात भर बिना किसी हिलाए-डुलाए तरल दूध का गाढ़े दही में बदल जाना साधारण घटना नहीं है। यह परिवर्तन हमें बताता है कि प्रकृति में ऐसे जीव भी होते हैं, जिन्हें हम देख नहीं सकते, पर उनका काम स्पष्ट दिखाई देता है। रसोई में मौजूद यह अदृश्य संसार सूक्ष्म जीवों का संसार है, जो हमारे भोजन को केवल स्वादिष्ट ही नहीं बनाता, बल्कि उसे सुरक्षित और पचने योग्य भी बनाता है। यही प्रक्रिया किण्वन(Fermentation) कहलाती है और इसकी सबसे सरल व परिचित मिसाल है दही। दही का हर चम्मच हमें यह सिखाता है कि प्रकृति के सबसे छोटे जीव भी हमारे जीवन में बहुत बड़ा योगदान देते हैं। यही है मम्मी की प्रयोगशाला का अगला रहस्य।

दही जमना किण्वन का केवल एक उदाहरण है। वास्तव में मम्मी की रसोई में कई ऐसे काम होते हैं, जिनमें अदृश्य जीव चुपचाप काम करते रहते हैं और हमें पता भी नहीं चलता। हम अक्सर समझते हैं कि खाना केवल आग और मसालों से बनता है, पर सच्चाई यह है कि कई स्वाद ऐसे हैं, जो आग से नहीं, बल्कि जीवित सूक्ष्म जीवों से बनते हैं। वे इतने छोटे होते हैं कि हम उन्हें देख नहीं सकते, फिर भी वे हमारे भोजन का रंग, स्वाद, गंध और बनावट बदल देते हैं।

जब मम्मी इडली या डोसा का घोल रात भर ढककर रखती हैं, तो सुबह वह पहले से ज्यादा फूल जाता है और हल्का दिखाई देता है। आपने ध्यान दिया होगा कि ताज़ा पिसा हुआ घोल पतला और सपाट रहता है, लेकिन सुबह उसमें छोटे-छोटे छेद और बुलबुले दिखते हैं। ऐसा

इसलिए होता है क्योंकि हवा और दाल-चावल में पहले से मौजूद सूक्ष्म जीव सक्रिय हो जाते हैं। ये जीव घोल में मौजूद शर्करा को तोड़ते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड गैस बनाते हैं। यह गैस घोल के अंदर छोटे-छोटे बुलबुले बना देती है। यही बुलबुले इडली को स्पंजी और मुलायम बनाते हैं। यदि घोल को तुरंत पका दिया जाए, तो इडली कठोर और भारी बनेगी, क्योंकि किण्वन का समय ही नहीं मिला।

इसी प्रकार ब्रेड और केक में भी यही विज्ञान काम करता है। आटे में डाला गया यीस्ट (Yeast) भी एक सूक्ष्म जीव है, जो वास्तव में एक प्रकार की फंगस है। यह आटे की शर्करा को तोड़कर कार्बन डाइऑक्साइड गैस और थोड़ी मात्रा में अल्कोहल बनाता है। गैस आटे के अंदर फँस जाती है और आटा फूलकर हल्का हो जाता है। जब इसे ओवन या तंदूर में रखा जाता है, तो गर्मी गैस को और फैलाती है और ब्रेड मुलायम व छिद्रयुक्त बनती है। यदि यीस्ट न डाला जाए, तो ब्रेड एक सख्त, चपटी रोटी जैसी बन जाएगी। इस प्रकार बेकरी की दुकान भी वास्तव में सूक्ष्म जीवों की एक प्रयोगशाला है, जहाँ जीवित जीव हमारे भोजन की बनावट तय करते हैं।

अचार बनाते समय मम्मी नमक, मसाले और तेल डालकर सब्जियों या फलों को कुछ दिनों तक धूप में रखती हैं। धीरे-धीरे उसका स्वाद बदलने लगता है और उसमें खट्टापन आ जाता है। यहाँ भी किण्वन की प्रक्रिया चलती है। उपयोगी जीवाणु सब्जियों में मौजूद शर्करा को तोड़ते हैं और अम्ल बनाते हैं, जो भोजन को खराब होने से बचाते हैं। नमक का काम भी वैज्ञानिक है- यह हानिकारक जीवाणुओं की वृद्धि रोक देता है, जबकि लाभकारी जीवाणु सक्रिय रहते हैं। इस प्रकार अचार लंबे समय तक सुरक्षित रहता है। यह भोजन संरक्षण (Food Preservation) का एक प्राकृतिक और प्राचीन तरीका है, जिसे हमारे पूर्वज बिना किसी प्रयोगशाला के समझ गए थे।

आपने होली पर कांजी ज़रूर पी होगी- काले गाजर या चुकंदर से बनने वाला खट्टा पेय। कुछ दिनों तक धूप में रखने पर उसका स्वाद बदल जाता है। यह भी लैक्टिक अम्ल किण्वन का उदाहरण है। इसी प्रकार ढोकला का घोल भी कुछ समय बाद फूल जाता है और पकने पर बहुत नरम बनता है। दक्षिण भारत में अप्पम, उत्तर भारत में भटूरे का आटा और कई पारंपरिक व्यंजन इसी प्रक्रिया से स्वादिष्ट बनते हैं। दरअसल किण्वन भोजन को केवल स्वादिष्ट ही नहीं बनाता, बल्कि उसे पचाने में भी आसान बना देता है। सूक्ष्म जीव भोजन के जटिल अणुओं को छोटे अणुओं में तोड़ देते हैं। इससे हमारा पाचन-तंत्र कम मेहनत करता है। कई विटामिन, विशेषकर विटामिन-बी समूह, किण्वन के दौरान बनते हैं। इसीलिए दही, इडली या ढोकला खाने के बाद पेट हल्का महसूस होता है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि मम्मी जब ऐसे खाद्य पदार्थ बनाती हैं, तो वे अनजाने में कुछ नियमों का पालन करती हैं। वे बर्तन को साफ रखती हैं, घोल को ढककर रखती हैं, बहुत ठंडी जगह पर नहीं रखतीं और बहुत ज्यादा गरम भी नहीं होने देतीं। वास्तव में वे सूक्ष्म जीवों के लिए सही वातावरण बना रही होती हैं- न ज्यादा ठंड, न ज्यादा गर्मी, न गंदगी। यदि बर्तन गंदा हो या पानी अशुद्ध हो, तो गलत जीवाणु पनप सकते हैं और भोजन खराब हो सकता है। इसलिए स्वच्छता भी किण्वन का महत्त्वपूर्ण भाग है।

इस प्रकार हम समझते हैं कि रसोई केवल खाना पकाने की जगह नहीं है। यहाँ हर दिन सूक्ष्म जीव हमारे लिए काम करते हैं- कभी दही बनाकर, कभी इडली को नरम बनाकर, कभी ब्रेड को मुलायम बनाकर और कभी अचार को सुरक्षित रखकर। हम उन्हें देख नहीं सकते, फिर भी वे हमारे भोजन का स्वाद, बनावट और पोषण तय करते हैं। मम्मी भले ही माइक्रोबायोलॉजी शब्द न जानती हों, लेकिन वे रोज़ अदृश्य जीवों के साथ मिलकर काम करती हैं और उनके व्यवहार को अनुभव से समझती हैं।

बीआरपी (साइंस) मोरनी हिल्स
जिला- पंचकूला, हरियाणा

विद्यालय एक, पारियाँ तीन, तीनों में उत्कृष्टता

कमालपुर स्कूल का कमाल

सत्यवीर नाहड़िया

विद्यालय एवं समाज परस्पर पूरक होते हैं। विद्यालय को लघु समाज भी कहा जाता है। कुछ ही प्रतिनिधि ऐसे सौभाग्यशाली होते हैं, जो किसी विद्यालय में विद्यार्थी, शिक्षक तथा मुखिया की तीन-तीन भूमिका निभाते हैं। इनमें से वे प्रतिनिधि तो बेहद दुर्लभ व्यक्तित्व के धनी होते हैं, जो इन तीनों भूमिकाओं में कुछ लीक से हटकर नाम कमाते हैं। ऐसे ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं डॉ. हरिप्रकाश यादव, जो वर्तमान में रेवाड़ी जिले के गाँव बोड़िया कमालपुर स्थित पीएमश्री शहीद हरलाल राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में बतौर प्राचार्य सेवारत हैं। इस विद्यालय के निकटवर्ती गाँव जाड़रा के आर्य समाज परिवार में जन्मे तथा रेवाड़ी में रह रहे डॉ. यादव का इस विद्यालय से करीब आधी सदी का नाता है, जिसके चलते वह इसकी बहुआयामी यात्रा के सहयात्री व साक्षी कहे जा सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि एक मेधावी छात्र हरिप्रकाश के तौर पर 1987 में तत्कालीन राजकीय उच्च विद्यालय बोड़िया कमालपुर से दसवीं की परीक्षा उत्कृष्टता के साथ उत्तीर्ण करने के अलावा विद्यालय की एनसीसी इकाई के बेस्ट कैडेट भी रहे। इतना ही नहीं, इस छात्रकाल के दौरान उन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। आगे चलकर वर्ष 2004 से वर्ष 2016 तक उन्हें इसी विद्यालय में जीव-विज्ञान प्राध्यापक के तौर पर नई भूमिका निभाने का अवसर मिला, जिसमें उन्होंने मेडिकल संकाय में रेवाड़ी जिले में सर्वाधिक छात्र संख्या देने के अलावा करीब एक दर्जन विद्यार्थियों को नीट जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में उत्कृष्ट रैंक दिलवाकर नए आयाम रचे। इन विद्यार्थियों में डॉ. नीरज यादव (चाँदपुर की ढाणी), डॉ. हेमलता (बेरली), डॉ. सत्येंद्र (मांढैया), डॉ. दीपक (जाड़रा), डॉ. अनुप्रिया (हालुहेड़ा), डॉ. निशा (बूढ़पुर), डॉ. रामप्रताप (जाजूका), डॉ. अजय वर्मा, डॉ. महेश (जाड़रा), डॉ. अनुपमा (मूसेपुर) तथा डॉ. अंजू (बीकेपुर) के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस अध्यापन काल के दौरान उनके विद्यार्थियों ने राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी, सांस्कृतिक उत्सव तथा अन्य प्रतियोगिताओं में भी उनका तथा विद्यालय का नाम रोशन किया। इन तमाम शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर उन्हें प्रदेश-सरकार द्वारा वर्ष 2021 में राज्य शिक्षक पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

आगे चलकर जून, 2022 से उन्होंने इसी विद्यालय में बतौर प्राचार्य कार्यभार सँभालकर इस विद्यालय को पीएमश्री का दर्जा दिलवाने में अपने समर्पित शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के टीमवर्क से निर्णायक भूमिका निभाई। उनके निरंतर कुशल मार्गदर्शन में विद्यालय में आज 15 विभिन्न विषयों की प्रयोगशालाएँ वर्किंग मोड पर हैं तथा शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा खेलकूद के क्षेत्र में विद्यालय ने निरंतर जिला तथा राज्य स्तर पर अपनी विशिष्ट उपलब्धि दर्ज कराई है। निरंतर उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देते हुए विद्यालय ने हर क्षेत्र में लीक से हटकर रचनात्मकता दिखाते हुए नए आयाम रचे हैं, जिसके चलते रेवाड़ी शहर से ग्रामीण क्षेत्र के इस विद्यालय में प्रतिदिन सैकड़ों विद्यार्थी पढ़ने आते हैं।

शिक्षा विभाग की रंगोत्सव प्रतियोगिता में राज्य स्तर तक जिले का प्रतिनिधित्व कर चुके डॉ. यादव रागिनी गायन में विशेष रुचि रखते हैं। वे मानते हैं कि हर बच्चे में प्रतिभा होती है, उसे पहचानकर उचित मार्गदर्शन से मंच प्रदान करवाया जा सकता है, जिसके लिए वे अपनी टीम के साथ निरंतर प्रयासरत रहते हैं।

एक मेधावी छात्र, प्रेरक प्राध्यापक की सफल पारी के बाद अब वे कुशल प्रशासक एवं नवाचारी प्राचार्य की भूमिका में साधनारत हैं, जिसमें अभी उनका सर्वश्रेष्ठ आना बाकी है।

प्राचार्य
रावमा विद्यालय सीहा,रेवाड़ी, हरियाणा

2026

मई-जून माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 मई- बुद्ध पूर्णिमा
3 मई- विश्व हास्य दिवस
7 मई- रवींद्रनाथ टैगोर जयंती
8 मई- विश्व रेडक्रॉस दिवस
10 मई- मातृ दिवस
23 मई- गुरु गोरक्षनाथ स्मृति दिवस
24 मई- महर्षि कश्यप जयंती
27 मई- ईद-उल-जुहा (बकरीद)
31 मई- मातेश्वरी देवी अहिल्याबाई होल्कर जयंती
5 जून- विश्व पर्यावरण दिवस
9 जून- वीर बंदा बैरागी बलिदान दिवस
14 जून- विश्व रक्तदाता दिवस
17 जून- महाराणा प्रताप जयंती
18 जून- गुरु अर्जन देव शहीदी दिवस
21 जून- अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
26 जून- मुहर्रम
29 जून- संत कबीर दास जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Mother is the Foundation of Indian Culture, Sensitivity, and Divine Consciousness of Values

Mother is not merely a form of address; rather, she is that divine essence of creation in which an ocean of affection, compassion, love, sacrifice, penance, and boundless dedication resides. A mother is the sacred power in whose lap a human being receives the very first lessons of life and values, and under whose protective shelter one learns love, morality, sensitivity, and humanity. In Indian culture, a mother is regarded as the embodiment of the divine, and the eternal message of "Matru Devo Bhava" (Mother is equivalent to God) has always been the soul of our civilization.

Mother's personality is the finest symbol of sacrifice, patience, tolerance, and selfless love. Even while enduring hardships herself, a mother constantly strives to illuminate the life of her children with happiness, prosperity, and a bright future. Her entire life remains devoted to preserving the happiness, values, and social dignity of the family.

A mother is like a sacred banyan tree under whose shade the garden of the family always flourishes. A mother's prayers serve as the greatest shield of protection in a child's life, and her blessings guide a person towards hope and light even in the darkest moments of struggle. If there exists any relationship in this world that is truly selfless and pure, it is undoubtedly the love of a mother.

In today's era of materialism and hectic lifestyles, family values and emotional relationships are gradually declining. In many places, the neglect of parents, especially elderly mothers, has become a deeply painful and concerning issue for society. This reflects the erosion of our cultural consciousness and human sensitivity. He emphasized that the mother who

sacrificed her own desires to shape the life of her children deserves the greatest respect, affection, and support in her old age.

He appealed to the youth to stay connected with Indian culture, family values, and moral ideals rather than blindly following westernized lifestyles. Respect, service, and gratitude towards parents, especially mothers, should become the highest virtue in life. Serving one's mother is not merely a social responsibility but also a spiritual practice and one of the greatest virtues of human life.

A home where mothers are respected is always filled with love, peace, prosperity, and positive energy. A mother is the soul of the family, the axis of values, and the first school of life. Her smile transforms a house into heaven, and the blessings in her eyes fill the lives of her children with success and good fortune.

To strengthen family harmony, human sensitivity, and cultural values in society, every individual must nurture feelings of reverence, respect, and emotional attachment towards their mother. We should take time out from our busy lives to understand our mothers' emotions, care for their health, and make sincere efforts to fill their lives with dignity, affection, and happiness.

In the end, an emotional appeal to all citizens, saying that true heaven resides at the feet of a mother. A mother's blessings are life's most precious treasure and the greatest source of strength. We should never do anything in life that hurts a mother's heart. Service, respect, and love towards one's mother are the true essence of Indian culture and the highest ideal of humanity.

Mukesh Kumar
TGT English
Govt Model Sanskriti Senior Secondary School Bikaner, Rewari

Ode to the Sparrow

O tiny sentinel of vanished time,
You survived the fall of titans, fierce and grand;
When dinosaurs dissolved in dust and slime,
You claimed the morning with a song so bland.
From Mesopotamia's silt to Harappa's gate,
You hopped beside the first of human tread;
A witness to our dawn, our rise, our fate,
Upon our golden grains, you were daily fed.
O ancient muse! in feathers brown and grey,
You are the pulse that kept the void away.

But hark! The silicon clouds now veil the blue,
And toxic waves of towers pierce your breast;
Five-G (5G) webs have stolen the morning dew,
And concrete tombs leave you no place to rest.
While kings of oil in Tehran and the West,
Play chess with missiles, deaf to your soft plea;
They burn the world to build a hollow nest,
And choke the winds that once were wild and free.
How poor are we, in palaces of glass,
To watch your sacred spirit slowly pass?

O Manoj! Let your pen be now a shield,
From Savitri Sadan, let the clarion call arise;
Till every heart and every barren field,
Restores the music to the silent skies.
Not in machines, but in your chirping grace,
Does 'Natural Intelligence' find its holy home;
Without your song, the entire human race,
Is but a ghost beneath a leaden dome.
Rise, little bird! and claim your ancient throne,
For in your life, our survival is best known.

Manoj Vashishtha
Educationist
Government Senior Secondary School
Rewari, Haryana

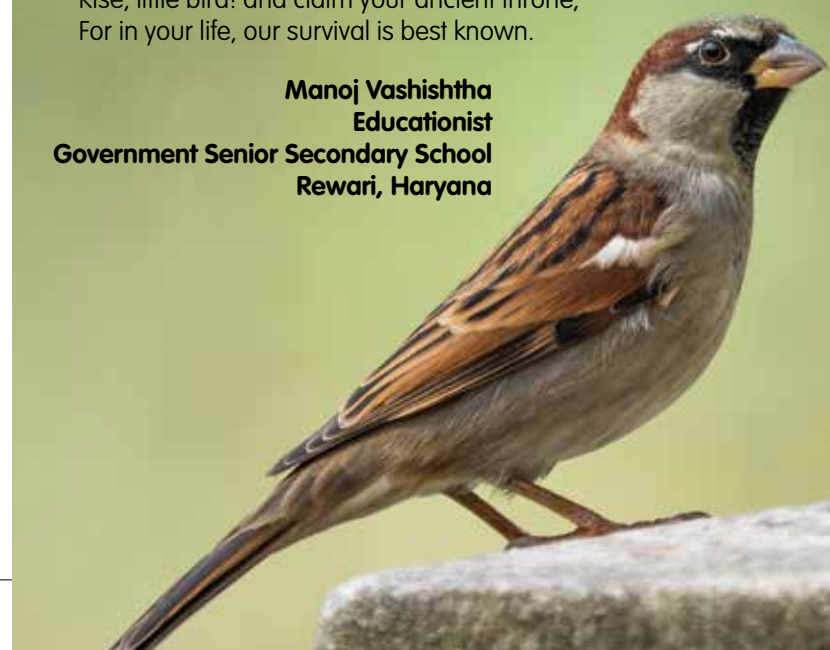

Teacher–Student Bond: The Soul of True Education

"A child may forget what we teach, but will never forget how we made them feel."

In today's time, education is not only about completing syllabus or achieving results. The real strength of a school lies in the bond between teacher and student. A teacher is not just a subject expert, but a guide, a protector, and at times, a parent within the school.

It is important for every teacher to reflect on certain values that form the foundation of true teaching:

- A teacher should always remember that students are the very reason for our existence in this profession. Our respect, identity, and salary are directly connected to them.
- Every child in the classroom should be treated with care and dignity, just like our own child. Harsh words, insults, or physical punishment can break a child's confidence forever.
- A teacher's words have deep impact. Polite language and patience should be our strength, even when a child makes mistakes.

- Instead of reacting with anger, a teacher should try to understand the reason behind a child's behaviour. Sometimes, a child needs support, not scolding.
- Time given in the classroom should be completely devoted to students. Gossiping, personal work, or negligence reduces the quality of education and trust.
- A strong bond is built when a teacher becomes approachable and emotionally available. A child should feel safe to share problems without fear.
- Discipline is important, but it should come through guidance and example, not fear. Children learn more from what we do than what we say.
- A teacher should take pride in the growth of every child, not just toppers. Every student deserves attention and encouragement.
- When a teacher shows genuine love and concern, students naturally develop respect, interest in studies, and better behaviour.
- Teaching is not just a duty, it is a responsibility towards shaping future citizens. Our attitude today will reflect in the society tomorrow.

In conclusion, the classroom should not only be a place of learning, but a place where children feel valued, respected, and understood. When a teacher starts seeing students as their own, the entire environment of the school transforms positively.

Anshu
Principal
GSSS Saketri, Panchkula

Success Beyond Scores

Dr. Himanshu Garg

In the modern era of constant competition and growing expectations, students often face numerous academic, emotional, and personal challenges that create stress, pressure, and self-doubt in their everyday lives. Pressure of studies, competition, family expectations and fear of failure often affect their mental health, making even small setbacks feel overwhelming.

Many students have personally shared that they hide their preparation for competitive exams, not due to lack of effort, but fear of judgment. When others succeed in their first attempt, they think "What if I don't?" becomes overwhelming. They fear facing family, relatives and society. It is good to stay silent about your plans and focus on execution. But when silence comes from fear and pressure, it becomes a burden. This hidden stress slowly weakens confidence and in some tragic cases, has even cost lives. No result is greater than life. No comparison is worth losing peace. Every student has their own journey, their own timing and their own path to success. Therefore, it has become very important to build mental strength among students. Mental strength does not mean avoiding problems, but facing them with confidence and a positive mindset. A mentally strong student can handle failure, stay calm in difficult situations and move forward with hope.

To stay mentally strong during difficult times, students can follow these simple, effective and practical strategies:

» **Accept failure as a learning opportunity**

Failures should not discourage students. Instead, they should be seen as valuable experiences that teach important life lessons and help in self-improvement.

» **Stay physically active**

Regular physical activities like yoga, walking, or exercise help reduce stress, improve mood, and keep the mind fresh and energetic.

» **Practice regular meditation to stay calm and focused**

Meditation helps students relax their minds, control negative thoughts, and improve concentration during stressful situations.

» **Practice deep breathing daily**

Deep breathing exercises help in reducing anxiety, improving emotional balance, and increasing focus and mental clarity.

» **Spend some time daily in nature**

Being close to nature refreshes the mind, brings positivity, and helps students feel peaceful and relaxed.

» **Take small breaks and manage time well**

Proper time management and short study breaks prevent mental exhaustion and improve productivity.

» **Avoid unnecessary comparisons**

Comparing oneself with others can create stress and lower confidence. Students should focus on their own growth and abilities.

» **Practice positive self-talk and share feelings when needed**

Positive thinking builds confidence, and discussing problems with teachers, parents, or family members can provide emotional support and guidance.

Success

A girl once complained to her teacher, "I always fail in small things. I feel like I'm not good enough." The teacher quietly broke a pencil into two pieces and asked, "Do you think this pencil is useless now?" The girl replied, "Yes, it's broken." The teacher then sharpened both pieces carefully and said, "Now look at it again. Instead of one, it has become two pencils. Even after breaking, it can still be used efficiently." She smiled and explained, "Life is very similar to this pencil. Sometimes situations, failures or disappointments may break you emotionally, but that does not mean your journey ends there. Difficult moments often make people wiser, stronger, and more capable than before."

The girl understood that failures are not meant to destroy us, they shape our personality and teach us resilience. Every challenge carries an opportunity to grow and rebuild ourselves with greater strength and confidence. A person who learns from setbacks becomes mentally stronger than someone who has never failed.

Strong minds create bright futures. Tough times are temporary, but the strength we build during those moments stays with us forever. Changing the mindset from "I failed" to "I learned" can completely transform life. Failure is not the opposite of success; it is an important part of success itself. With positivity, patience, and self-belief, students can overcome every obstacle. It is our collective responsibility to nurture not only academically successful students, but also emotionally strong, confident and resilient individuals who can face life with courage.

Assistant Professor
Dept. of Computer Science
Govt. College for Women, Jind

While We Are Still Here

We say we'll enjoy it someday soon,
But little do we know that days move fast like a short tune.
Don't think too much,
We don't know that now means this and us.

This time we have, won't always stay,
It slowly slips away.
One day, we'll wish we stayed right here,
Before these moments disappear.

So, take this now, don't let it go,
The years move faster than we know.
Because the days we rush right through,
Are the ones we'll end up missing, too.

One day we'll have the life we chased,
So busy we can't slow our pace.
We'll look back at these days,
And wish we hadn't looked away.
We would want life to be
like it used to be.
We would want to enjoy with our friends like we used to do.

But, while we are still here, let's not rewind,
Leave old worries far behind.
Enjoy this moment, hold it true,
The present is the gift we're living through.

Dear reader,
Remember that tomorrow isn't promised.
So, share a smile,
Stop waiting for a perfect time.

Saira Singh
8th grade
Wisdom World School, Kurukshetra

The Tree That Waited

Anita Thakur

Loss does not always announce itself. Sometimes, it stands in your yard for years—and then, one day, it is simply not there.

This spring, the last old amla tree in my yard was gone.

It had stood there longer than any of us—a quiet witness to seasons we had already forgotten.

It stood there long before hybrids arrived, stubbornly desi, its berries small, fibrous, and unapologetically intense. Villagers passed it by, chasing bigger, shinier fruit. But I knew better. This tree carried an ancient language of taste—sour at first bite, then bitter, astringent, a flicker of pungency, and finally a soft sweetness that lingered like a memory you could not place.

Five tastes, the elders said. Paanchras, ek phal mein.

Every year, it gave abundantly.

The years of giving

I learned its moods slowly. Its sharp fruit became chutneys that woke the tongue, pickles that matured like old wisdom, powders that replaced tomatoes, and chyawanprash that carried the warmth of winter in every spoon.

Some winters, we sat beneath it and cooked—reviving amble thaleri khichdi. Rice and lentils bubbled gently over a small fire, laughter drifting upward, the old tree standing like a silent host, holding the moment together.

It never asked for much. No fertilizer, no care. Just soil, sky, and time.

A kingdom in branches

But the tree was never just mine.

It belonged to the sky.

Each morning, a pair of plum-headed parakeets arrived before I did, their sharp calls breaking the quiet as they tested the fruit with impatient bites. I would stand below, pretending to inspect the ground, while they watched me with equal suspicion.

One winter afternoon, I sat beneath the tree with a handful of freshly fallen amla. I bit into one—too quickly, too confidently—and the sourness struck sharp enough to make me wince.

My elderly aunt, watching from the charpai, laughed softly.

"Wait," she said. "Don't rush it."

She asked me to taste it again, slowly this time.

"Sour first, then bitter… then something drying… then heat… and at the end—there, do you feel it? Sweet."

I nodded, though I wasn't sure at first. But she smiled, certain.

"Paanchras," she said. "All of them. That's why this tree is never ordinary."

Later, as if on cue, a white-throated kingfisher landed on a low branch, still as a thought, before diving out of sight.

The tree held all of us in that moment—the lesson, the laughter, the waiting.

The year of silence

Then came the winter when it did not fruit.

The fruits appeared but stayed small, hesitant, then fell prematurely. Spring arrived, but no leaves followed. The delicate, feather-like foliage that once shimmered in morning light did not return.

The first time I knew something was wrong was not when the fruit fell—but when my helper reached up and snapped a twig.

It broke too easily.

No resistance, no quiet spring of life inside it. Just a dry, hollow sound.

I stood there longer than I needed to, the small piece of wood still in my hand, as if I had broken something I could not repair.

Birds came out of habit, but something essential had already begun to fade.

Then the cracks appeared. Deep gashes along the trunk. Darkened branches touched by fungus.

And finally, the words I could not bear:

The tree is gone.

The fall

They cut it down without ceremony.

No storm, no drama. Just steady blows until the old guardian gave way. Inside, the wood glowed deep red—beautiful, but brittle. Life had left it long before the axe arrived.

Within minutes, the skyline changed. The crown of Vayu Kutir was gone.

That evening, the silence felt heavier than usual.

What remains

But perhaps trees do not leave the way we think they do.

All these years, not once had I seen a sapling rise from its fallen fruit. The earth remained still, as if the tree chose only to give, never to return.

But this past monsoon was different.

The yard was suddenly filled with tiny amla saplings—everywhere. Between stones, along paths, in forgotten corners. I noticed them, even protected a few, but without urgency. I did not yet understand what they were offering.

Through the winter, I cleared them one by one. Some I stepped on without noticing.

I could not imagine needing them. I could not imagine a world without the old tree.

Then, when I finally knew the tree was gone, something drew my eyes back to the ground.

Hidden beneath a marigold bush, one sapling had survived.

Just one.

As if it had chosen to remain unseen.

As if it had waited.

The afterlife of a tree

The trunk now rests in the yard. I will shape it into a table.

And the sapling—I will let it be.

Some losses arrive quietly.

This time, I choose not to miss what remains.

Freelance Poet and Writer
anitathak@gmail.com

Tears of a Clown

Cold dagger through his heart,
Tearing all his dreams apart.
What revenge do they weave?
He has no known enemies.

Is it some past life debt left to pay?
Surely there must be a better way,
Than to torture an innocent soul.
Fate is a wretch, a spiteful ghoul.

The new circus was in town,
Everyone flocked to see the clown,
Who won't let anyone down.
Peals of laughter went on and on.

They enjoyed the show,
But did anyone know?
The makeup had a smear,
The sobs he let no one hear.

Powdered red cheeks,
A mask white-streaked,
Was noticed by no one,
The tears of the clown.

Tears of a clown,
Life's circus let him down.
He bared his life and soul.
For pleasures big and small.

Now where must he go?
And whom should he please?
When life's thrown him around,
Like a dangerous, deadly trapeze.

Friends wait with a safety net,
But wait, he has not fallen yet!
Life's just jerked him around.
They can't let him fall down.

How can he be happy?
If it's not in his destiny.
Unexposed are his soul's raw rafters,
Like the ribs of an old shipwreck.

Sorrow, silently, submerged, lies supine.
Trapping innocent fish in its confines.
The lair of the sea serpent lies,
Hidden deep from prying eyes.

Just like the alone, unknown,
Tears of a clown.

Dr. Deviyani Singh
drdeviyanisingh@gmail.com

The Pachmarhi Chronicle: From Nature's Pedagogy to the Genesis of Leadership

1. Proem: From the Laboratory to the Grand Canopy of Nature

The true essence of life does not reside within the sterile, inanimate pages of a textbook, but thrives upon the vibrant, winding trails of lived experience. As a scholar of Chemistry, I am well aware that the synthesis of diverse elements begets new creation. However, when I was appointed as the 'Escort Lead' for the Haryana State Educational Delegation during the National Adventurous and Plateau Nature Study Camp at Pachmarhi (Oct 23–29, 2024), it transcended a mere official assignment. It became a spiritual and philosophical odyssey. Amidst the cacophony of Hazrat Nizamuddin Railway Station, witnessing the 'amalgam' of exhilaration and trepidation upon the faces of those adolescent students, I perceived an impending transformation—a realization that the next 7 days would fundamentally alter the very equations of their lives.

2. The Clarion Call: Dreaming Upon the Rails

The journey commencing from New Delhi remains etched vividly within the corridors of my memory. The rhythmic cadence of the train felt like the footsteps of the future. Within the confines of the railway coupes, as we constructed a bridge of dialogue, the infinite dreams and innocent curiosities glimmering in the students' eyes stirred me to my core. Through the melodic verses of Antakshari, bursts of exuberant laughter, and the intimate communion of shared meals, the walls of unfamiliarity crumbled. As a mentor, I realized that an 'emotional resonance' with children is the primary and indispensable threshold of true education.

3. Pachmarhi: The Ethereal Splendor of the Queen of Satpura

The moment our footsteps graced the sacred, verdant soil of Madhya Pradesh's solitary hill station, Nature welcomed us with outstretched arms. The velvet valleys, the murmur of perennial springs, and the air infused with medicinal purity caused all physical and mental exhaustion to undergo a sudden 'evaporation.' Every tree, every crag, and every waterfall appeared as a living scripture, articulating the profound philosophy of life without the need for a single spoken word.

4. The Heptad of Discovery: Nature's Peerless Masterpieces

Our pilgrimage revolved around 7 pivotal epicenters, serving as living fonts of wonder and wisdom:

Jatashankar Mahadev: A celestial abode of Lord Shiva ensconced within the abyssal depths of caves, where Nature herself performs the ritual libation (Jalabhishek). Here, students internalize geological mysteries with profound reverence.

Bee Falls: A cascading torrent of milky-white water where students, drenched in delight, proclaimed that true bliss is found not in material luxuries but in the lap of the wilderness.

Pandav Caves: A historical ensemble of five grottoes that anchored the students to sagas of antiquity, where endurance became synonymous with strength.

Dhupgarh and Priyadarshini

Point: As the daughters of the Aravallis (our Haryana students) beheld the golden aura of the setting sun from the apex of the Satpuras, it seemed as though the Creator had unveiled His finest masterpiece upon the canvas of the sky. Looking down into the depths from Rector Point fostered a newfound 'altitude of thought' and confidence.

5. The Ordeal of Valor: A Grand Ascent from Fear to Fortitude

Chemistry instructs us that elements achieve their most refined form only under 'High Pressure.' Adventurous endeavors—rock climbing, trekking, and rappelling—activated the dormant element of 'Self-Confidence' within the students. That moment remains inscribed in golden letters in my memory: when a young boy, previously paralyzed by heights, reached the rugged summit and cried out with a triumphant smile—"Ma'am, look! I can do it!" That singular instant shattered his old psychological equations and birthed a new self-awareness. That clarion call of victory was the most profound 'Success Product' of this entire voyage.

6. The Cultural Confluence: Fragrances of Haryana and Melodies of Emotion

Within the perimeter of the flickering campfire, as the folk arts of Haryana's various districts were showcased, the chilly night of Pachmarhi grew warm with cultural fervor. When a young girl recited with poignant depth—"Success belongs to those whose dreams possess the breath of life..."—even the most stoic hearts were moved to tears. It was a transcendent moment, rising above geographical boundaries into a communion of human sentiment and the sacred bond between Guru and disciple.

7. Epilogue: The Tearful Parting and the Eternal Viaticum

7 days vanished in the blink of an eye, yet the memories they bequeathed are immortal. As the train finally halted at Mahendergarh station and the children embraced me with heavy hearts and moist eyes, whispering—"Thank you, Ma'am! This was the most precious experience of my life"—all my exhaustion was transmuted into a sublime sense of fulfillment. As an Escort Lead, I learned that a teacher's true achievement is not their academic title, but the 'New Confidence' reflecting in their students' eyes.

Final Reflections: These 7 nights and days in Pachmarhi shall remain forever preserved within the 'Retort' of my soul. This journey reaffirmed that authentic education is found not within the four walls of a school, but upon the arduous trails that lead us to an encounter with our own 'Self.' This memoir is dedicated to all those young pioneers who introduced me to a more patient, sensitive, and vibrant 'Neetu Yadav.'For me, the National Adventurous and Plateau Nature Study Camp of Pachmarhi will forever endure as a timeless and cherished experience of my life.

Neetu Yadav
Lecturer in Chemistry
PM Shri GSSS Nayan
Mahendergarh, Haryana

World Day Against Child Labour

World Day Against Child Labour is observed every year on 12 June to raise awareness about the serious issue of child labour and to promote efforts to eliminate it across the world. The day highlights the rights of children to education, health, safety, and a happy childhood. It reminds society that children are meant to learn, play, and grow in a healthy environment, not to work under difficult and dangerous conditions. Governments, schools, organizations, and communities around the world organize awareness campaigns, seminars, rallies, and educational programs to spread knowledge about the harmful effects of child labour.

The day was launched in 2002 by the International Labour Organization to focus global attention on the problem of child labour and the need to stop it. Since then, World Day Against Child Labour has become an important international event that encourages people and governments to work together for the protection of children's rights.

Child labour refers to the employment of children in work that deprives them of their childhood, education, health, and dignity. It includes any work that is mentally, physically, socially, or morally harmful to children. Many children are forced to work in factories, farms, mines, hotels, shops, homes, and construction sites. Some children also work as domestic helpers, ragpickers, street vendors, or laborers. In many cases, they work long hours for very little money and under unsafe conditions.

Poverty is one of the major causes of child labour. Many poor families depend on the income earned by their children to survive. Due to lack of money, parents are unable to send their children to school and instead force them to work. Unemployment, illiteracy, social inequality, and lack of awareness also contribute to child labour. In some regions, children are trafficked or forced into labour by criminal groups and exploitative employers.

Child labour has harmful effects on children's physical and mental development. Children who work from a young age often suffer from exhaustion, injuries, malnutrition, and diseases. They may be exposed to dangerous chemicals, heavy machinery, or unsafe environments that affect their health permanently. Working children are also deprived of proper education and social development. Without education, they remain trapped in poverty and struggle to improve their future.

Education is one of the most effective ways to eliminate child labour. Schools provide children with knowledge, skills, confidence, and opportunities for a better future. When children receive education, they are more likely to become independent and successful adults. Governments and organizations around the world are working to ensure free and compulsory education for all children. Midday meal schemes, scholarships, and free textbooks help encourage poor families to send their children to school.

Child labour also affects society and the economy negatively. A country cannot progress properly if its children are denied education and forced into labour. Children are the future of the nation, and their development is essential for social and economic growth. Child labour creates a cycle of poverty where children grow up without education and later remain stuck in low-paying jobs. Eliminating child labour can help create a more educated, skilled, and productive society.

There are different forms of child

labour, and some are extremely dangerous. Children working in mines, fireworks factories, chemical industries, or construction sites face serious risks to their lives. Some children are forced into illegal activities such as drug trafficking, begging, or bonded labour. Others become victims of human trafficking and exploitation. Such practices violate basic human rights and should be strictly prohibited.

Governments around the world have introduced laws to prevent child labour and protect children's rights. In India, laws such as the Child Labour (Prohibition and Regulation) Act prohibit the employment of children in hazardous occupations. The Right to Education Act ensures free education for children between the ages of six and fourteen. Various government programs and child welfare organizations work to rescue child labourers and provide them with education and rehabilitation.

International organizations also play an important role in fighting child labour. The United Nations, the International Labour Organization, and many non-governmental organizations conduct awareness campaigns and support projects for child protection and education. They work with governments, schools, and communities to improve the lives of vulnerable children.

World Day Against Child Labour encourages people to understand that child labour is not only a legal issue but also a moral and social problem. Society must support children and provide them with opportunities to live safely and happily. Employers should avoid hiring children and follow labour laws responsibly. Consumers can also help by refusing to buy products made through child labour.

Awareness among parents and communities is very important in preventing child labour. Many parents do not understand the long-term benefits of education and continue to send their children to work. Educational campaigns can help people realize that education is the key to breaking the cycle of poverty. Communities should support poor families and encourage children to attend school regularly.

Teachers and schools have a significant role in identifying children who are at risk of dropping out and entering labour. By creating a supportive and motivating learning environment, schools can help children continue their education. Governments should also improve the quality of education and provide better facilities in rural and poor areas.

Media and technology can also help spread awareness about child labour. Television programs, social media campaigns, documentaries, and newspaper articles educate people about the suffering faced by working children. Public awareness encourages collective action against exploitation and injustice.

World Day Against Child Labour is also an opportunity to celebrate progress made in reducing child labour worldwide. Over the years, many countries have succeeded in decreasing the number of working children through better laws, education systems, and social welfare programs. However, millions of children are still affected by child labour, especially in developing countries. Continuous efforts are needed to completely eliminate this problem.

Children deserve love, care, education, and protection. They should spend their time learning, playing, and developing their talents rather than struggling to earn money. Every child has dreams and ambitions that should be nurtured and supported. Society must work together to create a world where every child can enjoy a safe and happy childhood.

In conclusion, World Day Against Child Labour is an important occasion that raises awareness about the exploitation of children and the need to protect their rights. Child labour deprives children of education, health, safety, and happiness. Poverty, illiteracy, and social inequality are major causes of this problem. Governments, organizations, schools, and individuals must work together to eliminate child labour and ensure quality education for all children. By supporting children's rights and spreading awareness, society can help create a brighter and more hopeful future for every child.

Father's Day

Father's Day is a special occasion celebrated across the world to honor fathers and father figures for their love, sacrifice, guidance, and support. It is a day dedicated to appreciating the important role that fathers play in the family and society. Every year, Father's Day is celebrated on different dates in different countries, but in many nations, including India, the United States, and the United Kingdom, it is observed on the third Sunday of June. The day provides an opportunity for children and families to express gratitude and affection toward their fathers through gifts, cards, meals, and heartfelt words.

The importance of a father in a child's life cannot be measured easily. A father is often seen as the protector, provider, mentor, and guide of the family. From childhood to adulthood, fathers support their children emotionally, financially, and morally. They teach discipline, responsibility, honesty, and courage. Many fathers work tirelessly to ensure that their families live comfortably and happily. Even though fathers may not always express their emotions openly, their actions reveal deep love and care for their children.

The history of Father's Day dates back to the early twentieth century. The modern celebration is believed to have started in the United States. A woman named Sonora Smart Dodd played a major role in establishing Father's Day. Inspired by Mother's Day celebrations, she wanted to honor her father, who had raised six children alone after the death of his wife. The first Father's Day celebration took place in Spokane, Washington, in 1910. Over time, the idea gained popularity, and many countries adopted the celebration. In 1972, Father's Day officially became a national holiday in the United States.

Father's Day is not only about giving gifts or organizing parties; it is mainly about showing respect and appreciation. Fathers often sacrifice their personal comforts and dreams for the welfare of their children. They encourage their children to achieve success and stand by them during difficult times. A father's advice can shape a child's future and build confidence. Children learn valuable life lessons from observing their fathers' behavior and values.

Different families celebrate Father's Day in different ways. Some children prepare handmade cards and gifts to surprise their fathers. Others spend quality time with them by cooking

meals, watching movies, or going on outings. Schools also organize activities such as speech competitions, essay writing, and drawing contests to celebrate the occasion. Social media platforms are filled with messages, photographs, and videos dedicated to fathers. These activities strengthen family bonds and create happy memories.

Father figures are also celebrated on this day. Not every child grows up with a biological father, but many people receive fatherly love and guidance from grandfathers, uncles, elder brothers, teachers, or guardians. Father's Day recognizes the efforts of all those who provide care, protection, and encouragement like a father. This makes the celebration more inclusive and meaningful.

In today's modern world, the role of fathers has changed significantly. Earlier, fathers were mainly considered financial providers, while mothers managed the household. However, modern fathers are becoming more involved in parenting. They help with household work, support their children's education, attend school events, and spend more time with their families. This change has strengthened emotional connections between fathers and children. Many fathers now openly express affection and actively participate in raising their children.

Father's Day also reminds society about the importance of responsible parenting. Children who grow up with love, support, and proper guidance often become confident and responsible individuals. Fathers contribute greatly to a child's emotional and mental development. Their encouragement helps children overcome fear and challenges. A caring father can inspire discipline, determination, and self-respect in his children.

At the same time, Father's Day can be emotional for people who have lost their fathers or have difficult relationships with them. For such individuals, the day may bring memories, sadness, or reflection. It is important to remember that every family is different, and people experience fatherhood in various ways. The essence of Father's Day lies in appreciating love, care, and guidance in all forms.

In India, Father's Day has become increasingly popular over the years, especially in urban areas. Though it is not a traditional festival, many people celebrate it enthusiastically. Shopping malls, restaurants, and online stores offer special discounts and gift ideas for fathers. Children often give watches, shirts, books, gadgets, or personalized gifts to their dads. Some families celebrate by visiting temples or spending peaceful family time together.

The influence of fathers can be seen in every stage of life. A father encourages his child to take the first steps, supports education, motivates during failures, and celebrates achievements. Fathers often act as role models. Their hard work, honesty, and determination inspire children to become better human beings. Even simple acts such as helping with homework, teaching a skill, or listening to problems can leave a lasting impact on a child's heart.

One of the most beautiful aspects of Father's Day is the opportunity to express feelings that are often left unspoken. Many people find it difficult to openly thank their fathers. This day encourages children to tell their fathers how much they love and appreciate them. A simple "thank you" or a heartfelt conversation can mean more than expensive gifts.

In conclusion, Father's Day is a meaningful celebration that honors fathers and father figures for their endless love, sacrifice, and dedication. Fathers play an essential role in shaping families and society. Their guidance, protection, and support help children grow into strong and responsible individuals. Father's Day reminds us to value and respect the people who work hard for our happiness and future. It is a day of gratitude, love, and togetherness that strengthens family relationships and creates lasting memories.

How to Prevent Heat Stroke

Heat stroke is a serious health condition caused by prolonged exposure to extreme heat or excessive physical activity in hot weather. It occurs when the body becomes unable to control its temperature, causing body heat to rise dangerously high. Heat stroke is considered a medical emergency because it can damage the brain, heart, kidneys, and other vital organs. If not treated quickly, it can even lead to death. During summer, especially in regions with very high temperatures, people must take proper precautions to protect themselves from heat stroke.

Heat stroke usually occurs when the body temperature rises above 40°C (104°F). Under normal conditions, the body cools itself through sweating. However, during extreme heat, dehydration or continuous exposure to the sun may stop the body from cooling effectively. As a result, body temperature increases rapidly. Heat stroke can affect anyone, but children, elderly people, outdoor workers, athletes, and individuals with certain health conditions are more vulnerable.

Understanding the symptoms of heat stroke is important for prevention and early treatment. Common symptoms include high body temperature, dizziness, headache, weakness, nausea, confusion, rapid heartbeat, dry skin, muscle cramps, and difficulty breathing. In severe cases, a person may lose consciousness or experience seizures. Immediate medical attention is necessary if someone shows signs of heat stroke.

One of the best ways to prevent heat stroke is to stay hydrated. Drinking plenty of water throughout the day helps maintain body temperature and prevents dehydration. During hot weather, the body loses fluids through sweating, so it is important to replace lost fluids regularly. People should drink water even if they do not feel thirsty. Fresh fruit juices, coconut water, lemon water, and oral rehydration solutions can also help maintain hydration. Beverages containing too much caffeine, sugar, or alcohol should be avoided because they can increase dehydration.

Avoiding direct exposure to sunlight during the hottest part of the day is another important preventive measure. The temperature is usually highest between late morning and afternoon, especially from 11 a.m. to 4 p.m. During these hours, people should stay indoors or in shaded areas whenever possible. If outdoor work or travel is necessary, regular breaks should be taken in cool places.

Wearing suitable clothing can also help prevent heat stroke. Loose-fitting, lightweight, and light-colored clothes allow air circulation and help the body stay cool. Cotton clothing is especially comfortable during hot weather because it absorbs sweat and allows the skin to breathe. Wearing hats, caps, sunglasses, and carrying umbrellas can provide additional protection from the sun.

Maintaining a cool environment indoors is very important during summer. Fans, coolers, and air conditioners help reduce indoor temperatures and provide comfort. Curtains and blinds can be used to block direct sunlight from entering rooms. Proper ventilation improves airflow and helps keep living spaces cooler. Taking cool showers or baths can also help lower body temperature.

Diet also plays an important role in preventing heat stroke. During summer, people should eat light and nutritious meals that are easy to digest. Fresh fruits and vegetables with high water content, such as watermelon, cucumber, oranges, and tomatoes, help keep the body hydrated. Heavy, oily, and spicy foods should be avoided because they increase body heat and may cause discomfort in hot weather.

Physical activity should be managed carefully during high temperatures.

Intense exercise or hard work under the sun can quickly raise body temperature and increase the risk of heat stroke. Athletes, laborers, and outdoor workers should schedule activities during cooler hours, such as early morning or evening. Frequent rest breaks and hydration are essential while exercising or working outdoors.

Children and elderly people require special attention during extreme heat. Children may not realize when they are becoming dehydrated, while older adults may have weaker temperature control systems. Caregivers should ensure that they drink enough fluids, wear comfortable clothing, and stay in cool places. Pets should also be protected from extreme heat by providing them with water and shade.

One dangerous mistake people make during summer is leaving children or pets inside parked vehicles. Even if the outside temperature does not seem extremely high, the temperature inside a closed vehicle can rise rapidly within minutes. This can lead to severe heat stroke and even death. Therefore, children and pets should never be left alone in vehicles.

Public awareness about heat stroke prevention is very important. Governments, schools, health organizations, and media play an important role in educating people about heat-related illnesses. Awareness campaigns can teach people how to recognize symptoms and protect themselves during heat waves. In many countries, weather departments issue heat alerts and safety guidelines during periods of extreme temperature.

Climate change has increased the frequency and intensity of heat waves in many parts of the world. Rising global temperatures make heat stroke prevention even more important. Urban areas with concrete buildings and limited greenery often experience higher temperatures due to the "urban heat island" effect. Planting trees, increasing green spaces, and protecting

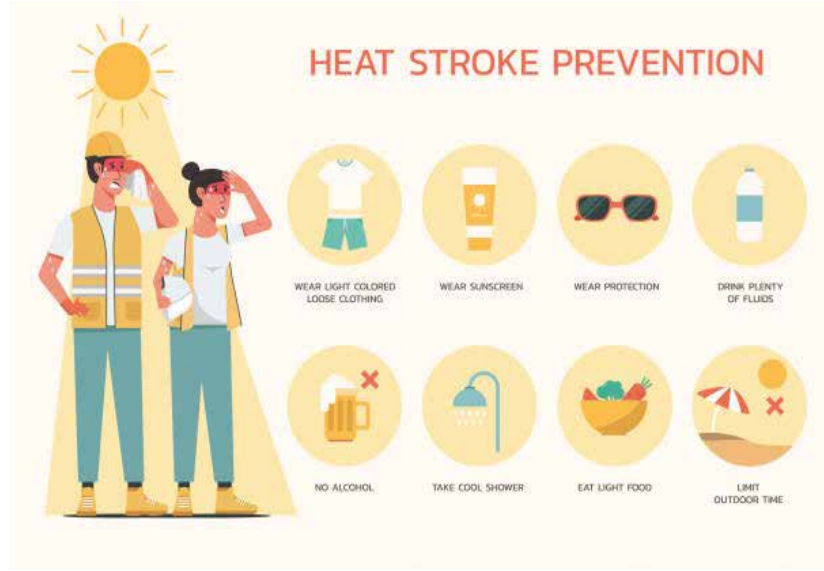

the environment can help reduce heat and improve living conditions.

Knowing first aid measures for heat stroke can save lives. If someone shows symptoms of heat stroke, they should immediately be moved to a cool or shaded area. Tight or heavy clothing should be loosened or removed. Cold water or wet cloths can be applied to the body, especially on the neck, armpits, and forehead. Fans or cool air should be used to lower body temperature. The person should be given water only if they are fully conscious. Emergency medical help should be called immediately because heat stroke requires professional treatment.

Schools and workplaces should also take steps to prevent heat-related illnesses. Educational institutions can adjust outdoor activities during summer and provide safe drinking water for students. Employers should ensure proper working conditions, rest breaks, and hydration facilities for workers exposed to heat. Safety guidelines and emergency plans can help reduce the risk of heat stroke.

Technology and modern weather forecasting systems have improved the ability to predict heat waves. Mobile apps, television, and online platforms provide weather updates and heat advisories that help people prepare in advance. By following weather reports and taking precautions, people can reduce the risk of heat-related health problems.

Preventing heat stroke is not only an individual responsibility but also a community effort. Neighbors, friends, and family members should check on vulnerable individuals such as elderly people living alone or outdoor workers during extreme heat. Community support and awareness can help save lives during heat waves.

In conclusion, heat stroke is a dangerous but preventable condition caused by excessive heat exposure and dehydration. Staying hydrated, avoiding direct sunlight, wearing suitable clothing, eating healthy foods, and maintaining cool surroundings are important ways to prevent heat stroke. Awareness, education, and timely action can protect people from serious health risks during hot weather. As global temperatures continue to rise, understanding heat stroke prevention has become more important than ever. By taking proper precautions and caring for one another, people can stay safe, healthy, and comfortable during the summer season.

International Yoga Day

International Yoga Day is celebrated every year on 21 June across the world to spread awareness about the importance and benefits of yoga in daily life. Yoga is an ancient practice that originated in India thousands of years ago and focuses on physical, mental, and spiritual well-being. The word "yoga" is derived from the Sanskrit word "Yuj," which means union or connection. Yoga helps create harmony between the body, mind, and soul. International Yoga Day encourages people of all ages to practice yoga for a healthy and balanced life.

The idea of celebrating International Yoga Day was proposed by Narendra Modi during his speech at the United Nations General Assembly in 2014. He highlighted the importance of yoga as a valuable gift from India's ancient tradition and suggested a global day dedicated to yoga. The proposal received overwhelming support from many countries, and the United Nations declared 21 June as International Yoga Day. The first International Yoga Day was celebrated on 21 June 2015 with great enthusiasm worldwide.

The date 21 June was chosen because it is the longest day of the year in the Northern Hemisphere and holds special significance in many cultures. It symbolizes light, energy, and positivity. Since its beginning, International Yoga Day has become a global movement promoting health, peace, and harmony among people.

Yoga is much more than physical exercise. It is a complete system that includes breathing techniques, meditation, physical postures, and mental discipline. Yoga aims to improve overall well-being and inner peace. Regular practice of yoga strengthens the body, calms the mind, and helps people live healthier lives. In today's busy and stressful world, yoga has become increasingly important for maintaining physical fitness and mental stability.

One of the major benefits of yoga is improved physical health. Yoga postures, known as asanas, help improve flexibility, strength, balance, and posture. It increases blood circulation and helps keep the body active and energetic. Yoga also improves digestion, boosts immunity, and supports healthy functioning of various organs. Many people practice yoga to reduce weight, manage pain, and improve overall fitness.

Yoga is equally beneficial for mental health. Modern life often brings stress, anxiety, depression, and emotional pressure. Breathing exercises and meditation in yoga help calm the mind and reduce stress levels. Yoga improves concentration, memory, and emotional stability. It encourages positive thinking and self-awareness. People who practice yoga regularly often feel more peaceful, confident, and focused

in their daily lives.

Another important aspect of yoga is its role in spiritual development. Yoga teaches self-discipline, patience, compassion, and inner harmony. Through meditation and mindfulness, people develop a deeper understanding of themselves and their surroundings. Yoga promotes unity between humans and nature and encourages a balanced lifestyle.

International Yoga Day is celebrated in schools, colleges, parks, offices, and public places across the world. Mass yoga sessions are organized where thousands of people gather to practice yoga together. Yoga experts and instructors guide participants through various poses and breathing exercises. Educational institutions organize essay writing competitions, speeches, seminars, and awareness programs to educate students about the benefits of yoga.

In India, International Yoga Day is celebrated with great enthusiasm and pride because yoga is considered part of the country's ancient cultural heritage. Large public events are held in cities and villages where people participate in yoga demonstrations and workshops. The government, schools, and health organizations actively promote yoga as a healthy lifestyle practice. Famous yoga gurus and instructors conduct special sessions and spread awareness through media and online platforms.

The popularity of yoga has increased significantly around the world. People from different countries and cultures practice yoga regardless of religion, nationality, or age. Yoga studios and wellness centers have opened in many parts of the world. International Yoga Day has helped spread the message that yoga is a universal practice beneficial for everyone.

There are different types of yoga designed to meet various needs and goals. Hatha Yoga focuses on physical postures and breathing exercises, while Raja Yoga emphasizes meditation

and mental discipline. Ashtanga Yoga involves a series of dynamic postures, and Bhakti Yoga focuses on devotion and spirituality. Pranayama, the practice of controlled breathing, is another important part of yoga that improves lung function and mental calmness.

Yoga is especially important for students and young people. Academic pressure, competition, and excessive use of technology can affect students' physical and mental health. Yoga helps students improve concentration, reduce stress, and maintain emotional balance. Schools increasingly include yoga sessions in their daily routines to promote healthy habits among children.

The importance of yoga became even more evident during global health crises such as the COVID-19 pandemic. During lockdowns and stressful situations, many people turned to yoga and meditation to maintain physical fitness and mental peace. Yoga helped people manage anxiety, strengthen immunity, and stay positive during difficult times.

Scientific research has also shown the health benefits of yoga. Doctors and health experts recommend yoga for managing conditions such as high blood pressure, diabetes, obesity, back pain, and stress-related disorders. Yoga is considered a natural and cost-effective way to improve health and prevent diseases. Many hospitals and wellness programs now include yoga therapy as part of treatment and rehabilitation.

International Yoga Day also promotes the idea of living in harmony with nature. Yoga encourages simplicity, mindfulness, and respect for the environment. It teaches people to adopt healthy habits, balanced diets, and peaceful lifestyles. This message is especially important in today's world, where unhealthy lifestyles and environmental problems are increasing.

Despite its many benefits, some people still misunderstand yoga as only a form of exercise. In reality, yoga is a holistic practice that nurtures the body, mind, and spirit together. It is not limited to any religion or culture but is a universal path toward health and well-being.

Technology and social media have played a major role in spreading awareness about yoga. Online yoga classes, fitness apps, videos, and virtual events make yoga accessible to people worldwide. On International Yoga Day, millions of people share their yoga experiences, photos, and messages on social media platforms, inspiring others to join the movement.

In conclusion, International Yoga Day is a global celebration of health, peace, and harmony. It highlights the importance of yoga as an ancient practice that benefits physical, mental, and spiritual well-being. Yoga helps people live balanced, healthy, and stress-free lives. The celebration encourages individuals and communities to adopt yoga as a part of their daily routine. Through regular practice of yoga, people can achieve better health, inner peace, and a stronger connection with themselves and the world around them. International Yoga Day reminds humanity that true well-being comes from balance, discipline, and harmony in life.

आदरणीय संपादक महोदय!

नमस्कार।

शिक्षा सारथी का मार्च-अप्रैल 2026 अंक पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यह अंक ज्ञानवर्धक, समसामयिक तथा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए अत्यंत उपयोगी है। विशेष रूप से 'परीक्षा तनाव से मुक्तिः प्रधानमंत्री का प्रेरक संवाद' ने विद्यार्थियों की मानसिक चुनौतियों और उनके समाधान पर सार्थक प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त 'शिक्षा जगत् में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) : आवश्यकता, प्रभाव और भविष्य की दिशा लेख ने आधुनिक शिक्षा में तकनीक की भूमिका को सरल एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

पत्रिका में साहित्य, विज्ञान, शिक्षा और समसामयिक विषयों का संतुलित-समावेश इसे विशेष बनाता है। भाषा सरल, प्रभावी तथा प्रेरणादायक है। विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों के लिए यह अंक उपयोगी और मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

इस उत्कृष्ट अंक के लिए आपको एवं सम्पूर्ण संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई।

कर्मपाल आर्य
प्राथमिक शिक्षक
राजकीय आदर्श संस्कृति प्राथमिक पाठशाला
बिटना, पिंजौर, पंचकूला, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!

नमस्कार।

'शिक्षासारथी' का मार्च-अप्रैल 2026 अंक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। इस अंक में शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान और मानवीय मूल्यों से जुड़े विषयों का सुंदर समावेश किया गया है। 'खेल-खेल में विज्ञान, 'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' तथा 'विज्ञान, अध्यात्म और पाषाण का महासंलाप' जैसे लेखों ने विज्ञान को दैनिक जीवन से जोड़कर प्रस्तुत किया है, जो विद्यार्थियों में जिज्ञासा और नवाचार की भावना विकसित करते हैं।

इसी प्रकार 'जीवन का वास्तविक आभूषण है-संयम' तथा 'करियर काउंसलिंग : आवश्यक क्यों?' जैसे लेख जीवन-निर्माण और व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यंत प्रेरणादायक हैं। अंग्रेज़ी अनुभाग में लेखों ने पत्रिका की उपयोगिता और भी बढ़ा दी है।

यह अंक न केवल ज्ञानवर्धक है, बल्कि पाठकों को सकारात्मक सोच और नई दिशा भी प्रदान करता है। ऐसे उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए आपको हार्दिक शुभकामनाएँ।

अभय सिंह
प्राथमिक शिक्षक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला ढाणी बंजर
खंड-नांगल चौधरी, ज़िला-महेंद्रगढ, हरियाणा

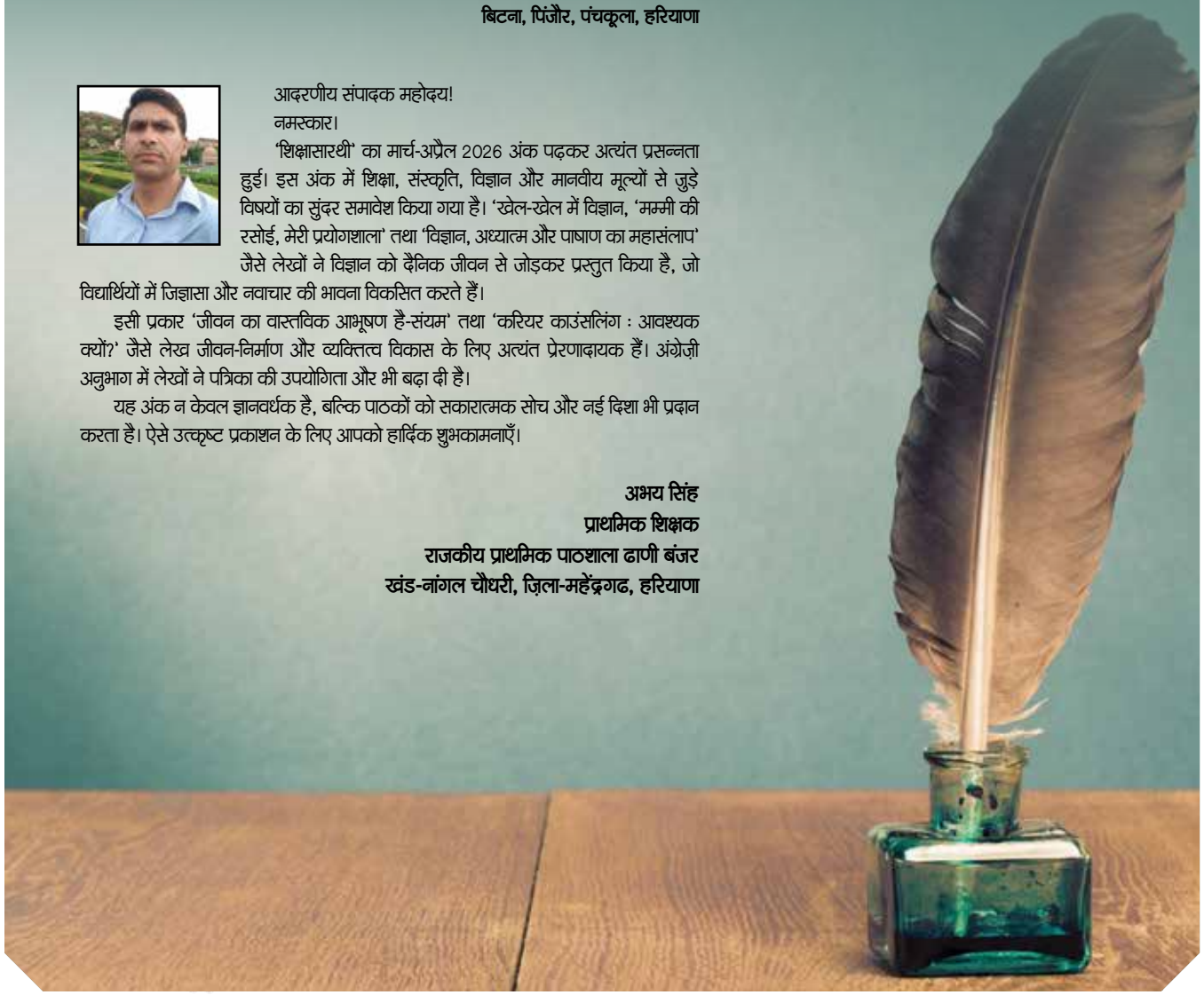

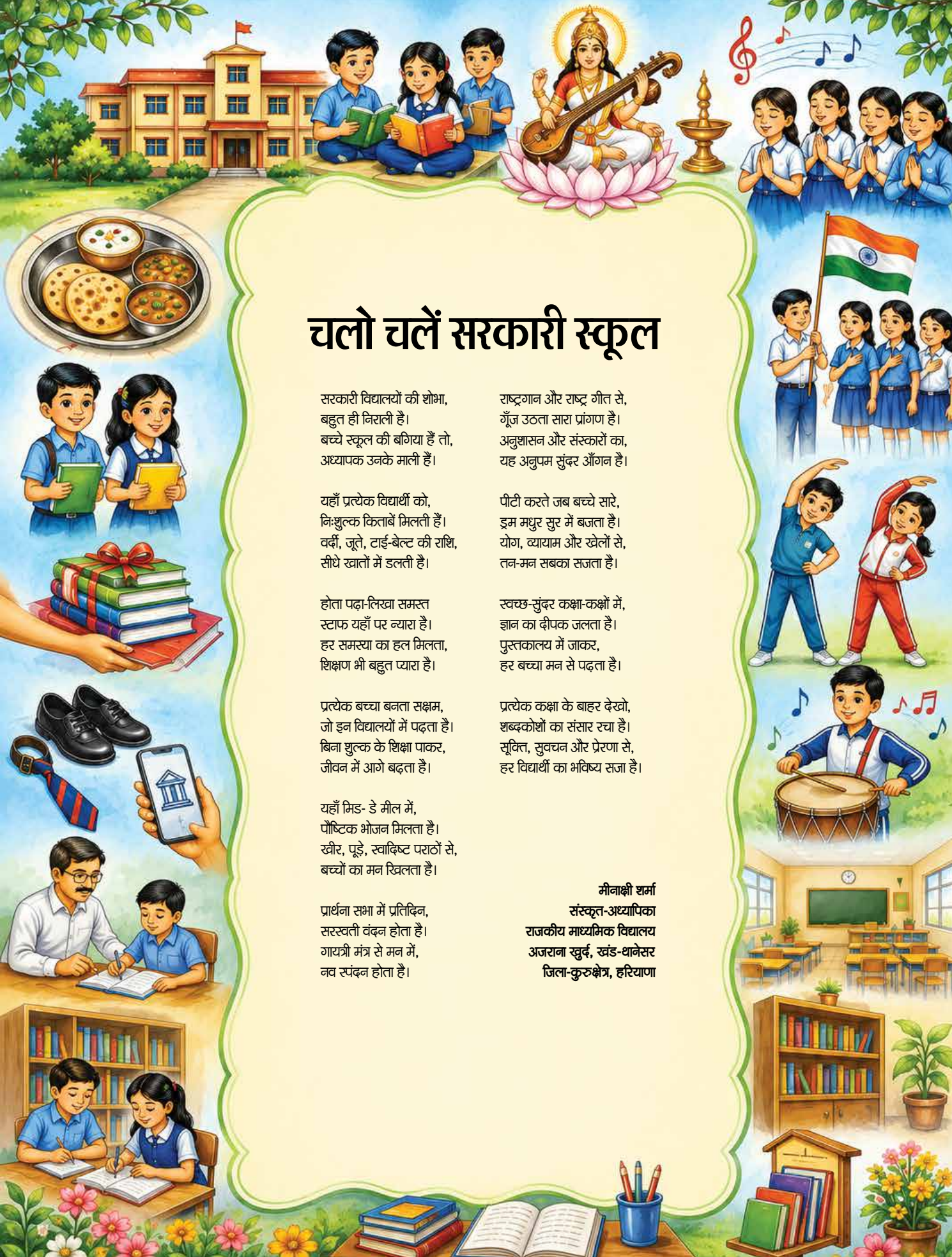

चलो चलें सरकारी स्कूल

सरकारी विद्यालयों की शोभा,
बहुत ही निराली है।
बच्चे स्कूल की बगिया हैं तो,
अध्यापक उनके माली हैं।

यहाँ प्रत्येक विद्यार्थी को,
निःशुल्क किताबें मिलती हैं।
वर्दी, जूते, टाई-बेल्ट की राशि,
सीधे खातों में डलती है।

होता पढ़ा-लिखा समस्त
स्टाफ यहाँ पर न्यारा है।
हर समस्या का हल मिलता,
शिक्षण भी बहुत प्यारा है।

प्रत्येक बच्चा बनता सक्षम,
जो इन विद्यालयों में पढ़ता है।
बिना शुल्क के शिक्षा पाकर,
जीवन में आगे बढ़ता है।

यहाँ मिड- डे मील में,
पौष्टिक भोजन मिलता है।
खीर, पूड़े, स्वादिष्ट पराठों से,
बच्चों का मन खिलता है।

प्रार्थना सभा में प्रतिदिन,
सरस्वती वंदन होता है।
गायत्री मंत्र से मन में,
नव स्पंदन होता है।

राष्ट्रगान और राष्ट्र गीत से,
गूँज उठता सारा प्रांगण है।
अनुशासन और संस्कारों का,
यह अनुपम सुंदर आँगन है।

पीटी करते जब बच्चे सारे,
ड्रम मधुर सुर में बजता है।
योग, व्यायाम और खेलों से,
तन-मन सबका सजता है।

स्वच्छ-सुंदर कक्षा-कक्षों में,
ज्ञान का दीपक जलता है।
पुस्तकालय में जाकर,
हर बच्चा मन से पढ़ता है।

प्रत्येक कक्षा के बाहर देखो,
शब्दकोशों का संसार रचा है।
सूक्ति, सुवचन और प्रेरणा से,
हर विद्यार्थी का भविष्य सजा है।

मीनाक्षी शर्मा
संस्कृत-अध्यापिका
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
अजराना खुर्द, खंड-थानेसर
जिला-कुरुक्षेत्र, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: L/HR/AB/Periodical-001/26-28

भारति, जय, विजय करे!

भारति, जय, विजय करे!
कनक-शस्य-कमल धरे!

लंका पदतल शत दल
गर्जितोर्मि सागर-जल,
धोता-शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे ।

तरु-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले।

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!

- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114